New Beginning

माध्यमिक शिक्षा परिषद्, उ०प्र०, के विद्यार्थियों के लिए शिक्षण-सत्र 2025-26 से लागू राष्ट्रीय शिक्षा परिषद् द्वारा अनुशंसित पाठ्य-सामग्री पर आधारित एक सरल एवं उपयोगी पाठ्यपुस्तक।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा पर आधारित

NEP and NCF
COMPLIANT

NCERT BASED

मास्टरमाइन्ड

सामाजिक विज्ञान

लेखकगण

श्याम चौधरी
एम० ए० (भूगोल, समाजशास्त्र)

विनय सारस्वत
एम० ए० (भूगोल)

विशेष आकर्षण :

- **NCERT** के सम्पूर्ण प्रश्नों का समावेश।
- परीक्षोपयोगी अन्य महत्त्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न।
- शिक्षा-बोर्ड के दिशा-निर्देशों के अनुसार कूट आधारित प्रश्नों को सम्मिलित किया गया है।
- **NCERT** पाठ्यपुस्तक की सम्पूर्ण पाठ्य-वस्तु की सरलतम रूप से प्रस्तुति।
- प्रोजेक्ट कार्य एवं **OMR** आन्सर-शीट सहित।
- स्वयं मूल्यांकन।

कक्षा | 10

सहायक पुस्तिका

30+ Years
of Educating Minds
Distributing Success

योग्यता आधारित प्रश्न सहित
Competency Based Education (CBE)

A New Beginning Programme for Students by MASTERMIND

1 यूरोप में राष्ट्रवाद का उदय

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख)	2. (घ)	3. (ग)	4. (ग)	5. (क)	6. (ख)
7. (क)	8. (ग)	9. (घ)	10. (घ)	11. (घ)	12. (ग)
13. (ख)।					

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(ग) यदि 'A' सत्य है लेकिन 'R' असत्य है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिए गए चित्र को देखकर प्रतीकों के नाम व उनके महत्व को बताइए।**

उत्तर–

गुण	महत्त्व
टूटी हुई बेड़ियाँ	आजादी मिलना
बाज–छाप कवच	जर्मन साम्राज्य की प्रतीक–शक्ति
बलूत पत्तियों का मुकुट	बहादुरी
तलवार	मुकाबले की तैयारी
तलवार पर लिपटी जैतून की डाली	शान्ति की चाह
काला, लाल और सुनहरा तिरंगा	1848 ई० में उदारवादी–राष्ट्रवादियों का ध्वज, जिसे जर्मन राज्यों के ड्यूक्स ने प्रतिबन्धित घोषित कर दिया।
उगते सूर्य की किरणें	एक नए युग का सूत्रपात

कूट आधारित प्रश्न

- **यूरोप में राष्ट्रीय एकता का विचार किस वर्ग में सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ?**

उत्तर–(क) केवल (i)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **———— वर्ष में आयरलैण्ड को बलपूर्वक यूनाइटेड किंगडम में शामिल किया गया।**

उत्तर–(ख) 1801

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर–(ख) (iii) (i) (iv) (ii)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **कुलीन वर्ग तथा मध्यम वर्ग से जुड़ा कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर–(ख) केवल (ii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

  (क) सत्य (ख) असत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. यूरोप में उदारवाद एक राजनीतिक आंदोलन था। जो व्यक्तिगत स्वतंत्रता और संवैधानिक रूप से सीमित ओर लोकतांत्रिक रूप से जवाबदेह सरकार की व्यापक परंपरा का समर्थन करता है। शासत्रीय उदारवाद के ये यूरोपीय व्युत्पन्न मध्यमार्गी आंदोलनों और पार्टियों के साथ-साथ केद्र-वाम और मध्य-दक्षिण विचारधाराओं के लोगों में पाए जाते थे।
2. किसी शासक को एक चित्र या मूर्ति के रूप में अभिव्यक्त करना आसान है लेकिन एक राष्ट्र को पहचान या चेहरा कैसे दिया जा सकता है? अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में कलाकारों ने राष्ट्रों का मानवीकरण आरम्भ करके इस प्रश्न को हल करने का प्रयास किया। दूसरे शब्दों में, उन्होंने एक राष्ट्र को कुछ यूँ चित्रित किया जैसे वह कोई व्यक्ति हो। उस समय राष्ट्रों को नारी भेष में प्रस्तुत किया गया। राष्ट्र को व्यक्ति का स्वरूप देते हुए जिस नारी रूप को चुना गया वह असल जीवन में कोई विशेष नहीं थी। यह तो सिर्फ राष्ट्र के **अमूर्त विचार** को ठोस रूप प्रदान करने का प्रयास था। यानी नारी की छवि राष्ट्र का **रूपक** (ॅत्तुदेब) बन गई।
3. नेपोलियन को फ्रांस राष्ट्र में 'नेपोलियन बोनापार्ट' के नाम से जाना जाता है जो फ्रांस को विश्वविजेता राष्ट्र बनाने का सपना अपने हृदय में रखता था। उसके अनुसार, सफल शासक होने के लिए कठोर व्यक्तित्व का होना जरूरी है। फ्रांसीसी क्रान्ति के पश्चात् नेपोलियन अपनी युद्ध प्रेमी छवि होने के कारण वहाँ के नागरिकों के मध्य अपना महत्व खोने लगा था। इसी कारण नेपोलियन तथा फ्रांस का पतन प्रारम्भ हो चुका था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. यूरोप महाद्वीप का कुलीन वर्ग सामाजिक तथा राजनीतिक रूप से भूमि का मालिक था एवं यूरोपीय महाद्वीप का सबसे प्रभुत्वशाली वर्ग था। इस वर्ग के सदस्य एक साझा जीवनशैली से बँधे हुए थे जो क्षेत्रीय विभाजनों के आर-पार फैली थी। वे ग्रामीण क्षेत्रों में जायदाद और

शहरी क्षेत्रों में हवेलियों के मालिक थे। राजनीतिक कार्यों के लिए और उच्च वर्गों के बीच वे फ्रेंच भाषा बोलते थे। उनके परिवार प्राय: वैवाहिक बन्धनों से परस्पर सम्बद्ध होते थे। परन्तु यह शक्तिशाली कुलीन वर्ग संख्या के लिहाज से एक छोटा समूह था। जनसंख्या के अधिकतर लोग किसान थे।

2. 1815 में स्थापित यूरोप की सभी व्यवस्थाएँ निरंकुश थीं अत: उन्होंने उन गतिविधियों को दबा देना चाहा जो निरंकुश सरकारों का विरोध कर रही थीं। इन सरकारों ने सें सरशिप के नियम बनाए जो समाचार-पत्रों, पुस्तकों, नाटकों और उन गीतों पर अंकुश लगाना चाहते थे जो क्रान्ति के स्वतन्त्रता से जुड़े मुद्दे उठाना चाहते थे। उदारवादी फ्रांसीसी क्रान्ति की स्मृतियों से प्रेरित होते रहते थे। अत: इस समय 'प्रेस की आजादी' उदारवादी राष्ट्रवादियों का मुख्य नारा बन गया।

3. उन्नीसवीं शताब्दी के कलाकारों ने नारी के रूपकों का आविष्कार कर उसे राष्ट्र निर्माण के कार्य के लिए प्रयोग किया। फ्रांस में उसे लोकप्रिय ईसाई नाम मारीआन दिया गया, जिसने जन-राष्ट्र के विचार को रेखांकित किया। उनके चिह्न भी स्वतन्त्रता और गणतन्त्र के थे—लाल टोपी, तिरंगा तथा कलगी। मारीआन की प्रतिमाएँ सार्वजनिक चौराहों पर लगाई गईं ताकि जनता को एकता के राष्ट्रीय प्रतीक की याद आती रहे और लोगों का विश्वास बना रहे। मारीआन की छवि सिक्कों और डाक टिकटों पर अंकित की गई। मारीआन की ये तस्वीरें फ्रांसीसी गणराज्य का प्रतिनिधित्व करती हैं। इसी प्रकार, जर्मेनिया, जर्मन राष्ट्र का रूपक बन गई। इस तस्वीर में जर्मेनिया बलूत वृक्ष के पत्तों का मुकुट पहने हुए हैं क्योंकि जर्मन बलूत वीरता का प्रतीक है।

4. पश्चिमी तथा मध्य यूरोप के क्षेत्रों में औद्योगीकरण बढ़ने से व्यापार में बढ़ोत्तरी हुई जिससे शहरों का विकास और वाणिज्यिक वर्गों का उदय हुआ जिनका अस्तित्व बाजार के लिए उत्पादन पर आश्रित रहता था। इंग्लैण्ड में औद्योगीकरण अठारहवीं शताब्दी के दूसरे भाग में तथा फ्रांस और जर्मनी में यह उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान ही हुआ। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप नया सामाजिक समूह अस्तित्व में आया जिसका नाम श्रमिक वर्ग था। इस क्रान्ति के कारण सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था ने समाज के नागरिकों का स्वरूप ही परिवर्तित कर दिया।

5. **अर्न्स्ट रेनन (Ernst Renan) 'राष्ट्र क्या है?'**

फ्रांसीसी दार्शनिक अर्न्स्ट रेनन (1823-92) ने सन् 1882 में सॉ बॉन (Sorbonne) विश्वविद्यालय में दिए गए व्याख्यान में राष्ट्र की अपनी समझ को प्रस्तुत किया। बाद में यह व्याख्यान एक प्रसिद्ध निबन्ध के रूप में छपा जिसका शीर्षक था—'Qu'est-ce qu' ne nation?' (राष्ट्र क्या है?)। इस निबन्ध में रेनन अन्य लोगों द्वारा प्रस्तावित इस विचार की आलोचना करता है कि राष्ट्र समान भाषा, नस्ल, धर्म या क्षेत्र से बनता है।

एक राष्ट्र लम्बे प्रयासों, त्याग और निष्ठा का चरम बिन्दु होता है। शौर्य-वीरता से युक्त अतीत, महान पुरुषों के नाम और गौरव—यह वह सामाजिक पूँजी है जिस पर एक राष्ट्रीय विचार आधारित किया जाता है। अतीत में समान गौरव का होना, वर्तमान में एक समान इच्छा, संकल्प का होना, साथ मिलकर महान काम करना और आगे, ऐसे काम और करने की इच्छा—एक जनसमूह होने की ये सब जरूरी शर्तें हैं। अत: राष्ट्र एक बड़ी और व्यापक

एकता (Large-Scale Solidarity) है.....उसका अस्तित्व रोज होने वाला जनमत-संग्रह है....। प्रान्त उसके निवासी हैं; अगर सलाह लिए जाने का किसी का अधिकार है तो वह निवासी ही है,किसी देश का विलय करने या किसी देश पर उसकी इच्छा के विरुद्ध कब्जा जमाए रखने में एक राष्ट्र की वास्तव में कोई दिलचस्पी होती नहीं है। राष्ट्रों का अस्तित्व में होना एक अच्छी बात है, बल्कि यह एक जरूरत भी है। उनका होना स्वतन्त्रता की गारण्टी है और अगर दनिया में केवल एक कानून और उसका केवल एक मालिक होगा तो स्वतन्त्रता का लोप हो जाएगा।

6. इंग्लैण्ड में औद्योगीकरण अठारहवीं शताब्दी के दूसरे भाग में तथा फ्रांस और जर्मनी में यह उन्नीसवीं शताब्दी के दौरान ही हुआ। इस प्रक्रिया के फलस्वरूप नया सामाजिक समूह अस्तित्व में आया जिसका नाम श्रमिक वर्ग था। इस क्रान्ति के कारण सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था ने समाज के नागरिकों का स्वरूप ही परिवर्तित कर दिया। इसी सामाजिक बदलाव के मध्य एक नया वर्ग—मध्यम वर्ग का उदय हुआ, जिसने शिक्षित और उदारदवादी मध्य वर्गों के बीच राष्ट्रीय एकता के विचारों को पनपाने का काम किया जो कुलीन विशेषाधिकारों की समाप्ति के पश्चात् शुरू हुआ था।

7. यूरोप में मध्यवर्ग के उदय के मुख्य कारण औद्योगिकीकरण, शहरीकरण, शिक्षा का प्रसार और राजनीतिक सुधार थे। इन कारणों से, शहरों में उद्योग और व्यवसाय बढ़ें, जिससे मध्य वर्ग का उदय हुआ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. फ्रांसीसी क्रान्ति के मुख्य कारण इस प्रकार हैं—

(i) सामाजिक कारण—फ्रांस के समाज में क्रान्ति से पहले बहुत असमानता थी। पादरियों व कुलीन लोगों का जीवन विलासितापूर्ण व विशेषाधिकार प्राप्त था। मजदूर व किसान नाटकीय जीवन जीने को विवश थे। योग्यता का कोई समान न था। समाज का मध्यम वर्ग उच्च वर्गों के प्रति द्वेष से ग्रस्त था।

(ii) राजनीतिक कारण—दैवीय अधिकारों के सिद्धांत में विशवास होने के कारण फ्रांस के शासक निरंकुश थे। जनता की परवाह उन्हें बिल्कुल न थी। वे अपने सुख-सुविधाओं के लिए जनता पर कैसे भी कानून व कर थोपने में संकोच नहीं करते थे। फ्रांस की जनता लगतार कुचली जा रही थी।

(iii) आर्थिक कारण—उच्च वर्ग की विलासिता, शाही लोगों के खुले खर्च व पूर्व में हुए कई युद्धों के कारण फ्रांस की आर्थिक स्थिति ठीक न थी, अत: जनता पर करों की मार पड़ने लगी। पादरी व उच्च वर्ग के लोग कर-मुक्त थे।

(iv) लेखकों व दार्शनिकों के प्रयास—फ्रांस के लेखक व दार्शनिक मौजूदा हालात पर पैनी नजर गड़ाये हुए थे। अत: उनहोंने जनगणना के माध्यम से, जनता की घुटन को एक तूफान की शक्ल दे दी। अमेरिका की क्रान्ति के चमत्कारिक परिणाम उन्हें बराबर प्रेरित कर रहे थे।

(v) तात्कालिक कारण—प्राचीन राजतन्त्र के अन्तर्गत फ्रांसीसी सम्राट अपनी मर्जी से कर नहीं लगता सकता था। इसके लिए उसे एस्टेट्स जनरल से मंजरूी लेनी पड़ती थी। तीसरे

एस्टेट का प्रतिनिधित्व समृद्ध व शिक्षित वर्ग कर रहा था। तीसरा वर्ग अड़ गया कि प्रत्येक सदस्य को एक मत का अधिकार होगा। जन विद्रोह का खतरा भाँपकर सम्राट ने नेशनल असेम्बली को मान्यता दे दी। 4 अगस्त 1789 की रात को असेम्बली ने क्रान्ति का बिगुल बजा दिया।

2. ज्यूसेपे गैरीबॉल्डी (1807-82) सम्भवत: इटली के स्वतन्त्रता सेनानियों में सबसे मशहूर था। उसका सम्बन्ध एक ऐसे परिवार से था जो तटीय व्यापार में संलग्न था और वह स्वयं व्यापारिक नौसेना में एक नाविक था१ 1833 में उसकी मुलाकात मेत्सिनी से हुई, वह 'यंग इटली' आन्दोलन से जुड़ा और 1834 में पीडमॉण्ट के गणतंत्रीय विद्रोह में उसने भाग लिया। यह विद्रोह कुचल दिया गया और गैरीबॉल्डी को दक्षिण अमेरिका भागना पड़ा जहाँ वह 1848 तक निर्वासन में रहा। 1854 में उसने विक्टर इमेनुएल घ्घ का समर्थन किया जो इतालवी राज्यों को एकीकृत करने का प्रयास कर रहा था। 1860 में गैरीबॉल्डी ने दक्षिण इटली की तरफ एक्सपिडिशन ऑफ द थाउजेंड (हजार लोगों का अभियान) का नेतृत्व किया। इस अभियान में नए स्वयंसेवक जुड़ते चले गए और उनकी संख्या लगभग 30,000 तक पहुँच गई। वे 'रेड शर्ट्स' के नाम से लोकप्रिय हुए।

1867 में गैरीबॉल्डी के नेतृत्व में स्वयंसेवकों की एक सेना पेपल राज्यों से लड़ने रोम गई जो इटली के एकीकरण में अन्तिम बाधा थी। वहाँ एक फ्रांसीसी सैनिक टुकड़ी तैनात थी। 'रेड शर्ट्स' फ्रांसीसी, पेपल सैनिकों के सामने टिक नहीं पाए। 1870 में जब प्रशा से युद्ध के दौरान फ्रांस ने रोम से अपने सैनिक हटा लिए तब जाकर पेपल राज्य अन्ततः इटली में सम्मिलित हुए।

3. 1815 में ब्रिटेन, रूस, प्रशा और आस्ट्रिया जैसी जिन यूरोपीय शक्तियों ने हिटलर को हराया, वे वियना में एकत्रित हुईं। इस सम्मेलन की अध्यक्षता आस्ट्रिया के चान्सलर ड्यूक मेटरनिख ने की। इसी सम्मेलन में 1815 की वियना सन्धि (Treaty of Vienna) की शर्तें तैयार की गईं। इस सन्धि का उद्देश्य उन समस्त परिवर्तनों को समाप्त करना था जो नेपोलियन के शासन के समय लाए गए थे। अत: फ्रांसीसी क्रान्ति के समय फ्रांस से हटाए गई बूर्बो वंश की सत्ता को पुन: स्थापित किया गया। नेपोलियन द्वारा अधिकृत क्षेत्र फ्रांस में वापस मिला लिए गए। आने वाले समय में फ्रांस के विस्तार को रोकने के लिए उसकी सीमा पर कई राज्य स्थापित किए गए। इसके उत्तर में जो नीदरलैण्ड का राज्य स्थापित किया गया उसमें बेल्जियम और पीडमण्ड में जेनेवा जोड़ दिया गया।

4. 1830 के दशक में ज्युसेपे मेत्सिनी ने एकीकृत इतालवी गणराज्य के लिए एक सुविचारित कार्यक्रम प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया था। उसने अपने उद्देश्यों के प्रसार के लिए यंग इटली नामक एक गुप्त संगठन भी बनाया था। 1831 और 1848 में क्रान्तिकारी विद्रोहों की असफलता से युद्ध के द्वारा इतालवी राज्यों को जोड़ने की जिम्मेदारी सार्डिनिया पीडमॉण्ट के शासक विक्टर इमेनुएल द्वितीय पर आ गई। इस क्षेत्र के शासक अभिजात वर्ग की दृष्टि में एकीकृत इटली उनके लिए आर्थिक विकास और राजनीतिक प्रभुत्व की सम्भावनाएँ उत्पन्न करता था। प्रधानमन्त्री कावूर, जिसने इटली के प्रदेशों को एकीकृत करने वाले आन्दोलन का नेतृत्व किया, न तो एक क्रान्तिकारी था और न ही जनतन्त्र में विश्वास रखने वाला। फ्रांस से

सार्डिनिया-पीडमॉण्ट की एक चतुर कूटनीतिक सन्धि के माध्यम से कावूर 1859 में ऑस्ट्रियाई बलों को हरा पाने में सफल हुआ।

इस युद्ध में नियमित सैनिकों के अतिरिक्त ज्युसेपे गैरीबौल्डी के नेतृत्व में भारी संख्या में सशस्त्र स्वयंसेवकों ने भी भाग लिया। 1860 में वे दक्षिण इटली और दो सिसिलियो के राज्य में प्रवेश कर गए और स्पेनी शासकों को हटाने के लिए स्थानीय किसानों का समर्थन पाने में सफल रहे।

1861 में इमेनुएल द्वितीय को एकीकृत इटली का राजा घोषित किया गया। इटली के अधिकांश निवासी जिनमें निरक्षरता दर काफी ऊँची थी अभी भी उदारवादी राष्ट्रवादी विचारधारा से अनभिज्ञ थे। दक्षिणी इटली में जिन आम किसानों ने गैरीबाल्डी का समर्थन किया। उन्होंने इटालिया के विषय में कभी सुना भी नहीं था और उनका विचार था कि ला इटालिया विक्टर इमेनुएल की पत्नी थी।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  अठारहवीं शताब्दी .... निष्ठावान थे।

(क) सभी देश राजतन्त्र तथा डचियों, कैन्टनों तथा निरंकुश राजतन्त्रों के अधीन थे।

(ख) हैब्सबर्ग साम्राज्य कई क्षेत्रों और जनसमूहों को जोड़कर बना था।

(ग) कुलीन वर्ग के लोग जर्मन भाषा बोलते थे। इस साम्राज्य के लोगों का मुख्य व्यवसाय खेती था।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**
  19वी सदी .... लाभ उठाया।

(क) 19वी सदी के अन्त के चौथाई तक राष्ट्रवाद का वह आदर्शवादी उदारवादी-जनतान्त्रिक स्वभाव नहीं रहा जो सदी के प्रारम्भ में था।

(ख) राष्ट्रवाद सीमित लक्ष्यों वाला संकीर्ण सिद्धान्त बन गया।

(ग) प्रमुख यूरोपीय शक्तियों ने भी अपने साम्राज्यवादी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अपने अधीन लोगों की राष्ट्रवादी आकांक्षाओं का लाभ उठाया।

2 भारत में राष्ट्रवाद

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क) 5. (ख) 6. (ग)
7. (क) 8. (ग) 9. (ग) 10. (ख) 11. (क) 12. (घ)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिए गए डाण्डी मार्च, नमक यात्रा के चित्र को देखकर यह स्पष्ट करें कि यह उपनिवेशवाद के खिलाफ प्रतिरोध का एक असरदार प्रतीक था।**

उत्तर– डाण्डी मार्च तथा नमक यात्रा के द्वारा महात्मा गांधी ने उपनिवेशवाद के खिलाफ भारीयों को एकजुट किया तथा अहिंसक रहते हुए ही ब्रिटिश सरकार को झुकने को मजबूर कर दिया। इस प्रकार डाण्डी मार्च व नमक यात्रा उपनिवेशवाद के खिलाफ प्रतिरोध का एक असरदार प्रतीक था।

कूट आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से किसने 'भारत माता' की विख्यात छवि को चित्रित किया?**

उत्तर–(ख) केवल (ii)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **भारत वापस आने पर गांधी जी ने पहला सत्याग्रह ____________ में कहाँ किया?**

उत्तर–(क) चम्पारन

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर–(ख) (ii) (iii) (iv) (i)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **राष्ट्रवाद से जुड़ा कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर–(घ) केवल (iv)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

  (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. नमक-कानून का दाण्डी में उल्लंघन करने के साथ ही सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत हो गई। असहयोग आन्दोलन की तुलना में यह आन्दोलन इस दृष्टि से भिन्न था कि लोगों को इस बात के लिए आह्वान किया गया था कि वे अंग्रेज सरकार के साथ केवल असहयोग ही न

करें, अपितु अंग्रेज सरकार के द्वारा बनाए गए कानूनों का उल्लंघन भी करें। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय हजारों लोगों ने नमक कानून का उल्लंघन किया। साथ ही नमक बनाने वाले सरकारी कारखानों के सामने जाकर प्रदर्शन किया। जब यह आन्दोलन फैला तो लोगों ने विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करना शुरू कर दिया और शराब की दुकानों की पिकेटिंग की जाने लगी। देशभर के किसानों ने लगान और चौकीदारी-कर को चुकाने से इन्कार कर दिया। जो लोग गाँवों में सरकारी विभागों में कर्मचारियों के रूप में नियुक्त थे, उन्होंने सरकार को अपने त्यागपत्र देने शुरू कर दिए। अनेक स्थानों पर जंगलों में रहने वालों ने वन-कानूनों का उल्लंघन करना शुरू कर दिया। वे सरकारी पाबन्दी के उपरान्त भी वनों से जलाने हेतु लकड़ियों को बीनने लगे और अपने मवेशियों को चराने के लिए आरक्षित (Reserved) वनों में प्रवेश करने लगे।

2. जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड, रॉलट एक्ट विरोधी आंदोलन का असफल होना तथा खलीफा की गद्दी के समर्थन में चले खिलाफत आंदोलन ने असहयोग आंदोलन के लिए पृष्ठभूमि तैयार की।

3. महात्मा गांधी जी के अनुसार सत्याग्रह से आशय सत्य की शक्ति पर बल देना तथा सत्य की खोज पर बल देने से लगाया जाता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. गांधीजी द्वारा असहयोग आन्दोलन को वापस लिए जाने के निम्नलिखित कारण थे—

(i) चौरी-चौरा की घटना से गांधी जी काफी परेशान हो गए थे, जिससे उन्हें विश्वास हो गया था कि लोगों को वे अब शान्त नहीं रख सकेंगे।

(ii) वे सोचने लगे थे कि यदि लोग हिंसक हो जाएँगे तो अंग्रेजी सरकार भी उत्तेजित हो जाएगी, जिससे निर्दोष लोग भी मारे जाएँगे। ऐसे में उन्होंने सन् 1922 में, इस आन्दोलन को वापस लेना ही उचित समझा।

2. प्रथम विश्वयुद्ध में तुर्की की पराजय के बाद दुनियाभर के मुसलमान इस बात से भयभीत हो गए कि खलीफा को गद्दी से उतार दिया जाएगा। इसका विरोध करने के लिए भारत में खिलाफत समिति का गठन किया गया।

3. भारतीयों द्वारा साइमन कमीशन का विरोध किए जाने के निम्नलिखित कारण थे—

(i) इस कमीशन में कोई भी भारतीय सदस्य शामिल नहीं किया गया था।

(ii) इस कमीशन की धाराओं में भारतीयों को स्वराज्य दिए जाने का कोई उल्लेख नहीं किया गया था।

4. भारतीय नेताओं द्वारा रॉलेट एक्ट के विरोध के निम्न कारण थे—

(i) इस कानून ने अंग्रेजी सरकार को यह शक्ति दे दी थी कि वह किसी भी व्यक्ति को बिना मुकदमा चलाये जेल में डाल सकती थी।

(ii) पीड़ित व्यक्ति के लिए किसी वकील, दलील और अपील की अनुमति नहीं थी।

(iii) यह कानून भारतीयों को बहुत अधिक परेशान करने की नीयत से लाया गया था।

(iv) अंग्रेजी सरकार रॉल एक्ट को लाकर स्वतन्त्रता संग्राम की लहर को दबाना चाहती थी।

5. उस समय बड़े-बड़े उद्योगपति कांग्रेस के नजदीक आ रहे थे, जिससे मजदूर वर्ग कांग्रेस से छिटकने लगे थे। मजदूर कांग्रेस से देश में समाजवादी नीतियाँ चाहते थे, परन्तु उद्योगपति कांग्रेस के युवा समाजवादी नेताओं के प्रभाव से डरे हुए थे। कांग्रेस अपने कार्यक्रम में मजदूरों की माँगों को समाहित करने में हिचकिचा रही थी। कांग्रेस को लगता था कि इससे उद्योगपति आंदोलन से निकल जाएँगे और साम्राज्यवाद-विरोधी ताकतों में फूट पड़ जाएगी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से जनवरी 1915 में भारत लौटे। दक्षिण अफ्रीका में आपने 'सत्याग्रह' के नए विचार से नस्लभेदी सरकार को झुकने पर विवश किया। सत्याग्रह से आशय सत्य की शक्ति पर बल देना तथा सत्य की खोज पर बल देने से लगाया जाता है। प्रतिशोध की भावना या आक्रामकता का सहारा लिए बिना सत्याग्रही मात्र अहिंसा के सहारे संघर्ष में सफल हो जाता है। सत्याग्रही मात्र दमनकारी शत्रु को ही नहीं वरन् सभी लोगों को अहिंसात्मक (Non-violent) ढंग से सच्चाई को स्वीकार करने के लिए विवश कर देता है। अन्तत: सत्य विजयी होता है। अत: अहिंसा का यह धर्म सभी भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँधने में सक्षम हो सकता है।

   सत्याग्रह आन्दोलन

   सक्रिय राजनीति में भाग लेने से पूर्व गांधी जी ने अपने गुरु गोपालकृष्ण गोखले के कहने पर भारत का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने कई जगहों पर सत्याग्रह आन्दोलन चलाए, जिनमें प्रमुख हैं—

   चम्पारन सत्याग्रह—सन् 1916 में गांधी जी ने बिहार के चम्पारन इलाके का दौरा किया और वहाँ की दमनकारी बागान व्यवस्था के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन चलाया।

   गुजरात सत्याग्रह—सन् 1917 में गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों की सहायता करने के लिए सत्याग्रह किया गया क्योंकि फसल बरबाद हो जाने तथा प्लेग की महामारी के कारण किसानों को लगान चुकाने में कठिनाई हो रही थी जबकि सरकार उनसे जबरदस्ती लगान वसूल कर रही थी।

   अहमदाबाद सत्याग्रह—सन् 1918 में उन्होंने अहमदाबाद के सूती कपड़ा कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के हितों की रक्षा के लिए सत्याग्रह आन्दोलन किया।

   उपर्युक्त आन्दोलनों में उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई जिस कारण आम आदमी में उनकी विशेष पहचान बन गई।

2. असहयोग आन्दोलन की शुरुआत राष्ट्रीय आन्दोलन में शहरी मध्यमवर्ग के शामिल होने से हुई। विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल-कॉलेज में पढ़ने के लिए जाना छोड़ दिया। शिक्षकों ने भी अपने पदों से त्याग-पत्र दे दिए। वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार कर दिया। मद्रास के अतिरिक्त भारत के लगभग सभी प्रान्तों में चुनाव का बहिष्कार किया गया। आन्दोलन को आर्थिक मोर्चे पर प्रभावी बनाने के लिए विदेशी वस्तुओं का पूर्ण बहिष्कार किया गया, विदेशी कपड़ों की चौराहों पर होली जलाई गई और शराब की दुकानों पर पिकेटिंग की गई।

   असहयोग आन्दोलन सफलता के निकट पहुँच चुका था; परन्तु चौरी-चौरा की हिंसक घटना के कारण गांधी जी ने आन्दोलन को अचानक स्थगित कर दिया; जिससे उन्हें तीव्र आलोचना

सहनी पड़ी। इस आन्दोलन से स्वराज्य का लक्ष्य भले ही प्राप्त न हो सका हो, तब भी इसके परिणाम निम्नलिखित रहे—

(i) असहयोग आन्दोलन ने भारतीय जनमानस में यह विश्वास जगाया कि कोई भी असफलता या दमन-चक्र उनके विश्वास को कमजोर नहीं कर सकेगा।

(ii) असहयोग आन्दोलन भारत के भावी स्वतन्त्रता आन्दोलनों के लिए नींव की पत्थर सिद्ध हुआ। बाद में इसी की नींव पर स्वतन्त्रता आन्दोलन का भव्य भवन खड़ा किया जा सका।

3. सत्याग्रह आन्दोलन

सक्रिय राजनीति में भाग लेने से पूर्व गांधी जी ने अपने गुरु गोपालकृष्ण गोखले के कहने पर भारत का भ्रमण किया। इस दौरान उन्होंने कई जगहों पर सत्याग्रह आन्दोलन चलाए, जिनमें प्रमुख हैं—

चम्पारन सत्याग्रह—सन् 1916 में गांधी जी ने बिहार के चम्पारन इलाके का दौरा किया और वहाँ की दमनकारी बागान व्यवस्था के विरुद्ध सत्याग्रह आन्दोलन चलाया।

गुजरात सत्याग्रह—सन् 1917 में गुजरात के खेड़ा जिले में किसानों की सहायता करने के लिए सत्याग्रह किया गया क्योंकि फसल बरबाद हो जाने तथा प्लेग की महामारी के कारण किसानों को लगान चुकाने में कठिनाई हो रही थी जबकि सरकार उनसे जबरदस्ती लगान वसूल कर रही थी।

अहमदाबाद सत्याग्रह—सन् 1918 में उन्होंने अहमदाबाद के सूती कपड़ा कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के हितों की रक्षा के लिए सत्याग्रह आन्दोलन किया।

उपर्युक्त आन्दोलनों में उन्हें सफलता भी प्राप्त हुई जिस कारण आम आदमी में उनकी विशेष पहचान बन गई।

सत्याग्रह का सिद्धान्त आज भी प्रासंगिक

सत्याग्रह का सिद्धान्त आधुनिक विश्व के संघर्षों को हल करने में आज भी प्रासंगिक है—

(i) अहिंसा के रास्ते पर अमेरिका में मार्टिन लूथर किंग के द्वारा नागरिक अधिकार आन्दोलन तथा दक्षिण अफ्रीका में 'नेल्सन मण्डेला' द्वारा भी रंग-भेद के विरुद्ध अहिंसा के मार्ग पर चलकर अपना आन्दोलन चलाया गया।

(ii) बहुत-से देशों से आज भी लोग धरना, प्रदर्शन और अनशन के जरिए संघर्ष करते हैं तथा सरकार पर दबाव बनाने की कोशिश करते हैं।

4. नमक-कानून का दाण्डी में उल्लंघन करने के साथ ही सविनय अवज्ञा आन्दोलन की शुरुआत हो गई। असहयोग आन्दोलन की तुलना में यह आन्दोलन इस दृष्टि से भिन्न था कि लोगों को इस बात के लिए आह्वान किया गया था कि वे अंग्रेज सरकार के साथ केवल असहयोग ही न करें, अपितु अंग्रेज सरकार के द्वारा बनाए गए कानूनों का उल्लंघन भी करें। सविनय अवज्ञा आन्दोलन के समय हजारों लोगों ने नमक कानून का उल्लंघन किया। साथ ही नमक बनाने वाले सरकारी कारखानों के सामने जाकर प्रदर्शन किया। जब यह आन्दोलन फैला तो लोगों ने विदेशी कपड़ों का बहिष्कार करना शुरू कर दिया और शराब की दुकानों की पिकेटिंग की जाने लगी। देशभर के किसानों ने लगान और चौकीदारी-कर को चुकाने से इन्कार कर दिया।

जो लोग गाँवों में सरकारी विभागों में कर्मचारियों के रूप में नियुक्त थे, उन्होंने सरकार को अपने त्यागपत्र देने शुरू कर दिए। अनेक स्थानों पर जंगलों में रहने वालों ने वन-कानूनों का उल्लंघन करना शुरू कर दिया। वे सरकारी पाबन्दी के उपरान्त भी वनों से जलाने हेतु लकड़ियों को बीनने लगे और अपने मवेशियों को चराने के लिए आरक्षित (ीन्) वनों में प्रवेश करने लगे।

5. चम्पारन, खेड़ा और अहमदाबाद में अपनी सफलता से प्रेरित होकर महात्मा गांधी ने सन् 1919 में प्रस्तावित रॉलट एक्ट (Rowlett Act) के विरुद्ध एक देशव्यापी सत्याग्रह आन्दोलन संचालित करने का निर्णय लिया। भारतीय सदस्यों के प्रबल विरोध के उपरान्त भी लेजिस्लेटिव काउन्सिल ने बहुत शीघ्रता के साथ इस कानून को पारित कर दिया था। इस कानून के माध्यम से सरकार देश के आन्दोलनकारियों की राजनीतिक गतिविधियों का दमन करना चाहती थी। साथ ही इस कानून के अन्तर्गत यह प्रावधान भी था कि किसी भी राजनीतिक कैदी को उस पर मुकदमा चलाए बिना ही दो साल तक जेल में रखा जा सकता था। इस प्रकार के अन्यायपूर्ण कूानन के विरुद्ध महात्मा गांधी अहिंसक तरीके से नागरिक अवज्ञा चाहते थे। इसे ६ अप्रैल को एक हड़ताल से शुरू होना था।

विभिन्न शहरों में रैली-जुलूसों का आयोजन किया गया। रेलवे वर्कशॉप में कामगार हड़ताल पर चले गए। दुकानें बन्द हो गईं। इस व्यापक जन-उभार से चिन्तित तथा रेलवे व टेलीग्राफ जैसी संचार सुविधाओं के अवरुद्ध हो जाने की आशंका से भयभीत अंग्रेजों ने राष्ट्रवादियों का दमन शुरू कर दिया। अमृतसर में बहुत सारे स्थानीय नेताओं को हिरासत में ले लिया गया। दिल्ली में गांधीजी के प्रवेश करने पर पाबन्दी लगा दी गई। 10 अप्रैल को पुलिस ने अमृतसर में एक शान्तिपूर्ण जुलूस पर गोली चला दी। इसके बाद लोग बैंकों, डाकखानों और रेलवे स्टेशनों पर हमले करने लगे।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

  चम्पारन, खेड़ा .... चाहती थी।

  (क) सभी देश राजतन्त्र तथा डचियों, कैन्टनों तथा निरंकुश राजतन्त्रों के अधीन थे।

  (ख) लेजिस्लेटिव काउन्सिल ने बहुत शीघ्रता के साथ इस कानून को पारित कर दिया था।

  (ग) इस कानून के माध्यम से सरकार देश के आन्दोलनकारियों की राजनीतिक गतिविधियों का दमन करना चाहती थी।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

  राष्ट्रवाद की .... विकसित हुआ?

  (क) राष्ट्रवाद की भावना तब उत्पन्न होती है जब लोग ये अनुभव करने लगते हैं कि वे एक ही राष्ट्र के अंग हैं।

(ख) ऐसी स्थिति में उन्हें एक-दूसरे को एकता के सूत्र में बाँधने वाली कोई साझा बात मिल जाती है।

(ग) हमारे देश में समुदाय, भाषा और क्षेत्रीयता भिन्नताएँ हैं।

खण्ड-2 : जीविका, अर्थव्यवस्था एवं समाज

3 भूमण्डलीकृत विशव का बनना

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख)	2. (ग)	3. (ख)	4. (क)	5. (ख)	6. (घ)
7. (ग)	8. (क)	9. (ख)	10. (ग)	11. (घ)	12. (ग)
13. (ख)	14. (ख)	15. (ख)			

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

चित्र आधारित प्रश्न

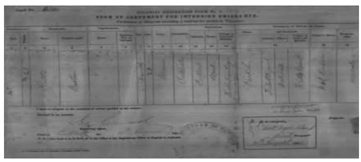

- **दिया गया चित्र क्या दर्शाता है?**

उत्तर–(ii) श्रमवासी श्रमिकों से किए जाने वाला अनुबंध।

कूट आधारित प्रश्न

- **'अनुबन्ध व्यवस्था' को और किस नाम से जाना जाता है?**

उत्तर–(घ) केवल (iv)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **1939 ई० से शुरू होकर द्वितीय विश्वयुद्ध ____________ चलता रहा?**

उत्तर–(ख) 1945 ई० तक

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर–(क) (iii) (iv) (ii) (i)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है–**

उत्तर–(क) केवल (i)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

  (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. यह एक ऐसा युद्ध था, जिसमें मशीनगनों, टैंकों, हवाई जहाजों और रासायनिक हथियारों (Chemical weapons) का व्यापक स्तर पर और अत्यन्त भयावह तरीके से प्रयोग किया। आधुनिक विशाल उद्योगों के कारण ही ये सब विनाशकारी हथियार आदि सामने आए थे। युद्ध के लिए संसार के अनेक देशों में सिपाहियों की भर्ती की गई और उन्हें विशाल जलपोतों और रेलगाड़ियों में भरकर युद्ध के मोर्चे पर ले जाया गया।
2. इन संस्थाओं ने औपचारिक रूप से वर्ष 1947 में काम करना आरंभ किया। इन संस्थानों की निर्णय-प्रक्रिया पर पश्चिम के औद्योगिक देशों का नियन्त्रण बना रहता है। इन देशों में अमेरिका को विश्व बैंक और घ्श्इ के किसी भी निर्णय को 'वीटो' करने का अधिकार प्राप्त है।
3. उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्य रूप से कृषि पर निर्भर थी, और इसमें कृषि क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। इस अवधि में ब्रिटिश शासन के कारण, भारतीय अर्थव्यवस्था में औद्योगिकीकरण में वृद्धि हुई, और कई छोओे उद्योगों को नुकसान हुआ। इस दौरान, भारत के निर्यात में कच्चे माल का प्रभुत्व था, जबकि ब्रिटेन से आयात में तैयार माल की मात्रा अधिक थी।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रेशम-मार्ग विश्व के विभिन्न भागों के बीच होने वाली व्यापारिक गतिविधियों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का आधार थे। ये मार्ग केवल एशिया के विशाल क्षेत्रों को ही आपस में नहीं जोड़ते थे, बल्कि एशिया को यूरोप ओर उत्तरी अफ्रीका से भी जोड़ते थे। इन मार्गों का प्रयोग एशिया से कपड़े और मसालों को विश्व के दूसरे भागों में पहुँचाने के लिए तथा वापसी में सोना-चाँदी एशिया में लाने के लिए होता था।

   आरंभ में रेशम मार्गों का उपयोग केवल व्यापारिक गतिविधियों के लिए किया जाता था। बाद में,ये मार्ग सांस्कृतिक आदान-प्रदान का भी स्रोत बन गए। इस उद्देश्य से रेशम मार्गों का सर्वप्रथम उपयोग बौद्ध धर्म के अनुयायियों ने किया। उन्होंने अपने धर्म को भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में फैलाया। धीरे-धीरे इन मार्गों से ईसाई मिशनरियों ने एशिया में प्रवेश किया। इसके बाद मुस्लिम धर्मोपदेशकों ने भी इन्हीं मार्गों का प्रयोग किया और अपने धर्म को विश्वव्यापी बनाया।
2. उन्नीसवीं शताब्दी की विश्व अर्थव्यवस्था को समझने के लिए हमें तीन प्रवाहों को समझना आवश्यक है। ये प्रवाह हैं—

(i) व्यापार का प्रवाह, (ii) श्रम का प्रवाह, तथा (iii) पूँजी का प्रवाह।

(i) व्यापार का प्रवाह—उन्नीसवीं शताब्दी में व्यापार कपड़ा अथवा गेहूँ जैसी चीजों तक ही सीमित था।

(ii) श्रम का प्रवाह—श्रम-प्रवाह के अन्तर्गत लोगों का रोजगार की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना शामिल है।

(iii) पूँजी का प्रवाह—इसमें पूँजी का अल्प या दीर्घ अवधि के लिए दूर-दूर के क्षेत्रों में निवेश किया जाता है।

3. विनिमय दर से अभिप्राय है—विभिन्न देशों की राष्ट्रीय मुद्राओं का मूल्य के आधार पर आपसी सम्बन्ध। यह मूल्य-निर्धारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार की सुविधा के लिए किया जाता है।

प्रकार—विनिमय दर मुख्य रूप से दो प्रकार की होती है—स्थिर विनिमय दर तथा परिवर्तनशील विनिमय दर।

स्थिर विनियम दर—जब विनिमय दर स्थिर होती है और उसमें आने वाले उतार-चढ़ावों को नियन्त्रित करने के लिए सरकारों को हस्तक्षेप करना पड़ता है,तो उसे स्थिर विनिमय दर कहा जाता है।

लचीली या परिवर्तनशील विनिमय दर—इस प्रकार की विनिमय दर विदेशी मुद्रा बाजार में घटती-बढ़ती रहती है। इसमें विभिन्न मुद्राओं की मांग या पूर्ति के आधार पर उतार-चढ़ाव आते हैं। इसमें सरकारों का कोई हस्तक्षेप नहीं होता।

4. भारत के अधिकांश अनुबन्धित श्रमिक वर्तमान पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य भारत और तमिलनाडु के सूखे प्रदेशों से आते थे। इसका कारण यह था कि उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में इन प्रदेशों में भारी बदलाव आने लगे थे—

(i) कुटीर उद्योग समाप्त हो रहे थे।

(ii) भूमि का भाड़ा बढ़ गया था।

(iii) भूमि को खाद्यान्नों और बागानों के लिए साफ किया जा रहा था।

इन परिवर्तनों से गरीबों के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे बंटाई पर जमीन तो ले लेते थे, परन्तु उसका भाड़ा नहीं चुका पाते थे। परिणामस्वरूप उन पर कर्ज चढ़ने लगा और उन्हें काम की तलाश में घर-बार छोड़ने पड़े।

5. इसमें कोई सन्देह नहीं कि औद्योगिक देशों में महामन्दी का सबसे बुरा प्रभाव अमेरिका पर ही पड़ा।

(i) कीमतों में कमी और मंदी की आशंका को देखते हुए अमेरिकी बैंकों ने घरेलू कर्जे देना बन्द कर दिया। दूसरी ओर, पहले दिए जा चुके कर्जे की वसूली तेज कर दी गई।

(ii) किसान उपज नहीं बेच पा रहे थे, इसलिए कई परिवार तबाह हो गए और कारोबार ठप्प पड़ गए।

(iii) आय में गिरावट आने पर, अमेरिका के बहुत-से परिवार कर्जे न चुका सके। इसलिए उनके मकान, कार और अन्य कीमती वस्तुएँ कुर्क कर ली गईं।

(iv) बेरोजगारी बढ़ जाने के कारण लोग काम की तलाश में दूर-दूर तक जाने लगे।

(v) अन्ततः अमेरिकी बैंकिंग व्यवस्था भी धराशायी हो गई। निवेश से अपेक्षित लाभ न पाने तथा जमाकर्ताओं की जमा पूँजी न लौटा पाने के कारण हजारों बैंक दिवालिया हो गए और बन्द कर दिए गए। सन् 1933 तक 4,000 से भी अधिक बैंक बन्द हो चुके थे। सन् 1929 से 1932 ई० के बीच लगभग 1,10,000 कम्पनियाँ चौपट हो चुकी थीं।

6. युद्ध के पश्चात आर्थिक स्थिति पर नियंत्रण पाना एक बहुत कठिन काम था। युद्ध से पहले ब्रिटेन संसार की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी। परन्तु युद्ध के बाद सबसे लम्बा संकट उसी को झेलना पड़ा। इसके मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—

(i) जिस समय ब्रिटेन युद्ध से जूझ रहा था, उस समय भारत और जापान में उद्योग विकसित होने लगे थे। अतः युद्ध के पश्चात, ब्रिटेन के लिए भारतीय बाजार में पहले वाली स्थिति प्राप्त करना बहुत कठिन हो गया।

(ii) अब उसे जापान से भी मुकाबला करना पड़ता था।

(iii) युद्ध के खर्चे की पूर्ति करने के लिए ब्रिटेन ने अमेरिका से भारी कर्ज लिया था। परिणामस्वरूप युद्ध के पश्चात ब्रिटेन भारी विदेशी कर्ज में दब गया था।

(iv) ब्रिटिश सरकार ने अपने युद्ध-सम्बन्धी व्यय में भी कटौती शुरू कर दी थी ताकि करों द्वारा ही उसे पूरा किया जा सके। इन प्रयासों से रोजगार के साधनों में कमी आई। सन् 1921 में हर पाँच में से एक ब्रिटिश मजदूर के पास काम नहीं था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्रथम विश्वयुद्ध का मुख्य कारण शक्तिशाली देशों की परस्पर औपनिवेशिक प्रतिस्पर्धा और उनकी साम्राज्यवादी नीतियाँ थीं। जैसा कि आप जानते हैं, यह युद्ध दो खेमों के बीच लड़ा गया। एक ओर मित्र राष्ट्र यानि ब्रिटेन, फ्रांस और रूस थे तथा दूसरी ओर केन्द्रीय शक्तियाँ यानी जर्मनी, ऑस्ट्रिया, हंगरी और ऑटोमन तुर्की थे। अगस्त, 1914 में जब युद्ध शुरू हुआ तो उस समय अधिकांश सरकारों को ऐसा लग रहा था कि यह युद्ध ज्यादा-से-ज्यादा क्रिसमस तक समाप्त हो जाएगा, परन्तु यह युद्ध चार वर्ष से भी ज्यादा समय तक चला।

इससे पहले, मानव-सभ्यता के इतिहास में ऐसा भीषण युद्ध कभी नहीं हुआ था। इस युद्ध में, संसार के प्रमुख औद्योगिक राष्ट्र एक-दूसरे से जूझ रहे थे और अपने शत्रुओं का विनाश करने के लिए उनके पास बेहिसाब आधुनिक औद्योगिक शक्ति एकत्रित हो चुकी थी।

यह पहला आधुनिक औद्योगिक युद्ध था। इस युद्ध में टैंकों, हवाई जहाजों, मशीनगनों तथा रासायनिक हथियारों (Chemical Weapons) का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया। ये सभी चीजें आधुनिक विशाल उद्योगों की देन थीं। इस युद्ध के लिए विश्वभर से अनगिनत सिपाहियों की भर्ती की गयी थी और उन्हें विशाल जलपोतों तथा रेलगाड़ियों में भरकर युद्ध के मोर्चों पर ले जाया जाता था।

इस युद्ध की वजह से विश्व की कुछ सबसे शक्तिशाली आर्थिक ताकतों के बीच आर्थिक सम्बन्ध बिखर गए। अब वे देश एक-दूसरे से प्रतिशोध लेने पर उतारू थे। इस युद्ध के लिए, ब्रिटेन को अमेरिकी बैंकों तथा अमेरिकी जनता से भारी ऋण लेना पड़ा। परिणामस्वरूप, इस युद्ध ने अमेरिका को कर्जदार की बजाय कर्जदाता देश बना दिया।

2. अफ्रीका में, 1890 के दशक में रिंडरपेस्ट (Rinderpest) या प्लेग नामक बीमारी बहुत तेजी से फैल गई। मवेशियों में फैलने वाली इस बीमारी से लोगों की आजीविका और स्थानीय अर्थव्यवस्था पर अत्यधिक गहरा प्रभाव पड़ा।

प्राचीन काल से ही अफ्रीका में जमीन की कभी कोई कमी नहीं रही, जबकि वहाँ की आबादी बहुत कम थी। सदियों तक अफ्रीकियों की जिन्दगी व कामकाज जमीन और पालतू पशुओं के सहारे ही चलता रहा है। वहाँ पैसे या वेतन पर काम करने का चलन नहीं था।

19वीं सदी के आखिर में, यूरोपीय ताकतें अफ्रीका के विशाल भूक्षेत्र और खनिज भण्डारों को देखकर इस महाद्वीप की ओर आकर्षित हुई थीं। यूरोपीय लोग अफ्रीका में बागानी खेती करना और खदानों का दोहन करना चाहते थे ताकि उन्हें वापस यूरोप भेजा जा सके, लेकिन वहाँ एक ऐसी समस्या पेश आई, जिसकी उन्हें उम्मीद नहीं थी। उन्हें वहाँ वेतनभोगी श्रमिक ही उपलब्ध नहीं हो रहे थे। श्रमिकों को अपने पास रोकने तथा उन्हें मजदूरी देकर काम कराने के उनके सभी उपाय बेकार हो गए।

रिंडरपेस्ट बीमारी ने यूरोप के लोगों की इस समस्या को हल कर दिया। 5 वर्षों में रोग पूरे अफ्रीका में फैल गया और 90 प्रतिशत पशुओं की मौत हो गई। सरकार ने शेष बचे पशुओं को अपने नियन्त्रण में लेकर श्रम को बाजार तक पहुँचा दिया। अत: अब बागानों, खानों और खेतों में काम करने के लिए श्रमिक उपलब्ध होने लगे।

भारत से अनुबन्धित (गिरमिटिया) मजदूरों को अन्य जगहों पर ले जाया जाना भी उन्नीसवीं शताब्दी की दुनिया की विविधता को प्रतिबिम्बित करता है। यह तीव्र आर्थिक वृद्धि के साथ-साथ जनता के कष्टों में वृद्धि की कुछ लोगों की आय में वृद्धि और दूसरों के लिए ज्यादा गरीबी की, कुछ क्षेत्रों में भारी तकनीकी प्रगति और दूसरे क्षेत्रों में उत्पीड़न के नए रूपों के उदय की दुनिया थी।

3. 1929 में प्रारम्भ हुई आर्थिक महामन्दी विश्व के लिए एक नया दु:खद अनुभव था। यह संकट 1930 के दशक तक बना रहा। इस अवधि में विश्व-भर में उत्पादन, रोजगार आय और व्यापार में गिरावट दर्ज की गई। कृषि-व्यवसाय और औद्योगिक क्षेत्र पर इसका सर्वाधिक बुरा प्रभाव पड़ा। कृषि-उत्पादों के मूल्य गिरने से कृषक बर्बाद हो गए।

महामन्दी के पीछे मुख्य कारण कृषि क्षेत्र में अधिक उत्पादन होना तथा उनके मूल्य गिर जाना तथा किसानों द्वारा अपनी आय बढ़ाने के लिए उत्पादन बढ़ाने का प्रयास करना था। जैसे-जैसे बाजार में कृषि उत्पादों की पूर्ति बढ़ी, मूल्य गिरते चले गए।

1920 के दशक में, अमेरिका ने विश्व-भर के देशों को जो कर्ज बाँटा था, इस मन्दी में देशों ने उसे लौटा दिया। फिर भी अमेरिकी ऋण पर निर्भर देशों की स्थिति खराब ही बनी रही। इसके फलस्वरूप, यूरोप के कई बैंक धराशायी हो गए। देशों की मुद्राओं के मूल्य बुरी तरह गिर गए। कृषि-उत्पादों के मूल्य जमीन पर आ गए। सरकारों ने अर्थव्यवस्था को बचाने के लिए सीमा-शुल्क दोगुने कर दिए। विश्व-व्यापार की हालत सबसे खराब थी।

औद्योगिक देशों में, मन्दी का सबसे बुरा प्रभाव अमेरिका पर ही पड़ा। मूल्यों में गिरावट तथा बढ़ती मन्दी के कारण अमेरिका बैंकों ने ऋण देने बन्द कर दिए। पुराने ऋणों की वसूली तेज कर दी। किसान अनाज न बेच पाने के कारण अपने परिवारों का पालन-पोषण नहीं कर पा

रहे थे। अमेरिका में जो परिवार ऋण नहीं चुका पाए, उनके मकान, कार और सम्पत्ति कुर्क कर ली गई। लोगों की उपभोक्तावादी सम्पन्नता एकदम उड़ गई। कर्जदारों ने बैंकों के ऋण वापस नहीं किए, अत: वे दिवालिया हो गए। अमेरिका में, 1932 तक लगभग 1,10,000 कम्पनियाँ चौपट हो चुकी थीं।'

चूँकि औपनिवेशिक भारत कृषि वस्तुओं का निर्यातक और तैयार मालों का आयातक बन चुका था, इसलिए महामन्दी ने भारतीय व्यापार को शीघ्र प्रभावित किया। 1928 से 1934 के बीच देश के आयात-निर्यात में लगभग 50 प्रतिशत की कमी दर्ज की गई। जब अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में कीमतें गिरने लगीं, तो यहाँ भी कीमतें नीचे आ गईं। 1928 से 1934 के बीच भारत में गेहूँ की कीमत 50 प्रतिशत तक गिर गई।

4. प्रथम विश्व युद्ध समाप्त होने पर, राष्ट्रों पर मानवीय विनाश के दु:ख के साथ अर्थव्यवस्था के विनाश का पहाड़ भी टूट पड़ा। प्रत्येक देश अपनी अर्थव्यवस्था को सही पटरी पर लाने के लिए जुट गया।

अमेरिका ने बड़े पैमाने पर उत्पादन की प्रणाली को अपनाकर अपनी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाया। कार निर्माता **हेनरी फोर्ड** को वृहद उत्पादन प्रणाली के विकास का श्रेय दिया जाता है। अमेरिका में शिकागो तथा डेट्रामट में उद्योगों की स्थापना करके **उत्पादन की असेम्बली लाइन प्रणाली** अपनाई गई। इस व्यवस्था में, एक ओर उत्पादन प्रारम्भ करने पर दूसरे छोर पर पूर्ण निर्मित उत्पाद मिल जाते थे। इससे उत्पादन बढ़ने के साथ-साथ श्रमिकों की कार्यक्षमता भी बढ़ गई। **इस प्रणाली से हेनरी फोर्ड के कारखानों में प्रत्येक तीन मिनट में एक कार तैयार होने लगी। टी मॉडल नामक कार इस व्यवस्था से बनी प्रथम कार थी।** इस व्यवस्था को बनाए रखने के लिए श्रमिकों का वेतन दोगुना करके श्रमिक संघों के गठन पर प्रतिबध लगा दिया गया। इस प्रकार कम लागत में अधिक उत्पादन मिलने लगा। अमेरिका की इस उत्पाद-पद्धति को यूरोप के देशों ने भी अपना लिया। इस व्यवस्था ने जहाँ उद्योगपतियों के लाभ में वृद्धि की, वहीं श्रमिक भी मालमाल हो गए।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

रेशम मार्ग .... तक पहुँचाया।

(क) रेशम मार्ग ने पूर्व और पश्चिम की दुनिया को व्यापार और संस्कृति से भी समृद्ध बनाने में अहम भूमिका निभाई।

(ख) यूरोपीय देशों से ईसाई मिशनरी इसी मार्ग से पूर्व में आए।

(ग) बाद में मुस्लिम धर्म उपदेशक इस्लाम धर्म के साथ विश्व भर में जा पहुँचे।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्त्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

अमेरिकी अर्थव्यवस्था .... नहीं लिया।

(क) अमेरिकी अर्थव्यवस्था मुनाफे पर टिकी हुई थी। मजदूरी बढ़ाने से हेनरी फोर्ड का

लाभ कम हो गया था।

(ख) वे अपनी असेम्बली लाइन की गति को बार-बार बढ़ाने लगे थे। इसलिए उनके मजदूरों पर काम का बोझ लगातार बढ़ता ही जा रहा था। अपने इस फैसले से फोर्ड काफी सन्तुष्ट थे। कुछ समय के बाद उन्होंने कहा था कि 'लागत कम करने के लिए' अपनी जिन्दगी में उन्होंने इससे अच्छा फैसला कभी नहीं लिया।

(ग) अमेरिकी अर्थव्यवस्था मुनाफे पर टिकी थी।

4 औद्योगीकरण का युग

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ग) **6.** (घ) **7.** (क) **8.** (घ)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **उन्नीसवीं सदी के यूरोप में कुछ उद्योगपति मशीनों के बजाय हाथ से काम करने वाले श्रमिकों को प्राथमिकता क्यों देते थे?**

उत्तर– प्रौद्योगिकी में हो रहे परिवर्तनों की गति धीमी थी। औद्योगिक भूदृश्य पर ये बदलाव नाटकीय तेजी से नहीं फैले। नयी तकनीक महँगी थी। सौदागर और व्यापारी उनके इस्तेमाल के सवाल पर फूँक-फूँक कर आगे बढ़ते थे। मशीनें जल्दी खराब हो जाती थीं और उनकी मरम्मत पर खर्च भी काफी आता था। वे उतनी अच्छी भी नहीं थीं जितना उनके आविष्कारों और निर्माताओं का दावा था।

कूट आधारित प्रश्न

- **किस बन्दरगृह से भारत खाड़ी के देशों और लाल सागर के बन्दरगाहों से जुड़ा हुआ था?**

उत्तर–(क) केवल (i)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **स्पिनिंग जेनी का आविष्कार ____________ किया?**

उत्तर–(ख) जेम्स हरप्रीव्ज

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर–(घ) (iv) (iii) (ii) (i)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है–**

उत्तर–(ग) केवल (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर–(क) सत्य (ख) असत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में यूरोपीय शहरों के सौदागर गाँवों की ओर रुख करने लगे थे। ये सौदागर किसानों और कारीगरों को धन देते थे और उनसे अन्तर्राष्ट्रीय बाजार के लिए वस्तुओं का उत्पादन करवाते थे। उस समय विश्व-व्यापार के विस्तार और विश्व के विभिन्न भागों में उपनिवेशों की स्थापना के कारण वस्तुओं की माँग बढ़ने लगी थी। इस माँग की पूर्ति के लिए केवल शहरों में रहते हुए उत्पादन नहीं बढ़ाया जा सकता था। कारण यह था कि शहरों में शहरी दस्तकारी और व्यापारिक **गिल्ड्स** (Guilds) बहुत शक्तिशाली थे। ये गिल्ड्स उत्पादकों के संगठन होते थे। गिल्ड्स से जुड़े उत्पादक कारीगरों को प्रशिक्षण देते थे, उत्पादकों पर नियन्त्रण रखते थे, प्रतिस्पर्धा और मूल्य निर्धारित करते थे तथा व्यवसाय में नए नागरिकों को आने से रोकते थे। शासकों ने भी विभिन्न गिल्ड्स को खास उत्पादों के उत्पादन और व्यापार का एकाधिकार दिया हुआ था। फलस्वरूप, नए व्यापारी शहरों में कारोबार नहीं कर सकते थे। अत: वे गाँवों की ओर जाने लगे।
2. सन् 1900 में टी पॉल म्यूजिक कम्पनी ने संगीत की एक किताब प्रकाशित की थी, जिसके कवर पर दी गई तस्वीर में 'नयी सदी के उदय' (डॉन ऑफ द सेंचुरी) (चित्र 1) का सन्देश दिया गया था। जैसा कि हम देख सकते हैं, इस तस्वीर के मध्य में एक देवी जैसी तस्वीर है। यह देवी हाथ में नई शताब्दी की ध्वजा लिए प्रगति का दूत दिखाई देती है। उसका पाँव पाँच पंखों वाले पहिये पर टिका हुआ है, जोकि समय का प्रतीक है। उसकी उड़ान भविष्य की ओर है। उसके पीछे रेलवे, कैमरा, मशीनें, प्रिंटिंग प्रेस और कारखाना आदि उन्नति के चिह्न दिखाई दे रहे हैं।

   तकनीक और मशीन सामंजस्य का यह महिमामण्डन एक अन्य तस्वीर में और ज्यादा साफ दिखाई दे रहा है। सौ साल से भी पहले एक तस्वीर एक व्यापारिक पत्रिका में छपी थी (चित्र 2) जिसमें दो जादूगरों को दिखाया गया है। ऊपर वाले हिस्से में प्राच्य क्षेत्र का अलादीन है, जिसने अपने जादुई चिराग को रगड़कर एक भव्य महल का

निर्माण कर दिया है। नीचे वाले हिस्से में एक आधुनिक मिस्त्री है जो अपने आधुनिक औजारों से एक नया जादू रच रहा है। वह पुल, पानी के जहाज, मीनार और गगनचुंबी इमारतें बनाता है। इस तस्वीर में अलादीन को पूरब और अतीत का प्रतीक तथा मैकेनिक को पश्चिम और आधुनिकता के प्रतीक के रूप में दर्शाया गया है।

३. मैनचेस्टर के व्यापारी प्रारम्भ में अपना कपड़ा बेचने के लिए, कपड़े के बण्डलों पर लेबल लगते थे जिनसे खरीदारों को कम्पनी का नाम और पते का ज्ञान हो जाता था। लेबल, कम्पनी की ख्याति और वस्तु की गुणवत्ता का प्रतीक थे। 'मेड इन मैनचेस्टर' लिखा होना गुणवत्ता की गारण्टी थी। अत: ग्राहक बिना भय के कपड़ा खरीद लेते थे।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जेम्स हरीग्रव्ज द्वारा 164 ई० में बनाई गई इस मशीन ने कताई की प्रक्रिया तेज कर दी और कामगारों की माँग घटा दी। इससे कुपित होकर ब्रिटेन की महिला कामगारों ने स्पिनिंग जेनी मशीनों पर हमले किए।

2. बाजार में श्रम की अधिकता ने मजदूरों के जीवन पर गहरा प्रभाव डाला। काम पाने के लिए गाँवों से बड़ी संख्या में लोग शहरों में आने लगे। नौकरी का मिलना जान-पहचान पर निर्भर करता था। यदि किसी कारखाने में किसी का रिश्तेदार या मित्र काम कर रहा होता था, तो उसे नौकरी मिलने की सम्भावना बहुत अधिक रहती थी। क्योंकि सभी के पास ऐसे सम्पर्क नहीं होते थे, इसीलिए रोजगार चाहने वाले बहुत-से लोगों को कई-कई दिनों तक इन्तजार करना पड़ता था। वे पुलों के नीचे या रैन-बसेरों में अपनी रातें व्यतीत करते थे। कुछ बेरोजगार शहर में बने निजी रैन बसेरों में रहते थे। अनेक बेरोजगार कानून-विभाग द्वारा चलाए जाने वाले अस्थायी बसेरों में भी शरण लेते थे।

3. प्रथम विश्वयुद्ध तक औद्योगिक विकास धीमी गति से हुआ। युद्ध ने एक बिल्कुल नई स्थिति पैदा कर दी थी। ब्रिटिश कारखाने सेना की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए युद्ध सम्बन्धी उत्पादन में व्यस्त थे। इसलिए भारत में मैनचेस्टर के माल का आयात कम हो गया। भारतीय बाजारों को कम समय में ही एक विशाल देशी बाजार मिल गया। युद्ध लम्बा खिंचा तो भारतीय कारखानों में भी फौज के लिए जूट की बोरियाँ, फौजियों के लिए वर्दी के कपड़े, टैन्ट और चमड़े के जूते, घोड़े व खच्चर की जीन तथा बहुत सारे अन्य सामान बनने लगे। नए कारखाने भी लगाए गए। पुराने कारखाने कई पालियों में चलने लगे। बहुत सारे नए मजदूरों को काम पर रखा गया और प्रत्येक को पहले से भी अधिक समय तक काम करना पड़ता था। इस प्रकार युद्ध के दौरान औद्योगिक उत्पादन तेजी से बढ़ा।

जब युद्ध समाप्त हो गया तो युद्ध के बाद मैनचेस्टर को भारतीय बाजारों में पहले जैसी स्थिति कभी प्राप्त नहीं हो पाई।

4. 1750 के दशक तक भारतीय सौदागरों का दबदबा कम होने लगा था अथवा नेटवर्क टूटने लगा था।

यूरोपीय कम्पनियों की शक्ति बढ़ती जा रही थी। पहले उन्होंने स्थानीय दरबारों से कई प्रकार की रियायतें प्राप्त कीं और फिर उन्होंने व्यापार पर इजारेदारी अधिकार प्राप्त कर लिए। इससे सूरत व हुगली बन्दरगाह कमजोर पड़ गए। इन बन्दरगाहों से होने वाले निर्यात में कमी आने लगी। पहले जिस ऋण से व्यापार चलता था, वह समाप्त होने लगा। धीरे-धीरे स्थानीय बैंकर दिवालिया हो गए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. अठारहवीं व उन्नीसवीं शताब्दी में नए-नए आविष्कार हुए। इससे उत्पादन तीव्र गति से होने लगा। इसी को औद्योगिक क्रान्ति कहा जाता है।

अठारहवीं व उन्नीसवीं शताब्दी में इंग्लैंड में औद्योगीकरण शुरू हुआ, उस औद्योगिक बदलाव की गति के थे कारण इस प्रकार हैं—

प्रथम चरण—ब्रिटेन में सबसे गतिशील उद्योग कपास और धातु उद्योग थे। 1840 ई० के दशक का कपास-उद्योग औद्योगीकरण के पहले चरण का सबसे बड़ा उद्योग बन चुका था। इसके बाद लौह एवं इस्पात उद्योग प्रमुख उद्योग रहे। 1840 ई० के दशक से इंग्लैण्ड में और 1860 ई० के दशक से उसके उपनिवेशों में रेलवें का विस्तार होने लगा था। इसके परिणामस्वरूप लोहे और स्टील की आवश्यकता में और भी ज्यादा बढ़ोत्तरी हो गयी। 1873 ई० तक ब्रिटेन के लोहा और स्टील निर्यात का मूल्य लगभग 7.7 करोड़ पौंड हो गया था। यह राशि इंग्लैण्ड से होने वाले कपास के निर्यात—मूल्य से दोगुनी थी।

द्वितीय चरण—नए उद्योगों की बाढ़ में परम्परागत उद्योग इतनी सरलता से हाशिए पर ढकेले नहीं जा सकते थे। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त में भी तकनीकी रूप से विकसित औद्योगिक क्षेत्र में काम करने वाले मजदूरों की संख्या कुल मजदूरों में 20 प्रतिशत से ज्यादा नहीं थी। यद्यपि कपड़ा-उद्योग इंग्लैण्ड में आगे बढ़ता हुआ या गतिमान उद्योग था परन्तु, उसके उत्पादन का एक बड़ा भाग कारखानों में नहीं, अपितु घरेलू इकाइयों में होता था।

तृतीय चरण—भाप के इंजनों के निर्माण ने कपड़ा-उद्योग को तेज गति प्रदान की थी, लेकिन ये परम्परागत उद्योग पूरी तरह ठहराव की अवस्था में भी नहीं थे। ये कुटीर उद्योग अब बड़े उद्योग के सहायक उद्योग के रूप में विकसित हुए। इस तरह के उद्योगों में खाद्य-सामग्री, लघु उद्योग, चर्म-शोधन, फर्नीचर, काँच का काम इत्यादि जैसे कार्मों की माँग पहले के ही समान थी। इस तरह इन उद्योगों ने भी औद्योगिक क्रान्ति के साथ अपना सम्बन्ध स्थापित कर लिया था।

चतुर्थ चरण—समाज में जो प्रौद्योगिकीय बदलाव आ रहे थे, उनकी गति मन्दी थी। इस गति के मन्दी होने के कई कारण थे, जैसे—रूढ़िवादी समाज एकदम से इन परिवर्तनों को अपनाने से हिचक रहा था। सौदागर एवं व्यापारी नई तकनीक का प्रयोग करने से पहले काफी सोच-विचार करते थे। उन्हें इसके प्रयोग पर अभी-भी पूर्ण विश्वास नहीं था। कारखानों में लगाई जाने वाली मशीनें जल्दी खराब हो जाया करती थीं और उनकी मरम्मत पर काफी खर्च आता था।

2. उद्योगों को बहुतायत में श्रमिक मिल जाने से, मजदूर की स्थिति दयनीय बनी हुई थी। नौकरी मिलने की सूचना मिलते ही श्रमिक गाँवों से नगरों की ओर दौड़ लगा देते थे। नौकरी दिलवाने में उनके परिचित-परिवारजन सहायक बनते थे। कुछ लोगों को रोजगार पाने के लिए हफ्तों प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। इन्हें रातें पुलों के नीचे या रैन बसेरों में काटनी पड़ती थीं।

काम का सीजन निकल जाने पर, इन्हें अक्सर खाली भी बैठना पड़ता था। इन बेचारों के जीवन में प्राय: उतार-चढ़ाव का चक्र चलता ही रहता था। इनकी आय रोजगार की अवधि तथा वेतन की दर पर निर्भर होती थी।

19वीं शताब्दी श्रमिकों के लिए वेतन-वृद्धि का अवसर लेकर आई परन्तु उससे श्रमिकों की दशा में कोई विशेष सुधार नहीं आया क्योंकि उन्हें वेतन दिनों के अनुसार काम करने पर मिलता था। 1930 की विश्वव्यापी आर्थिक मन्दी ने इनकी दशा को और खराब कर दिया।

प्रौद्योगिकी के विकास से श्रमिक चिढ़ते थे क्योंकि उन्हें डर था कि इससे बेरोजगारी बढ़ेगी।

1840 के दशक में, नगरों में निर्माण—उद्योग का विकास होने से रोजगार के नए स्रोत उत्पन्न हो गए। सड़कों व रेलवे लाइनों को बढ़ाया गया। जल निकास और सीवर व्यवस्था ठीक की गई। परिवहन के विकास ने लाखों लोगों को रोजगार दे दिया। इस क्षेत्र में श्रमिकों की संख्या पहले से दो गुना और फिर चार गुना हो गई।

3. औद्योगीकरण के फलस्वरूप संचार व यातायात में काफी विकास हुआ। 1840 के दशक से इंग्लैंड में और 1860 के दशक से उसके उपनिवेशों में रेलवे का विस्तार होना प्रारंभ हो चुका था। इसी समय नए-नए आविष्कारों के अन्तर्गत मोटरगाड़ियाँ और वायुयान का भी निर्माण हुआ। इससे यात्रा सुगम हो गई और समय की भी बचत होने लगी। उत्पादित माल और कच्चे माल की आवाजाही में क्रान्ति आ गई।

4. उन्नीसवीं शताब्दी की शुरुआत में ब्रिटेन के वस्त्र-उत्पादों के निर्यात में नाटकीय वृद्धि हुई। अठारहवीं शताब्दी के अन्त में भारत उत्पादों का न के बराबर निर्यात होता था। 1850 तक भारतीय आयात में सूती कपड़े का आयात 31 प्रतिशत हो चुका था। 1870 तक यह 50 प्रतिशत से भी अधिक हो गया।

भारत में कपड़ा बनुकरों के समक्ष एक साथ दो समस्याएँ थीं। उनका निर्यात बाजार खत्म होने लगा था तथा स्थानीय बाजार सिकुड़ने लगा था। स्थानीय बाजार में मैनचेस्टर के आयातित मालों की भरमार थी। कम लागत पर मशीनों से बनने वाले आयातित कपास उत्पाद इतने सस्ते थे कि बुनकर उनसे प्रतिस्पर्द्धा नहीं कर सकते थे। 1850 के दशक तक देश के अधिकतर बुनकर क्षेत्रों में गिरावट और बेकारी के ही किस्सों की अधिकता थी।

1860 में बुनकरों के सामने एक और समस्या उत्पन्न हुई। उन्हें अच्छी कपास नहीं मिल पा रही थी। जब अमेरिकी गृहयुद्ध शुरू हुआ तथा अमेरिका से कपास की आमद बन्द हो गई तो ब्रिटेन ने भारत से कच्चा माल मँगाना आरम्भ कर दिया। भारत से कच्चे कपास के निर्यात में बढ़ोत्तरी होने से इसके दाम बढ़ गए। भारतीय बुनकरों को कच्चे माल के लाले पड़ गए। 19वीं सदी के अन्त में बुनकरों और कारीगरों के सामने एक और समस्या आ गई, वह समस्या यह थी कि अब भारतीय कारखानों में उत्पादन होने लगा और बाजार मशीनों की बनी चीजों से पट गया था। ऐसे में बुनकर उद्योग धराशायी हो गया।

5 मुद्रण संस्कृति और आधुनिक दुनिया

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ख) 5. (क) 6. (घ)
7. (ख) 8. (क)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **प्रस्तुत चित्र भारत में छपाई आने से बहुत पहले दृश्य को दर्शा रहा हैं इसे देखकर बताइए कि छापेखाने इसे के पश्चात् पुस्तकों की लिखाई में लगने वाला समय किस प्रकार से कम हुआ और इसके फलस्वरूप किन-किन का हरास हुआ?**

उत्तर– छापेखाने के आने से पुस्तकों को हाथ से लिखने की जरूरत नहीं रह गई। इससे लिखाई में लगाने वाला समय हुत कम हो गया। इसके फलस्वरूप हाथ से लिखने वालों, डिजाइन आदि बनाने वालों का ह्रास हुआ।

कूट आधारित प्रश्न

- **निम्न में से किस देश में चैपबुक्स बेचने वालों को चैपमेन कहा जाता था?**

उत्तर–( ) इंग्लैण्ड

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **प्रिंटिंग प्रेस का आविष्कार ____________ किया था?**

उत्तर–(क) गुटेन्बर्ग

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (ख) (ii) (iv) (i) (iii)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **आतंक राज से जुड़ा कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर–(ग) केवल (ii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर–(क) सत्य (ख) असत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. मुद्रण क्रान्ति के फलस्वरूप १५वीं व १६वीं शताब्दी में यूरोप में लोगों के विचर, सोच, धर्म, प्रेम, परंपराएँ और रीति-रिवाज सभी को बदलने का काम किया। पुस्तक उत्पादन के नए तरीकों से यह सब सम्भव हुआ।

2. उन्नीसवीं सदी में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य किया जा रहा था। जिसके कारण बच्चे शिक्षा से जुड़ते गए और पाठय-पुस्तकों की माँग बढ़ती गई। माँग में वृद्धि होने के कारण प्रकाशनों ने पुस्तकों का उत्पादन भी बढ़ा दिया। इसलिए फ्रांस में बाल पुस्तकें छापने के लिए एक मुद्रणालय (झ्हूग्हु जै) स्थापित किया गया। इस प्रेस में नयी और पुरानी, दोनों तरह की परी-कंथाओं और लोक-कथाओं (इदर्ल्ूे) की पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। १८१२ में परी-कथाओं का एक संकलन प्रकाशित किया गया। जर्मनी के ग्रिम बन्धुओं ने बरसों लगाकर किसानों के बीच से लोक-कथाएँ जमा कीं। उनके द्वारा एकत्रित सामग्री का संपादन हुआ, फिर कहानियों को अंतत: १८१२ के एक संकलन में छापा गया। बच्चों के लिए अनुपयुक्त (ल्हेर्लूेत) सामग्री, या जो चीजें कुलीन वर्गों को अश्लील (न्र्लुें) लगती थीं, उन्हें प्रकाशित संस्करण में शामिल नहीं किया जाता था। इस तरह पुरानी लोक कथाओं को नया रूप मिला—छापने से वे दर्ज तो हुईं, पर इस प्रक्रिया में बदल भी गईं।

3. मुद्रण संस्कृति भी फ्रांस की क्रान्ति के लिए उतनी ही उत्तरदायी थी जितने कि अन्य कारण। आइए, परीक्षण करें कि मुद्रण संस्कृति ने किस प्रकार और कहाँ तक फ्रांस की क्रान्ति को प्रभावित किया—

   1. मुद्रण संस्कृति ने फ्रांस की क्रान्ति के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण किया। इसी ने फ्रांस की क्रान्ति के लिए पृष्ठभूमि तैयार की।

   2. मुद्रण संस्कृति के कारण जो ज्ञान का उद्‍गम हुआ उसने प्राचीन परम्पराओं में अन्ध-विश्वासों और निरंकुशवाद के विरोध में जो वातावरण तैयार किया उसी ने क्रान्ति की अग्नि धधका कर दी।

   3. साहित्यकारों और लेखकों ने वैज्ञानिक दृष्टिकोण और विवेक की कसौटी पर परखकर ही धर्म और चर्च की निरंकुशता का विरोध करने का आह्वान किया।

   4. रूसो और वाल्टेयर जैसे दार्शनिकों ने लोगों के ज्ञान चक्षु खोलकर उन्हें अन्यायपूर्ण सत्ता का विरोध करने तथा तार्किक दृष्टिकोण अपनाने का मार्ग दिखाया।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सामाजिक सुधारों और उपन्यासों ने पहले ही नारी जीवन और उससे जुड़ी भावनाओं में रुचि पैदा कर दी थी। इसी कारण जिन भी महिलाओं ने आप-बीती के विषय में लिखा, वह पाठक वर्ग के मन में कौतुहल का विषय बन गया। महिलाओं की काया पलटने में मुद्रण संस्कृति की अहम भूमिका रही है। अब महिलाओं की समस्याओं, भावनाओं और जीवन के विषय में

काफी ज्यादा लिखा जाने लगा। 1860 ई० के दशक से कैलाशबाशिनी देवी जैसी लेखिकाओं ने महिलाओं के अनुभवों पर लिखना शुरू किया— कैसे वे घरों में बन्दी और शिक्षित बनाकर रखी जाती थीं? कैसे वे घर-परिवार के कामों का बोझ उठाती थीं? तथा जिनकी वे सेवा करती थीं, वही उन्हें किस तरह जानवरों की भाँति दुत्कारते थे? आज जो महाराष्ट्र है वहाँ 1880 के दशक में ताराबाई शिन्दे और पण्डिता रमाबाई ने उच्च जातियों की महिलाओं की दयनीय हालत के विषय में बड़े ही जोश और रोष के साथ लिखा। उनके लेखों से महिलाओं के लिए एक नई जागृति आई। सामाजिक बन्धनों में बँधी महिलाओं के लिए पढ़ने के क्या मायने हैं, इस सम्बन्ध में एक तमिल उपन्यास में एक महिला ने लिखा, ''बहुतेरे कारणों से मेरी दुनिया छोटी है....मेरे जीवन की आधी से ज्यादा खुशियाँ पुस्तकें पढ़ने से आई हैं....।''

2. बंगाल में केन्द्रीय कलकत्ता का एक पूरा क्षेत्र—बटाला— लोकप्रिय पुस्तकों के प्रकाशन में लग गया। यहाँ पर आप धार्मिक गुटकों और धार्मिक ग्रन्थों के सस्ते संस्करण अश्लील और सनसनीखेज समझे जाने वाले संस्करण भी खरीद सकते थे। उन्नीसवीं सदी के अन्त तक इस प्रकार की अनेक पुस्तकों पर काठ की तख्ती और लिथोग्राफी रंगों की सहायता से काफी संख्या में तस्वीरों को उकेरा जा रहा था। फेरीवाले बटाला के प्रकाशन आदि को लेकर घर-घर घूमते थे। इसका लाभ यह हुआ कि घरों की महिलाओं को फुर्सत के समय अपनी मनपसन्द पुस्तकों को पढ़ने की सुविधा प्राप्त हो गई।

3. सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के दौरान यूरोप के अधिकांश भागों में साक्षरता बढ़ती रही। अलग-अलग सम्प्रदाय के चर्चों ने गाँवों में स्कूल स्थापित किए और किसान-कारीगरों को शिक्षित करना प्रारम्भ कर दिया। इन प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि यूरोप के कुछ देशों में तो साक्षरता की दर 60% से 80% तक पहुँच गई। इन सबके कारण लोगों में शिक्षा के प्रति एक जुनून (mania) पैदा हो गया।

4. उन्नीसवीं सदी में प्राथमिक शिक्षा को अनिवार्य किया जा रहा था। जिसके कारण बच्चे शिक्षा से जुड़ते गए और पाठय-पुस्तकों की माँग बढ़ती गई। माँग में वृद्धि होने के कारण प्रकाशनों ने पुस्तकों का उत्पादन भी बढ़ा दिया। इसलिए फ्रांस में बाल पुस्तकें छापने के लिए एक मुद्रणालय (Printing press) स्थापित किया गया। इस प्रेस में नयी और पुरानी, दोनों तरह की परी-कंथाओं और लोक-कथाओं (Folktales) की पुस्तकों का प्रकाशन किया गया। 1812 में परी-कथाओं का एक संकलन प्रकाशित किया गया। जर्मनी के ग्रिम बन्धुओं ने बरसों लगाकर किसानों के बीच से लोक-कथाएँ जमा कीं। उनके द्वारा एकत्रित सामग्री का संपादन हुआ, फिर कहानियों को अंतत: 1812 के एक संकलन में छापा गया। बच्चों के लिए अनुपयुक्त (unsuitable) सामग्री, या जो चीजें कुलीन वर्गों को अश्लील (vulgar) लगती थीं, उन्हें प्रकाशित संस्करण में शामिल नहीं किया जाता था। इस तरह पुरानी लोक कथाओं को नया रूप मिला—छापने से वे दर्ज तो हुईं, पर इस प्रक्रिया में बदल भी गईं।

5. भारत में प्राचीन काल से संस्कृत, अरबी, फारसी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं की पाण्डुलिपियाँ ताड़ के पत्तों तथा हाथ से बने कागज पर नकल करके तैयार की जाती थीं। उन्हें तख्तियों की जिल्द में सिलकर सुरक्षित रखा जाता था।

औपनिवेशिक शासन की स्थापना से पहले, बंगाल के गाँव में प्राथमिक पाठशालाओं का बड़ा जाल फैला हुआ था। उस समय पुस्तकें नहीं थीं। गुरु छात्रों को पुस्तकों का ज्ञान जबानी देते थे। अत: अनेक लोग बिना पुस्तकों के साक्षर बने। वेदों को इसी तरह कण्ठस्थ कराया जाता था।

प्रिंटिंग प्रेस पहले-पहल सोलहवीं शताब्दी में गोवा में पुर्तगाली धर्म-प्रचारकों के साथ आया था।

6. **बास्टील कितागावा उतामारो**, 1753 ई० में एदो (टोक्यो) में पैदा हुए उतामरो ने उकियो (तैरती दुनिया के चित्र) नाम की एक नई चित्रकला शैली में अहम् योगदान दिया, जिनमें आम शहरी जीवन का चित्रण किया गया है। इनकी छपी प्रतियाँ यूरोप और अमेरिका पहुँचीं और वहाँ माने, मोने एवं वान गॉग जैसे चित्रकारों को प्रभावित किया। त्सुताया जुजाबूरों जैसे प्रकाशकों ने विषय चुनकर कलाकारों से उनपर चित्र बनाने का करार किया। फिर चित्रकार विषय की रूपरेखा तैयार करते थे। इसके पश्चात् हुनरमंद वुडब्लॉक शिल्पी चित्रकार द्वारा बनाई गई रूपरेखा को तख्ती पर चिपकाकर उसकी आकृति को उकेर लेते थे। इस प्रक्रिया में मूल आरेख तो गायब हो जाता था, पर उसकी छपी नकल बच जाती थी।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सबसे पहले मुद्रण की तकनीक चीन और जापान जैसे पूर्वी एशियाई देशों में विकसित हुई। रेशमी मार्ग से अन्य पदार्थों के साथ जापान का कागज भी यूरोप पहुँच गया। कागज पर यूरोप के लेखक हाथ से लिखकर पांडुलिपियाँ तैयार करने लगे। **1295 ई० में, मार्कोपोलो नामक खोजी यात्री जब चीन से यूरोप लौटा तो वह कागज बनाने की कला तथा मुद्रण-कला अपने साथ ले गया।** अब इटली में तख्तों (बूडब्लॉक) पर पुस्तकें छापी जानें लगीं। धीरे-धीरे इस तकनीक को समूचे यूरोप ने अपना लिया। यहाँ पुस्तकें वेलम (चर्मपत्र) पर छापी जाने लगी थीं, जिन्हें व्यापारी तथा विद्यार्थी खरीदते थे। यूरोप के व्यापारियों ने पुस्तकों का निर्यात करके उनकी माँग बढ़ा दी। पुस्तक-विक्रेता स्वयं पुस्तकें छपवाकर बेचने लगे। पुस्तकों का सर्कुलेशन (प्रसार) बढ़ाने के लिए नई तकनीक खोजना आवश्यक हो गया। **अत: 1430 ई० में योहान गुटनवर्ग ने पुस्तकों के मुद्रण की नई तथा सस्ती तकनीक खोज कर मुद्रण-कला के स्वर्णिम युग का शुभारंभ कर दिया।** इस सस्ती और नवीन मुद्रण-कला तकनीक ने पुस्तक-प्रकाशन को लाभकारी व्यवसाय बना दिया। गुटनवर्ग जैतून का तेल पेरने का काम करता था, अत: उसने उसी मशीन को छापेखाने का रूप देकर पुस्तक छापना प्रारंभ कर दिया। **गुटनवर्ग ने 1448 ई० में सर्वप्रथम 180 प्रतियाँ छापीं, जो पुस्तक उसने छापी वह बाइबिल थी। इस कार्य में उसे तीन वर्ष लगे।** प्रारम्भ में ये पुस्तकें पाण्डुलिपि जैसी प्रतीत होती थी, फिर भी इनकी माँग खूब थी। १५५० ई० तक समूचे यूरोप में मुद्रण-कला का प्रसार हो गया। छापेखानों की संख्या बढ़ने के साथ-साथ मुद्रण-कला का विकास हुआ और प्रकाशित पुस्तकों की संख्या बढ़ती चली गई। **हाथ की छपाई के स्थान पर यांत्रिक मुद्रण-कला का विकास हो जाने से मुद्रण-कला के क्षेत्र में क्रान्ति ही आ गई।** गुटेनवर्ग अब अपने छापेखाने में एक घण्टे में 250 पृष्ठ तक मुद्रित करने में सफल हो गया था। इसके परिणामस्वरूप, यूरोप के बाजार में 2 करोड़ प्रकाशित पुस्तकें आ गईं। इन पुस्तकों

के विषय-वस्तु काले रंग से छापे जाते, चित्रों में रंग भर जाते थे।

2. सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के दौरान यूरोप के अधिकांश भागों में साक्षरता बढ़ती रही। अलग-अलग सम्प्रदाय के चर्चों ने गाँवों में स्कूल स्थापित किए और किसान-कारीगरों को शिक्षित करना प्रारम्भ कर दिया। इन प्रयासों का परिणाम यह हुआ कि यूरोप के कुछ देशों में तो साक्षरता की दर 60% से 80% तक पहुँच गई। इन सबके कारण लोगों में शिक्षा के प्रति एक जुनून (mania) पैदा हो गया। लोगों में निरन्तर बढ़ रही जिज्ञासा को शान्त करने के लिए विभिन्न प्रकार की और ज्यादा से ज्यादा पुस्तकों की जरूरत थी।

   नए पाठकों की रुचि के अनुरूप तरह-तरह का साहित्य छपने लगा। पुस्तक व्यवसाय को ज्यादा लाभदायक बनाने के लिए सस्ती और छोटी-छोटी पुस्तकों का प्रकाशन करके उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया। पुस्तक विक्रेताओं ने ज्यादा-से-ज्यादा पुस्तकों को लोगों तक सुलभ बनाने के लिए फेरीवालों को काम पर रखा। ये पुस्तक मुख्य रूप से—पंचांग के अलावा लोकगीतों और लोक-कथाओं की हुआ करती थी। लेकिन जल्द ही मनोरंजन प्रधान-सामग्री भी आम पाठकों तक पहुँचने लगी। इंग्लैण्ड में पेनी **चैपबुक्स** या **एक-पैसिया** पुस्तकें बेचने वालों को चैपमैन कहा जाता था। ये पुस्तकें पॉकेट बुक्स के आकार में छोटी-छोटी पुस्तकें होती थीं। इन पुस्तकों को निर्धन वर्ग के लोग भी खरीदकर पढ़ सकते थे। इन्हें बेचने वालों को 'चैपमैन' कहा जाता था। इसी प्रकार फ्रांस में 'बिब्लियोथीक ब्ल्यू' (Biliotheque Bleue) नामक पुस्तकों का चलन था। ये पुस्तकें छोटे आकार की, सस्ते कागज पर छपी हुईं और नीली जिल्द में बँधी हुई होती थीं। इनके अतिरिक्त यूरोप के बाजारों में चार-पाँच पन्ने की प्रेम-कहानियाँ और अतीत की कुछ गाथाएँ भी छपी हुई होती थीं।

3. मुद्रण कला ने धार्मिक क्षेत्र को विशेष ढंग से प्रभावित किया। **धर्म सुधारक मार्टिन लूथर ने रोमन कैथलिक चर्च की कुरीतियों की आलोचना करते हुए अपनी पिच्चानवे स्थापनाएँ लिखीं।** उसने इसकी एक प्रति विटेनबर्ग के गिरजाघर के दरवाजे पर टाँग दी। लूथर ने चर्च को शास्त्रार्थ करने की चुनौती दी। लूथर के लेख व्यापक जन-समुदाय में पढ़े जाने लगे। अत: इसके प्रभाव से चर्च दो भागों में बँट गया और एक नए प्रोटेस्टेण्ट धर्म की शुरुआत हुई। शीघ्र ही लूथर द्वारा अनुवादित न्यू टेस्टामेन्ट की 5000 प्रतियाँ बिक गईं और उसका द्वितीय संस्करण प्रकाशित करना पड़ा। **मार्टिन लूथर मुद्रण कला के प्रति हृदय से कृतज्ञ था।** उसने उसकी प्रशंसा इन शब्दों में की, **''मुद्रण ने नवीन बौद्धिक वातावरण तैयार किया। इसने धर्म सुधार आन्दोलनों में प्राण फूँके तथा नवीन विचारों का प्रसार किया।''** अत: मुद्रण कला ने धार्मिक जगत को गहराई से प्रभावित किया। यह धर्म सुधार का प्रभावी और सशक्त माध्यम बन गया।

   छपे हुए लोकप्रिय साहित्य के बल पर कम शिक्षित लोग धर्म की भिन्न-भिन्न व्याख्याओं से परिचित हुए। सोलहवीं शताब्दी के इटली के एक मेनोकियो नामक किसान ने अपने क्षेत्र में उपलब्ध किताबों को पढ़ना प्रारम्भ कर दिया था। उन किताबों के आधार पर उसने बाइबिल के नए अर्थ लगाने प्रारम्भ कर दिए और (उसने) ईश्वर और सृष्टि के बारे में ऐसे विचार बनाए कि रोमन कैथोलिक चर्च उसके विचारों के खिलाफ हो गया। ऐसे धर्म-विरोधी विचारों

को दबाने के लिए रोमन चर्च ने जब इक्वोजीशन (धर्म-द्रोहियों को दुरुस्त करने वाली संस्था) (inquisition) शुरू किया, तो मेनोकियो को दो बार पकड़ा गया और आखिरकार उसे मौत की सजा दे दी गई। धर्म के ऐसे पाठ और उस पर उठाए जा रहे प्रश्नों से परेशान रोमन चर्च ने प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं पर कई तरह की पाबन्दियाँ लगाई और 1558 ई० से प्रतिबन्धित किताबों की सूची रखने लगे।

4. रेशमी मार्ग से अन्य पदार्थों के साथ जापान का कागज भी यूरोप पहुँच गया। कागज पर यूरोप के लेखक हाथ से लिखकर पाण्डुलिपियाँ (manuscripts) तैयार करने लगे। 1295 में मार्कोपोलो नामक खोजी यात्री जब चीन से यूरोप लौटा तो वह अपने साथ वुडब्लॉक (काठ की तख्ती) वाली छपाई की तकनीक का ज्ञान लेकर लौटा। फिर क्या था—इतालवी भी तख्ती की छपाई से किताबें निकालने लगे। धीरे-धीरे इस तकनीक को समूचे यूरोप ने अपना लिया।

5. 19वीं सदी के प्रारम्भ से ही धार्मिक मामलों को लेकर बहसों का बाजार गर्म था। अलग-अलग समूह औपनिवेशिक समाज में हो रहे परिवर्तनों से जुझते हुए, धर्म की अपनी-अपनी व्याख्या पेश कर रहे थे कुछ तो मौजूदा रीति-रिवाजों की आलोचनाक रते हुए उनमें सुधार करना चाहते थे, जबकि कुछ अन्य समाज-सुधारकों के तर्कों के विरुद्ध खड़े थे। ये सारे वाद-विवाद प्रिण्ट में, खुलेआम जनता में हुए छपी हुई पुस्तिकाओं और अखबारों ने न केवल नए विचारों का प्रचार-प्रसार किया, बल्कि उन्होंने बहस की शक्ल भी तय की। इन बहसों में व्यापक जन-समुदाय भी भाग ले सकता था, अपने मत जाहिर कर सकता था। इस तरह के मत-मतान्तर से नए विचार उभरे।

उत्तर भारत में उलेमा मुस्लिम राजवंशों के पतन को लेकर काफी चिन्तित थे। उन्हों भय था कि कहीं औपनिवेशिक शासक धर्मातरण को बढ़ावा न दें या मुस्लिम कानून न बदल डालें। इससे निबटने के लिए वे कम कीमत वाले लिथोग्राफी प्रेस का प्रयोग करते हुए धर्मग्रन्थों के फारसी या उर्दू अनुवाद लाए लाए और धार्मिक अखबार तथा गुटके निकाले। सन् 1867 में स्थापित देवबन्द सेमिनरी ने मुसलमान पाठकों को रोजमर्रा का जीवन जीने का तरीका और अपने सिद्धान्तों के मायने समझाते हुए हजारों **फलवे** जारी किए। पूरी 19वीं सदी के दौरान कई इस्लामी सम्प्रदाय औश्र सेमिनरी पैदा हुए, धर्म को लेकर सबको अपनी-अपनी व्याख्याएँ थीं, हर कोई अपना सम्प्रदाय बढ़ाना चाहता था औश्र दूसरों के प्रभाव को कम करना चाहता था।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

17वीं शताब्दी .... भी की।

(क) 17वीं शताब्दी में चीन नगरीय संस्कृति के विकसित होने के साथ ही मुद्रण तकनीक में भी परिवर्तन आ गया।

(ख) यहाँ मुद्रित सामग्री का उपयोग विद्वान और अधिकारियों के साथ व्यापारी और उद्यमी भी करने लगे थे।

(ग) चीन में जो नया पाठक वर्ग उपजा था, उसे काल्पनिक किस्से-कविताएँ, आत्मकथाएँ, शास्त्रीय- साहित्यिक कृतियाँ पढ़ने का विशेष चाव था।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

  सत्रहवीं और .... हो गया।

  (क) सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी के दौरान यूरोप के अधिकांश भागों में साक्षरता बढ़ती रही।

  (ख) अलग-अलग सम्प्रदाय के चर्चों ने गाँवों में स्कूल स्थापित किए और किसान-कारीगरों को शिक्षित करना प्रारम्भ कर दिया।

  (ग) परिणाम यह हुआ कि यूरोप के कुछ देशों में तो साक्षरता की दर 60% से 80% तक पहुँच गई।

इकाई-II : समकालीन भारत-2 (भूगोल)

1 संसाधन एवं विकास

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) 2. (ग) 3. (ख) 4. (घ) 5. (क) 6. (ग)
7. (ग) 8. (ग)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि मृदा के विषय में आप क्या जानते हैं? व मृदा का निर्माण किस प्रकार हुआ? इसके निर्माण में महत्वपूर्ण कारक कौन-से हैं?**

उत्तर– मिट्टी अथवा मृदा सबसे महत्त्वपूर्ण नवीकरण योग्य प्राकृतिक संसाधन है। मृदा एक जीवन्त तन्त्र है। कुछ सेण्टीमीटर मोटी परत बनने में लाखों वर्ष लग जाते हैं। यह पादपों के विकास का माध्यम है, जो पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं की कई प्रजातियों का पोषण करती है। मिट्टी बनने की प्रक्रिया में उच्चावच, जनक शैल या संस्तर शैल, वनस्पति, जलवायु और अन्य जैव पदार्थ और समय को मुख्य कारक माना जाता है।

प्रकृति के कई तत्वों; जैसे— तापमान परिवर्तन, बहते जल की क्रिया, पवन, हिमनदी और अपघटन क्रियाएँ इत्यादि मिट्टी बनने की प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभाती हैं। मिट्टी में होने वाले रासायनिक और जैव परिवर्तन भी महत्त्वपूर्ण हैं। मृदा जैव (ह्यूमस) तथा अजैव दोनों तरह के पदार्थों से बनती है।

कूट आधारित प्रश्न

- **मृदा बनने की प्रक्रिया को निर्धारित करने वाले तत्त्व नहीं हैं**

उत्तर–(क) केवल (i)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **निम्न में से कौन एक अजैवीय संसाधन है?**

उत्तर–(क) चट्टानें

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर–(ख) (ii) (iv) (i) (iii)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **मृदा से सम्बन्धित कौन-सा कन सही नहीं है?**

उत्तर–(ग) केवल (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर–(क) असत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. संसाधन प्रकृति के मुफ्त उपहार नहीं हैं, क्योंकि–
   - संसाधन मानवीय गतिविधियों का एक कार्य हैं।
   - वे हमारे पर्यावरण मे उपलब्ध सामग्री को संसाधनों में बदलते हैं।
   - मनुष्य स्वयं ससाधनों के आवश्यक घटक है।

2. प्राकृतिक संसाधनों का मानव और जीव-जंतु दोनों के लिए अत्यंत महत्व है। इनके बिना हम अपने दैनिक जीवनकी कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। आप स्वयं ही चिार कर सकते हें कि पानी, जमीन, मिट्टी आदि के बिना जीवन का सुचारु रूप से चलता कितना कठिन है।

3. भारत की भूमि के मुख्य लाभों में शालि हैं, कृषि के लिए उपयोगी समतल मैदान, पर्यटन और पारिस्थितिकी के लिए पर्वतीय क्षेत्र, खनिज जीवाश्म ईंधन और जंगलों के लि पठारी क्षेत्र। भारत में विभिन्न प्रकार की स्थलाकृति मौजूद है, जैसे कि पहाड़, पठार, मैदान और द्वीप, जो कि भारत की अर्थव्यवस्था में किसी न किसी प्रकार से योगदान देते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. रेनर द्वारा सुझाए गए संसाधनों के छः वर्ग निम्नलिखित हैं—

(i) असमाप्य और अपरिवर्तनीय संसाधन

(ii) असमाप्य तथा अचक्रणीय संसाधन

(iii) अपूरणीय तथा नवीकरणीय संसाधन

(iv) अपूरणीय परन्तु अनवीकरणीय संसाधन

(v) समाप्य तथा नवीकरणीय संसाधन

(vi) समाप्य तथा पुन: उपयोगीय संसाधन

2. बालक की वृद्धि और विकास धीरे-धीरे होकर वह युवक, प्रौढ़ तथा वृद्ध बन जाता है। संसाधनों का विकास राष्ट्र के आर्थिक विकास से जुड़ा हुआ है। **मानवीय श्रम, पूँजी तथा तकनीक के उपयोग में खनिजों को प्राप्त करना तथा उपयोग के अनुकूल बनाना ही संसाधनों का विकास कहलाता है। मानव के सतत् पोषणीय आर्थिक विकास हेतु संसाधनों का विकास करना आवश्यक है। मनुष्य को जीवन यापन करने तथा जीवन की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए पर्यावरण को बिना हानि पहुँचाए, आर्थिक विकास के लिए संसाधनों का वर्तमान में उपयोग करना तथा उन्हें भावी पीढ़ी के लिए बचाए रखना आवश्यक है।**

3. लाल तथा पीली मृदा ओडिशा, छत्तीसगढ़, मध्य गंगा मैदान के दक्षिणी हिस्से तथा पश्चिमी घाट के तलहटी क्षेत्रों में पाई जाती है। इन मृदाओं का लाल रंग रवेदार आग्नेय तथा रूपान्तरित च—ानों में प्राप्त लौह तत्व की मात्रा के कारण होता है। जबकि यह मृदा जलयोजन के कारण पीली हो जाती है।

लैटेराइट मृदा—लैटेराइट 'ग्रीक शब्द लेटर' (Later) से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ 'ईंट' होता है। इस मृदा की ऊपरी तह प्राय: सख्त होती है। यह मृदा गर्म और अधिक वर्षा वाली जलवायु में पाई जाती है और इसका निर्माण निक्षालन (leaching) क्रिया से होता है। उच्च तापमान के कारण जैविक पदार्थों को अपघटित करने वाले जीवाणु (bacteria) नष्ट हो जाते हैं, जिससे इसमें **ह्यूमस की मात्रा** कम पाई जाती है। लैटेराइट मृदा पर अधिक मात्रा में **खाद्य और रासायनिक उर्वरक** डालकर खेती की जा सकती है।

4. **मरुस्थली मृदा**—मरुस्थली मृदा मुख्य रूप से रेतीली तथा लवणीय होती है। यह मृदा लाल तथा भूरे रंग की होती है। कुछ क्षेत्रों की मृदा में लवण की मात्रा इतनी ज्यादा होती है कि झीलों से जल वाष्पीकृत करके खाने का नमक भी बनाया जा सकता है। इस मृदा में ह्यूमस और नमी की मात्रा कम होती है तथा शुष्क जलवायु और उच्च तापमान के कारण जल वाष्पन दर अधिक होती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. मनुष्य के उपयोगी साधन ही संसाधन हैं।

भारत में संसाधन-नियोजन—भारत के संसाधनों के वितरण की विविधता को देखते हुए इसके नियोजन की नितान्त आवश्यकता है। यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें निम्नलिखित सोपान पाए जाते हैं—

1. भारत के विविध राज्यों में पाए जाने वाले संसाधनों का सर्वेक्षण करवा कर उनकी सूची बनवाई जाए।

2. इसके लिए सर्वेक्षण करवा कर मानचित्र बनवाए जाएँ।

3. क्षेत्रीय संसाधनों का मात्रात्मक तथा गुणात्मक अनुमान लगवाया जाए।

4. संसाधनों के विकास और नियोजन के लिए उपयुक्त योजनाएँ बनायी जाएँ।

5. संसाधनों के विकास और समुचित नियोजन हेतु प्रौद्योगिकी तथा कौशल पूर्ण योजनाएँ बनाई जाएँ।

6. प्रत्येक क्षेत्र में नियोजन का संस्थागत ढाँचा तैयार करके उसे लागू किया जाए।

7. संसाधन विकास योजनाओं को राष्ट्रीय स्तर पर लागू किया जाए।

8. संसाधन विकास एवं नियोजन की योजनाओं को आर्थिक नियोजन से जोड़ा जाए।

9. संसाधन-नियोजन को ग्राम पंचायत, क्षेत्र, पंचायत, जिला पंचायत के साथ सोपान के रूप में लागू किया जाए जिससे सामूहिक भागीदारी विकसित हो सके।

2. मिट्टी अथवा मृदा सबसे महत्त्वपूर्ण नवीकरण-योग्य प्राकृतिक संसाधन है। मृदा एक जीवन्त तन्त्र है। कुछ सेण्टीमीटर मोटी परत बनने में लाखों वर्ष लग जाते हैं। यह पादपों के विकास का माध्यम है जो पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं की कई प्रजातियों का पोषण करती है। मिट्टी बनने की प्रक्रिया में उच्चावच, जनक शैल या संस्तर शैल, वनस्पति, जलवायु और अन्य जैव पदार्थ और समय को मुख्य कारक माना जाता है। प्रकृति के कई तत्वों; जैसे—तापमान परिवर्तन, बहते जल की क्रिया, पवन, हिमनदी और अपघटन क्रियाएँ इत्यादि मिट्टी बनने की प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभाती हैं। मिट्टी में होनेवाले रासायनिक और जैव परिवर्तन भी महत्त्वपूर्ण हैं। मृदा जैव (ह्यूमस) तथा अजैव दोनों तरह के पदार्थों से बनती है।

3. प्रयोग या उपयोग के आधार पर संसाधनों को निम्न दो वर्गों में बाँटा जाता है—

(क) क्षयी या अनव्यकरणीय संसाधन (Exhaustible or Non-renewable Resources)—ये वे संसाधन या स्रोत होते हैं जो प्रयोग करने से नष्ट या समाप्त हो जाते हैं और उनका नवीनीकरण, वृद्धि या विकास सम्भव नहीं होता; जैसे—कोयला, लोहा, गैस, पैट्रोलियम, आणविक ईंधन आदि।

(ख) अक्षयी या नव्यकरणीय (Inexhaustible or Renewable Resources)—ये वे स्रोत हैं जो एक बार प्रयोग से समाप्त या क्षय नहीं होते अथवा जिनका नवीनीकरण, विकास या वृद्धि होती रहती है; जैसे—पवन, बहता हुआ जल, सूर्यताप, वायु, वनस्पति, जीव-जन्तु आदि।

4. भूमि वह उपयोगी संसाधन है जिसका उपयोग प्राचीन काल से हमारे पूर्वज करते आए हैं और भविष्य में भावी पीढ़ी भी करती रहेगी। रोटी, कपड़ा और मकान जैसी आवश्यकताओं की 95 प्रतिशत पूर्ति भूमि से ही होती है। मानव भूमि का अधिकाधिक उपयोग करके तथा भूमि को

हानि पहुँचाकर उसका निम्नीकरण कर रहा है।

वर्तमान काल में, भारत में लगभग 13 करोड़ हेक्टेयर भूमि निम्नीकृत है, जिसमें से 28 प्रतिशत भूमि वनों के अन्तर्गत निम्नीकृत है तथा 56 प्रतिशत जल-अपरदित है। शेष भूभाग लवणीय और क्षारीय है। मानवीय क्रियाओं; जैसे—वनोन्मूलन, अति पशुचारण तथा खनन आदि ने भी भूमि का निम्नीकरण किया है।

खनन के बाद खदानों को खुला ही छोड़ दिया जाता है। खदानों के साथ ही गहरी खाइयाँ और मलवा भी भू-निम्नीकरण करते हैं। खनन के कारण ही झारखण्ड, ओडिशा, मध्य प्रदेश ओर छत्तीसगढ़ राज्यों का निम्नीकरण हुआ है। गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र राज्यों में अधिक पशुचारण से भूमि निम्नीकृत हुई है। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में खेतों को अधिक सींचने से जलाक्रान्ता भी भू-निम्नीकरण का कारण बना है।

खनिज प्रक्रियाएँ; जैसे—सीमेण्ट उद्योग के लिए चूना पत्थर पीसना, मिट्टी के बर्तन बनाने में चिकनी मिट्टी तथा खड़िया के प्रयोग से निकले धूल कण, वायु प्रदूषण उत्पन्न करते हैं। धूल के कणों की परत भूमि पर जमा होकर उसके जल सोखने की क्षमता को कम कर देती है। औद्योगिक जल निकास से बाहर आने वाले अपशिष्ट पदार्थ प्रदूषक बनकर भूमि और जल को प्रदूषित करते हैं।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

संसाधन किसी .... रहा है।

(क) परन्तु संसाधनों के विवेकहीन उपयोग और अति उपयोग के कारण कई सामाजिक व आर्थिक समस्याओं के साथ पर्यावरणीय समस्याएँ पैदा हो सकती हैं।

(ख) इन समस्याओं से बचाव के लिए भिन्न-भिन्न स्तरों पर संसाधनों का संरक्षण (Conversation) अनिवार्य है।

(ग) संसाधनों का संरक्षण बहुत-से सामाजिक कार्यकर्त्ताओं और पर्यावरणविदों के लिए चिन्ता का विषय रहा है।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्त्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

मिटटी अथवा .... माना जाता है।

(क) मिटटी अथवा मृदा सबसे महत्त्वपूर्ण नवीकरण योग्य प्राकृतिक संसाधन है।

(ख) यह पादपों के विकास का माध्यम है, जो पृथ्वी पर विभिन्न प्रकार के जीव-जन्तुओं की कई प्रजातियों का पोषण करती है।

(ग) मिट्टी बनने की प्रक्रिया में उच्चावच, जनक शैल या संस्तर शैल, वनस्पति, जलवायु और अन्य जैव पदार्थ और समय को मुख्य कारक माना जाता है।

2 वन एवं वन्य जीव संसाधन

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) 2. (घ) 3. (क) 4. (ग) 5. (ख) 6. (क)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि वन और वन्य जीवन का संरक्षण किस प्रकार किया गया है?**

उत्तर– दिए गए चित्र असम के काजीरंग नेशनल पार्क के हैं। यह क्रमश: गैंडे और एशियाई हिरन के संरक्षण के लिए बनाए गए हैं। इन नेशनल पार्क में एक बडा भू-भाग जीवों के लिए आरक्षित कर दिया गया है। शिकार से उनकी सुरक्षा के लिए यहाँ सरकार द्वारा निगरानी भी की जाती हैं।

कूट आधारित प्रश्न

- **स्लैश और बर्न खेती किसे कहा जाता है?**

उत्तर–(घ) केवल (iv)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **बक्सा टाईगर रिजर्व __________ राज्य में है?**

उत्तर–(क) पश्चिम बंगाल

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर–(क) (iii) (i) (iv) (ii)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **वनों से सम्बन्धित कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर–(ख) केवल (ii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

  (क) सत्य (ख) सत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. वनों और वन्य जीवन का विनाश केवल जीव विज्ञान का विषय ही नहीं है बल्कि इनका विनाश सांस्कृतिक विविधता के विनाश से भी जुड़ा हुआ है। जैव विनाश के कारण कई मूल जातियाँ और वनों पर आधारित समुदाय गरीब होते जा रहे हैं और आर्थिक रूप से हाशिये पर पहुँच गए हैं। यह समुदाय खाने, पीने, औषधि, संस्कृति, अध्यात्म इत्यादि के लिए वनों और वन्य जीवों पर आश्रित हैं। गरीब वर्ग में भी महिलाएँ पुरुषों की तुलना में अधिक प्रभावित हैं। कई समाजों में खाना, चारा, जल और अन्य दूसरी आवश्यक वस्तुओं को एकत्र करने की मुख्य जिम्मेदारी महिलाओं की ही होती है। जितनी संसाधनों की कमी होती जा रही है, महिलाओं पर कार्य बोझ. उतना ही बढ़ता जा रहा है और कई बार तो उनको संसाधन एकत्र करने के लिए 10 किमी से भी अधिक पैदल चलना पड़ता है, जिस कारण उन्हें खतरनाक स्वास्थ्य समस्याएँ झेलनी पड़ती हैं। काम का समय बढ़ने के कारण घर और बच्चों की उपेक्षा होती है, जिसके बहुत गम्भीर सामाजिक दुष्परिणाम हो सकते हैं।

2. वर्तमान संरक्षण परियोजनाएँ जैव विविधिताओं पर केन्द्रित होती हैं न कि इसके विभिन्न घटकों पर। संरक्षण के विभिन्न तरीकों की गहनता से खोज की जा रही है। संरक्षण नियोजन में कीटों को भी महत्त्व मिल रहा है। वन्य जीव अधिनियम 1980 और 1986 के अन्तर्गत सैकड़ों तितलियों, पतंगों, भृंगों और एक ड्रैगनफ्लाई (Dragonfly) को भी संरक्षित जातियों में सम्मिलित किया गया है। 1991 में पौधों की भी 6 जातियाँ पहली बार इस सूची में रखी गईं।

3. औद्योगीकरण (Industrialisation) और बड़ी–बड़ी विकास परियोजनाओं से वनों को बहुत नुकसान पहुँचा है। 1952 से नदी घाटी परियोजनाओं के कारण 5000 वर्ग किमी से अधिक वन क्षेत्रों को साफ करना पड़ा है, यह प्रक्रिया अभी भी चल रही है। मध्य प्रदेश में 4,00,000 हेक्टेयर से अधिक वन क्षेत्र नर्मदा सागर परियोजना के पूरा हो जाने से जलमग्न हो जाएगा। वनों की बर्बादी में खनन ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पश्चिम बंगाल में बक्सा टाईगर रिजर्व डोलोमाइट के खनन के कारण गम्भीर खतरे में हैं। इससे कई प्रजातियों के प्राकृतिक आवासों को हानि पहुँची है ओर कई जातियों, (जिनमें भारतीय हाथी भी सम्मिलित है) के आवागमन को बाधित किया है।

बहुत से वन अधिकारी और पर्यावरणविदों के अनुसार, वन संसाधनों की बर्बादी में पशुचारण और ईंधन हेतु लकड़ी कटाई महत्वपूर्ण कारण है। हालाँकि इसमें कुछ सच्चाई हो सकती है, परन्तु चारे और ईंधन के लिए लकड़ी की आवश्यकता पूर्ति मुख्य रूप से पेड़ों की टहनियाँ काटकर की जाती है न कि पूरे पेड़ काटकर। वन पारिस्थितिकी तन्त्र देश के मूल्यवान वन पदार्थों, खनिजों और अन्य संसाधनों के संचय कोष हैं, जो तेजी से विकसित होती औद्योगिक–शहरी अर्थव्यवस्था की माँग की पूर्ति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. (i) शिकार पर प्रतिबन्ध आवश्यक है, (ii) पशुओं के झुण्ड के प्रवेश पर रोक, (iii) अधिक संख्या में राष्ट्रीय उद्यान और वन्य-जीव अभयारण्य स्थापित किए जाएँ, (iv) वन्य-जीवों का प्रजनन वातावरण बनाया जाए, (v) सेमिनार, कार्यशाला आदि का आयोजन किया जाए, (vi) पर्याप्त स्वास्थ्य-सुविधाएँ दी जाएँ।

2. (i) नीलगिरि जैव आरक्षित क्षेत्र (तमिलनाडु), (ii) नन्दा देवी जैव आरक्षित क्षेत्र (उत्तराखण्ड), (iii) मेघालय में नोक्रेक, (iv) अण्डमान एवं निकोबार जैव आरक्षित क्षेत्र, (v) फूलों की घाटी (उत्तराखण्ड), (vi) मन्नार की खाड़ी (तमिलनाडु), (vii) थार मरुस्थल (राजस्थान), (viii) काजीरंगा और मानस (असम)।

3.

	पुनर्वनीकरण	वनीकरण
1.	इसमें उन क्षेत्रों में पुन: वन लगाए जाते हैं, जहाँ वनों को काट दिया गया है।	इसमें प्राकृतिक रूप से वृक्ष-विहीन क्षेत्रों में वृक्षारोपण के अभियान चलाए जाते हैं।
2.	काटे गए प्रत्येक वृक्ष के स्थान पर दो नए वृक्ष लगाए जाते हैं।	एक वृक्ष के लिए एक पौधा लगाया जाता है।
3.	ऐसा झूम प्रक्रिया के दुष्परिणाम से बचने के लिए किया जाता है।	ऐसा नए क्षेत्रों को वनों के अन्तर्गत लाने के लिए किया जाता है।

4. जीव मण्डलों में पाए जाने वाले जीवों की विभिन्न जातियों में पाई जाने वाली विविधता को जैव विविधता (Biodiversity) कहते हैं।

जैव विनाश के कारण कई मूल जातियाँ और वनों पर आधारित समुदाय गरीब होते जा रहे हैं और आर्थिक रूप से हाशिये पर पहुँच गए हैं। यह समुदाय खाने, पीने, औषधि, संस्कृति, अध्यात्म इत्यादि के लिए वनों और वन्य जीवों पर आश्रित हैं। गरीब वर्ग में भी महिलाएँ पुरुषों की तुलना में अधिक प्रभावित हैं। कई समाजों में खाना, चारा, जल और अन्य दूसरी आवश्यक वस्तुओं को एकत्र करने की मुख्य जिम्मेदारी महिलाओं की ही होती है। जितनी संसाधनों की कमी होती जा रही है, महिलाओं पर कार्य बोझ.उतना ही बढ़ता जा रहा है और कई बार तो उनको संसाधन एकत्र करने के लिए १० किमी से भी अधिक पैदल चलना पड़ता है, जिस कारण उन्हें खतरनाक स्वास्थ्य समस्याएँ झेलनी पड़ती हैं।

5. आरक्षित वन और संरक्षित वन में अन्तर

आरक्षित वन—ऐसे वन जिन्हें राज्य या केन्द्र सरकार द्वारा पूर्ण संरक्षण प्रदान किया जाता है, आरक्षित (reserve) वन कहलाते हैं। यहाँ पर लोगों के द्वारा कटाई और शिकार पर पूर्ण प्रतिबन्ध है। भारत में आधे से अधिक वन-क्षेत्र आरक्षित घोषित किए गए हैं तथा इन्हें सर्वाधिक मूल्यवान माना जाता है।

रक्षित वन—ऐसे वन जिन्हें नष्ट होने से बचाने के लिए इन्हें सुरक्षा प्रदान की जाती है, रक्षित (protected) वन कहलाते हैं। भारत में कुल वन्य-क्षेत्र का एक-तिहाई भाग रक्षित है।

6.

	वनस्पतिजात	प्राणिजात
1.	वनस्पतिजात में पौधे तथा वृक्ष सम्मिलित हैं।	प्राणिजात में पृथ्वी के समस्त जानकर तथा जीव-जन्तु सम्मिलित हैं।
2.	वनस्पति सबसे पहले अस्तित्व में आई।	वनस्पतिजात के बाद प्राणिजात अस्तित्व में आया।
3.	वनस्पति ही केवल सूर्य से प्राप्त ऊर्जा को भोजन में बदल सकती है।	प्राणिजात और ऊर्जा को भोजन में नहीं बदल सकता है। यह समग्रत: वनस्पतिजात पर निर्भर रहता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में अधिकांश वन और वन्य जीवन या तो प्रत्यक्ष रूप में सरकार के अधीन हैं या वन-विभाग तथा अन्य प्राधिकरणों द्वारा प्रबन्धन का कार्य किया जाता है। इन्हें निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया गया है—

(i) **आरक्षित वन**—ऐसे वन जिन्हें राज्य या केन्द्र सरकार द्वारा पूर्ण संरक्षण प्रदान किया जाता है, आरक्षित (reserve) वन कहलाते हैं। यहाँ पर लोगों द्वारा कटाई और शिकार पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा हुआ है। भारत में आधे से अधिक वन-क्षेत्र आरक्षित घोषित किए गए हैं तथा इन्हें सर्वाधिक मूल्यवान माना जाता है।

(ii) **रक्षित वन**—ऐसे वन जिन्हें नष्ट होने से बचाने के लिए इन्हें सुरक्षा प्रदान की जाती है, रक्षित (protected) वन कहलाते हैं। भारत में कुल वन्य-क्षेत्र का एक-तिहाई भाग रक्षित है।

(iii) **अवर्गीकृत वन**—अन्य सभी वन (जो न आरक्षित हैं और न रक्षित) और बंजर भूमि जो सरकार, व्यक्तियों और समुदायों के स्वामित्व में होते हैं, उन्हें अवर्गीकृत (unclassified) वन कहते हैं।

आरक्षित तथा रक्षित वन उन स्थायी वन क्षेत्रों को कहा जाता है जिनका रख-रखाव इमारती लकड़ी, अन्य वनोपजों तथा उनके संरक्षण के लिए किया जाता है। मध्य प्रदेश में स्थाई वनों के अन्तर्गत सबसे अधिक क्षेत्र हैं जोकि प्रदेश के कुल वन-क्षेत्र का 75 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त आन्ध्र प्रदेश, उत्तराखण्ड, केरल, मध्य प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और महाराष्ट्र में आरक्षित वन हैं जबकि हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, बिहार, ओडिशा, राजस्थान में सिर्फ रक्षित वन और पूर्वोत्तर राज्यों एवं गुजरात में अवर्गीकृत वन हैं।

2. भारत में उच्चावच की भिन्नता, तापमान वितरण में अन्तर, वर्षा की मात्रा में अन्तर तथा मृदाओं की विविधता विविध प्रकार की प्राकृतिक वनस्पति को जन्म देने में सक्षम हैं। भारत में मुख्य रूप से निम्न प्रकार के वन उगते हैं—

(i) **उष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन**—'उष्ण कटिबंधीय सदाहरित वन' सदैव अपनी हरियाली और छाया बिखराने वाले वृक्षों के वन हैं। ऊँचे तापमान और अधिक वर्षा के कारण इन वनों के वृक्षों में पतझड़ की कोई निश्चित अवधि नहीं होती। 200 सेमी से

अधिक वर्षा वाली उष्णार्द्र जलवायु वृक्षों को लम्बा और हरा-भरा बनाए रखती है। उष्ण कटिबंधीय सदाहरित वनों में वृक्ष सघन, कठोर लकड़ी वाले तथा 60 मीटर तक ऊँचे होते हैं। सूर्य का प्रकाश पाने की होड़ में वृक्षों का ऊपरी भाग छतरीनुमा हो जाता है। इन वनों में **महोगनी, रबड़, सिनकोना, रोजवुड, आबनूस के वृक्ष तथा बेंत उगते हैं।** भारत में इस प्रकार के वनों का विस्तार **केरल, महाराष्ट्र, कर्नाटक, पश्चिमी, घाट, अण्डमान व निकोबार द्वीप समूह, पश्चिमी बंगाल और असम** में पाया जाता है। ये वन सघन तथा कठोर लकड़ी वाले होने के कारण आर्थिक दृष्टि से कम उपयोगी होते हैं।

(ii) **उष्ण कटिबंधीय पर्णतापी वन**—उष्ण कटिबंध में जहाँ वर्षा 100 सेमी से 200 सेमी तक होती है, कम ऊँचे, मुलायम लकड़ी वाले तथा निश्चित ऋतु में पत्तियाँ गिराने वाले वृक्ष उगते हैं। इन वनों के वृक्ष ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ में वाष्पीकरण से बचने के लिए अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं। इसीलिए इन्हें 'पर्णपाती' वन कहा जाता है। इन वनों में **साल, सागौन, चीड़, हल्दू, सेमल, हैवर, नीम, शीशम** तथा **चन्दन** आदि उपयोगी तथा मुलायम लकड़ियों के वृक्ष उगते हैं। भारत में उष्ण कटिबंधीय पर्णपाती वन लगभग 224 लाख हेक्टेयर क्षेत्र पर **पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, ओडिशा** तथा **महाराष्ट्र** राज्यों में उगे हुए हैं। इन वनों के वृक्षों से फर्नीचर के लिए उपयोगी, मुलायम और टिकाऊ लकड़ी के अलावा बहुतायत में वन्य उत्पाद भी मिलते हैं।

(iii) **शुष्क मरुस्थलीय काँटेदार झाड़ी वाले वन**—50 सेमी तक वर्षा पाने वाले तथा उष्ण जलवायु वाले भागों में शुष्क मरुस्थलीय वन उगते हैं। इन वृक्षों की जड़ें लम्बी, आकार छोटा तथा तना और पत्तियाँ काँटेदार होती हैं। कहीं-कहीं तो वृक्ष मात्र काँटेदार झाड़ियाँ ही रह जाते हैं। उष्ण मरुस्थलीय काँटेदार वनों में **खजूर, बबूल, रामबाँस, नागफनी, खजेड़ा** आदि के वृक्ष ही उगते हैं। इनमें खजूर तथा बबूल ही उपयोगी होते हैं। भारत में इस प्रकार के वन 52 लाख हेक्टयर क्षेत्र पर **राजस्थान, गुजरात, पंजाब, हरियाणा तथा उत्तर प्रदेश के दक्षिण पश्चिमी क्षेत्रों** में उगते हैं। आर्थिक दृष्टि से इन वनों का महत्व बहुत कम है।

(iv) **डेल्टाई वन**—नदियाँ सागर में गिरने से पूर्व जो उपजाऊ काँप मिट्टी का डेल्टा बनाती हैं, वहाँ **मेनग्रोव के डेल्टाई वन** उगते हैं। इन क्षेत्रों में ज्वार के खारे जल के भराव के कारण क्षारीय छाल और कठोर लकड़ी वाले वृक्ष उगते हैं। इन वृक्षों की क्षारीय छाल का उपयोग चमड़ा पकाने में तथा कठोर लकड़ी का उपयोग नाव बनाने में किया जाता है। डेल्टाई वनों में सदा जल भरा रहता है, अत: इनमें आने-जाने के लिए नावें प्रयुक्त की जाती हैं। इन वनों में **नारियल, ताड़, गोरेन, फोनिक्स** तथा सुन्दरी के वृक्ष अधिक उगते हैं। गंगा डेल्टा में सुन्दरी वृक्ष की अधिकता होने के कारण इसे सुन्दरी वन डेल्टा कहा जाता है। भारत में इस प्रकार के वन **गंगा, ब्रह्मपुत्र, महानदी, गोदावरी** तथा **कृष्णा** नदियों के डेल्टाओं में बहुतायत से पाए जाते हैं।

(v) **पर्वतीय वन**—हिमालय पर्वत पर प्रकृति ने जलवायु तथा मिट्टी की प्रकृति में परिवर्तन आने के फलस्वरूप वनस्पति में विविधता उत्पन्न की है। हिमालय पर्वत पर 1,500 से 2,500 मीटर की ऊँचाई तक शीतोष्ण कटिबन्धीय चौड़ी पत्ती वाले तथा 2,500 मीटर से 4,500 मीटर की ऊँचाई तक कोणधारी वृक्ष उगते हैं। 4,500 मीटर से ऊपर स्थायी हिम-रेखा होने के कारण वनस्पति का अभाव ही पाया जाता है। हिमालय के कम ऊँचे मैदानी ढाल हरी-हरी मखमली घास से ढके हुए हैं। परिवहन के साधनों के अभाव में पर्वतीय वनों का शोषण कम हो पाता है।

3. भारत की भौगोलिक परिस्थितियों और विविधता के कारण यहाँ वानस्पतिक और जेव विविधता पाई जाती है। यहाँ 47,000 उपजातियों के वृक्ष पाए जाते हैं। वानस्पतिक उपजातियों में 15,000 उपजातियाँ भारतीय मूल की हैं। भारत जैव विविधता के क्षेत्र में विशव का सबसे संपन्न देश है। यहाँ विशव की 8% जैव प्रजातियाँ पाई जाती है।

4. जहाँ वृक्ष हैं, वहीं वन्य जीवन विकसित होता है। प्राकृतिक वनस्पति तथा वन्य प्रजातियाँ प्राकृतिक और सांस्कृतिक पर्यावरण के अभिन्न अंग हैं। **वन यदि हरा सोना है तो उनमें विचरण करने वाले वन्य जीव खरा सोना हैं।** वन और पशु भारतीय धर्म और दर्शन में प्रकृति-पूजा के अंग रहे हैं। **पवित्र पेड़ों के झुरमुट में देवताओं का निवास माना जाता है, भारत में पीपल तथा तुलसी की पूजा इसी भाव से बँधी हुई है।** छोटा नागपुर क्षेत्र के लोग महुआ और कदम्ब के पेड़ों की जबकि बिहार, झारखण्ड और ओडिशा प्रदेशों के लोग आम के पेड़ की पूजा करते हैं।

भारत की प्राकृतिक वनस्पति—वनस्पति सभी प्रकार के पेड़-पौधों, झाड़ियों, लताओं और हरी घासों को समुच्चय है। पृथ्वी का जैव मण्डल वनस्पतियों और जीवधारियों से सम्पन्न है। प्रकृति इस धरा पर हरा सोना स्वत: उगाती है। उन्हीं में वन्य जीवों की पीढ़ियाँ पनपती हैं। धरातल पर स्वत: उगने तथा विकसित होने वाले पेड़-पौधे प्राकृतिक वनस्पति कहलाते हैं। प्राकृतिक वनस्पति उगाने में मानव का कोई योगदान नहीं होता। वृक्ष स्वत: उगते, बढ़ते और नष्ट होते रहते हैं। प्राकृतिक वनस्पति का पर्यायवाची शब्द होता है वन। वन प्राकृतिक वनस्पति का विशद समुदाय होते हैं जिनमें वन्य जन्तु निर्भय विचरण करते हैं। वृक्ष नवीकरणीय प्राकृतिक संसाधन हैं अर्थात् इनका उपयोग करने के बाद इन्हें पुन: उगाया जा सकता है। वनों से भारतीय ऋषियों और मुनियों का युगों से साथ रहा है। उनके आश्रम वृक्षों के झुरमुटों के बीच ही स्थापित होते थे। वन भारतीय सभ्यता, संस्कृति और चिन्तन के साथी रहे हैं। वनों में वृक्षों, पौधों, झाड़ियों और बेलों की कोई सीमा नहीं होती। वन इतने घने होते हैं कि वन्य-जीव इनमें आराम से छिप जाते हैं। प्राकृतिक वनस्पति वृक्षों की विविधता और वन्य पशुओं की विविधता से सम्पन्न होती है।

5. **वन्य प्राणियों की प्रलुप्त होती प्रजातियाँ**—भारतीय वन्य प्राणियों की कई प्रजातियाँ पर विलुप्त होने का भय उत्पन्न हो गया है। **चीता, गुलाबी सिर वाली बतख, पहाड़ी कोयल, गिद्ध,चील, चित्तीदार उल्लू** आदि प्रजातियाँ प्रलुप्त होने के कगार पर पहुँच गई हैं। भारत में

79% स्तनधारियों की प्रजातियाँ, सरीसृपों की 15 प्रजातियाँ, जल-थल चरों की 3 प्रजातियाँ लुप्तप्राय हो चुकी हैं। भारत में **जंगली गधा, हिरण,गैंडा, शेर, पूँछवाला बंदर** आदि संकटग्रस्त प्रजातियाँ हैं। भारत में नीली भेड़, एशियाई हाथी, डॉल्फिन आदि की प्रजातियाँ निरंतर घट रही हैं। **निकोबारी कबूतर, अण्डमानी जंगली सुअर तथा अरुणाचल प्रदेश का मिथुन** दुर्लभ प्रजातियाँ बन चुकी हैं। एशियाई चीता, गुलाबी सिर वाली बत्तख आदि प्रजातियाँ विलुप्त हो चुकी हैं।

वन्य जीव संरक्षण—वन्य प्राणियों का जीवन वनों पर आश्रित है, वन बचेंगे तभी तो वन्य प्राणी बचेंगे। वनों और वन्य प्राणियों के ह्रास ने समूचे विश्व को इस समस्या के उचित निराकरण के लिए गम्भीरता से सोचने पर विवश कर दिया है। गहन मन्थन और मनन के बाद इस समस्या का उपाय निकाला गया है—वन्य प्राणी संरक्षण। **वन्य प्राणी संरक्षण** का अर्थ होता है वन्य प्राणियों की सुरक्षा के साथ-साथ उनके सम्वर्द्धन के उपाय करना। वन्य पशुओं की विविधता को बनाए रखने के वैज्ञानिक उपाय का ही नाम है—वन्य जैव संरक्षण।

6. **(क) राष्ट्रीय उद्यान**—राष्ट्रीय उद्यान एक से अधिक पारितन्त्रों का वह विशाल क्षेत्र होता है जिसमें वृक्षों और वन्य जीवों को प्राकृतिक रूप से विकसित होने के लिए उचित संरक्षण की व्यवस्था की जाती है।

(ख) वन्य जीव अभयारण्य—राष्ट्रीय उद्यानों की भाँति वन्य जीव अभ्यारण्य भी वन्य जीवों की सुरक्षा के लिए स्थापित किए गए हैं। इनकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य जीव-जंतुओं एवं सूक्ष्म जीवों की जैव-विविधता को अक्षुण्ण रखते हुए पर्यावरण सम्बन्धी अनुसन्धान को बढ़ावा देना है।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

वृक्ष मानव .... सक्षम हैं।

(क) वृक्ष मानव के प्राचीन सहायक, पालक और उपयोगिता के भण्डार रहे हैं।

(ख) आदिमानव ने सबसे पहले खुले आकाश तले वृक्षों की छाया में ही आँखें खोली थीं। रात्रि में वृक्षों की शाखाओं पर शयन, दिन में उनके फलों का आहार आदिमानव के पोषण के आधार थे।

(ग) वन धरती माँ का हरित श्रृंगार और वन्य जीवों का शरण स्थल हैं।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

वनों और .... प्रभावित हैं।

(क) वनों और वन्य जीवन का विनाश केवल जीव विज्ञान का विषय ही नहीं है बल्कि इनका विनाश सांस्कृतिक विविधता के विनाश से भी जुड़ा हुआ है।

(ख) जैव विनाश के कारण कई मूल जातियाँ और वनों पर आधारित समुदाय गरीब होते जा रहे हैं और आर्थिक रूप से हाशिये पर पहुँच गए हैं।

(ग) यह समुदाय खाने, पीने, औषधि, संस्कृति, अध्यात्म इत्यादि के लिए वनों और वन्य जीवों पर आश्रित हैं। गरीब वर्ग में भी महिलाएँ पुरुषों की तुलना में अधिक प्रभावित हैं।

3 जल-संसाधन

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (घ) 5. (घ) 6. (ग)
7. (घ) 8. (ख) 9. (क) 10. (ख) 11. (ख) 12. (ग)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि वर्षा जल संसाधन के क्या लाभ हैं? नगरों में वर्षा जल संचयन क्यों नहीं जाता? नगरों में वर्षा जल का संचयन किस प्रकार किया जाता है।**

उत्तर– वर्षा जल संचयन से पृथ्वी का भूगर्भीय जल बढ़ता है। इसलिए वर्षा जल संचयन बहुत लाभदायक है।

कूट आधारित प्रश्न

- **जल दुर्लभता का मुख्य कारण क्या है?**

उत्तर–(ख) केवल (iii)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से टाँका ____________ है?**

उत्तर–(ग) भूमिगत टैंक

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर–(ख) (iii) (i) (iv) (iii)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **जल से सम्बन्धित कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (ख) केवल (ii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

  (क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. विगत कुछ वर्षों में बहुउद्देशीय परियोजनाएँ और बड़े बाँध कई कारणों से परिनिरीक्षण और विरोध के विषय बन गए हैं। नदियों पर बाँध बनाने और उनका बहाव नियन्त्रित करने से उनका प्राकृतिक बहाव अवरूद्ध होता है, जिसके कारण तलछट का बहाव कम हो जाता है और अधिक तलछट जलाशय की तली पर जमा होता रहता है, जिससे नदी का तल अधिक चट्टानी हो जाता है और नदी जलीय जीव-आवासों में भोजन की कमी आ जाती है। बाँध नदियों को टुकड़ों में बाँट देते हैं, जिससे विशेषत: अण्डे देने की ऋतु में जलीय जीवों का नदियों में स्थानान्तरण अवरूद्ध हो जाता है। बाढ़ के मैदान में बनाए जाने वाले जलाशयों द्वारा वहाँ उपस्थित वनस्पति और मिट्टियाँ जल में डूब जाती हैं, जो कालान्तर में अपघटित हो जाती हैं।

2. **भारत में जलाभाव के कारण**—भारत में जलाभाव के लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी हैं—

1. भारत में जलसंसाधनों के वितरण के भारी विषमताएँ हैं। कम जल वाले क्षेत्र जलाभाव की समस्या से ग्रस्त हैं।

2. भारत की बढ़ती जनसंख्या के कारण जलीय स्रोतों का अधिक शोषण होने से जलाभाव की समस्या उत्पन्न हो गई है।

3. बिजली बनाने, सिंचाई करने तथा उद्योगों में जलराशि का उत्तरोत्तर अधिक उपयोग होने से जलाभाव की समस्या संकट बन गई है।

4. भारत में प्रत्येक व्यक्ति को प्रति दिन १००० घन मीटर से कम जल मिल पाता है, अत: यहाँ जलाभाव की समस्या विकट हो गई है।

5. भारत में फसलों को उगाने के लिए अधिक सिंचाई में जल व्यय करने के कारण जलाभाव उत्पन्न हो गया है।

6. भारत में बढ़ता औद्योगीकरण तथा नगरीकरण (ळींर्हैंगदह) जल के उपयोग में भारी वृद्धि करके जलाभाव की समस्या के लिए उत्तरदायी है।

7. भारत में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने तेजी से पैर पसारकर जल विद्युत तथा जल की खपत करके जलाभाव की समस्या उत्पन्न कर दी है।

3. भारत की जनसंख्या लगभग १४० करोड़ है। जिसमें पानी का अत्यधिक दोहन होता है। भारत एक कृषि प्रधान देश है। देश के बड़े भूभाग पर खेती की जाती है। इससे पानी का अत्यधिक उपभोग होता है।

भारत में जल संसाधनों के वितरण में भारी विषमताएँ हैं। कम जल वाले व गरीब क्षेत्र जलाभाव की समस्या से ग्रसित है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. कुछ सामाजिक आंदोलनों द्वारा बहुउद्देशीय परियोजनाओं का विरोध इसलिए किया जा रहा है—

(क) बाँध बनने से बड़ी संख्या में लोग विस्थापित हो जाते हैं।

(ख) बाँध के आसपास की भूमि में अत्यधिक जल-रिसाव होने से जल-जमाव और जलमग्नता की स्थिति बन जाती है।

(ग) बाँध की दीवार में हल्की-सी दरार पड़ने पर आस-पास का बहुत बड़ा इलाका जलमग्न हो जाता है जिससे जन और धन की अपार क्षति होती है।

2. बाँध (dam) बहते जल को रोकने, दिशा देने या बहाव कम करने के लिए खड़ी की गई बाधा है, जो सामान्यत: जलाशय, झील अथवा जलभरण बनाती है। बाँध का अर्थ जलाशय से लिया जाता है न कि इसके ढाँचे से। अधिकतर बाँधों में ढलवाँ हिस्सा होता है, जिसके ऊपर से या अन्दर से जल रुक-रुककर या लगातार बहता है। बाँधों का वर्गीकरण उनकी संरचना और उद्देश्य या ऊँचाई के अनुसार होता है। संरचना और उनमें प्रयुक्त पदार्थों के अनुसार बाँधों को लकड़ी के बाँध, तटबन्ध बाँध या पक्का बाँध के अलावा कई उपवर्गों में बाँटा जा सकता है। ऊँचाई के अनुसार, बाँधों को बड़े बाँध और मुख्य बाँध या नीचे बाँध, मध्यम बाँधों और उच्च बाँधों में वर्गीकृत किया जा सकता है।

3. नर्मदा बचाओ आन्दोलन एक गैर सरकारी संगठन (एन०जी०ओ०) है, जो जनजातीय लोगों, किसानों, पर्यावरणविदों और मानवाधिकार कार्यकताओं को गुजरात में नर्मदा नदी पर सरकार सरोवर बाँध के विरोध में लामबंद करता है। मूल रूप से प्रारम्भ में यहाँ आन्दोलन जंगलों में बाँध के पानी में डूबने जैसे पर्यावरणीय मुद्दों पर केन्द्रित था। हाल ही में इस आन्दोलन का लक्ष्य बाँध से विस्थापित गरीब लोगों को सरकार से सम्पूर्ण पुनर्वास सुविधाएँ दिलाना हो गया है।

4. **सूखे पड़े कुओं का पुनः उद्धार करना**—गाँवों में हैण्डपम्प लगाने से प्राचीनकालीन पेयजल के स्रोत स्वयं सूख गए हैं। गाँवों में इन कुओं को पुन: चालू किया जाए जिससे इनमें जल राशि एकत्र होने से जल संचयन बढ़ेगा। उसका परिणाम भूमिगत जल के स्तर को ऊँचा होने के रूप में देखने को मिलेगा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वर्षा-जल को उपयोग हेतु इकटठ्ठा करना 'वर्षा जल संग्रह' कहलाता है।

भूगर्भीय जल का सीमित तथा विवेकपूर्ण उपयोग करके उसका सम्वर्धन किया जा सकता है। हमें दैनिक कार्यों, सिंचाई तथा औद्योगिक कार्यों के लिए भूगर्भीय जल का उपयोग सावधानी से, सीमित मात्रा में ही करना चाहिए।

नगरीय क्षेत्रों में वर्षा का जल सर्वाधिक नष्ट होता है। नगरों में घर, सड़कें, गलियाँ तथा

अधिकांश क्षेत्र पक्के बना दिए जाते हैं, अत: भूमि वर्षा-जल को सोख नहीं पाती। लगभग 98% वर्षा-जल व्यर्थ बह जाता है। शहर के नालों के माध्यम से यह नदियों में पहुँचकर आपदा बन जाता है। अत: नगरों में वर्षा-संचयन की व्यवस्था को लागू करना उपयोगी ही नहीं, अनिवार्य भी है। नगरीय क्षेत्रों में वर्षा-जल संचयन के लिए निम्नलिखित उपाय काम में लाए जा सकते हैं—

1. रेनवाटर हार्वेस्टिंग प्रणाली लगाना—वर्षा के जल को व्यर्थ में बहने से रोककर उसका संचयन कर, उसे उपयोगी बनाने की सर्वाधिक उत्तम विधि है 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग'। **भारत सरकार ने 2002 में, नई राष्ट्रीय जल नीति की घोषणा कर जल-संसाधनों का समन्वित विकास करना, जल-प्रबन्धन की व्यवस्था करना और जल का संरक्षण करना इसका लक्ष्य बना दिया है।** इस प्रणाली द्वारा वर्षा-जल का संरक्षण करना प्रमुख लक्ष्य बनाया गया। नगरों में बहुमंजिले पक्के भवनों की छतों पर वर्षा-जल को एकत्र करके पाइपों द्वारा नीचे आँगन या पार्क में बने पक्के टैंक तक पहुँचा कर उसे संरक्षित करने की प्रणाली विकसित की गई है। टैंक में एकत्र जल को रिचार्ज करके, स्वच्छ बनाकर उपयोग में लाया जाता है। यह जल एक परिवार के दैनिक उपयोग की आवश्यकता को वर्ष-भर पूरी करता है। **रेनवाटर हार्वेस्टिंग प्रणाली जल-संसाधनों के संरक्षण एवं उपयोग की एक श्रेष्ठ प्रणाली है।**

ग्रामीण क्षेत्रों में वर्षा-जल का संचयन—भारत गाँवों में बसता है और गाँवों के जीवन का केन्द्र बिन्दु होता है—जल। गाँवों में पेय जल के साथ-साथ पशुओं को पानी पिलाने-नहलाने तथा सिंचाई के लिए अतिरिक्त जल की आवश्यकता होती है। गाँवों में जलाभाव की समस्या विकट हो गई है। अत: ग्रामीण अंचल में वर्षा का संचयन आवश्यक हो गया है। इस कार्य को निम्नलिखित कार्यों से पूरा किया जा सकता है—

1. तालाबों की समुचित व्यवस्था—गाँवों में वर्षा-जल को व्यर्थ बहने से रोककर संचित करने के लिए तालाबों की समुचित व्यवस्था करना आवश्यक है। नष्ट हुए तालाबों को पुन: ठीक किया जाए। उनके चारों ओर पक्के तटबन्ध बनाए जाएँ। जल-उपयोग के लिए उचित मार्गों या सीढ़ियों की व्यवस्था की जाए। यह तालाब वर्षा-जल के कारण गाँवों में होने वाले कीचड़ तथा जल-भराव से बचाकर सालभर पशुओं के लिए मकान बनाने के लिए तथा सिंचाई करने के लिए जलराशि उपलब्ध कराएगा। तालाब में एकत्रित जल गाँवों के कुओं के जल स्तर को भी ऊँचा रखेगा।

2. सूखे पड़े कुओं का पुन: उद्धार करना—गाँवों में हैण्ड पम्प लगाने से प्राचीनकालीन पेय जल के स्रोत स्वयं सूख गए हैं। गाँवों में इन कुओं को पुन: चालू किया जाए, जिससे इनमें जल-राशि एकत्र होने से जल-संचयन बढ़ेगा। उसका परिणाम भूमिगत जल के स्तर को ऊँचा होने के रूप में देखने को मिलेगा।

3. जल-कुण्डों की व्यवस्था—गाँवों के बीच खाली भूमि पर पक्के तथा ढके जल कुण्ड बनाए जाएँ जिनमें वर्षा-जल को एकत्र करने की व्यवस्था हो सके। इन जल-कुण्डों का पानी सालभर जलापूर्ति करेगा।ग्रामीण अचंल में वर्षा जल के संचयन की समुचित व्यवस्था करके ग्रामीणों को जलाभाव तथा जलभराव की समस्या से छुटकारा दिलाया जा सकता है।

2. औद्योगिक तथा घरेलू अपशिष्टों, रसायनों, कीटनाशकों और कृषि कार्यों में प्रयुक्त उर्वरकों के कारण जल प्रदूषित हो रहा है औश्र यह जल मनुष्य के उपयोग के लिए खतरनाक है।

भारत की नदियाँ विशेषकर छोटी नदियाँ जहरीली धाराओं में परिर्वितत हो चुकी हैं और अधिकतर बड़ी नदियाँ, जैसे— गंगा और यमुना भी प्रदूषित हो चुकी हैं। अधिक जनसंख्या, कृषि आधुनिकीकरण, नगरीकरण और औद्योगीकरण का दुष्प्रभाव भारत की नदियों पर व्यापक हुआ है और यह प्रत्येक दिन गहराता जा रहा है....इस वजह से सम्पूर्ण मानव-जीवन संकट में है।

वर्तमान समय की माँग है कि हम अपने जल-संसाधनों का संरक्षण और प्रबन्धन करें। इसके संरक्षण से स्वास्थ्य पर आने वाले खतरों से बचा जा सकता है। खाद्यान्न-सुरक्षा के साथ आजीविका और उत्पादन क्रियाओं की निरन्तरता को बनाए रखा जा सकता है। इससे प्राकृतिक पारितन्त्रों (ecosystems) को निम्नीकृत होने से बचाया जा सकता है।

3. जल इस धरा पर वनस्पतियों एवं जीवधारियों का जीवनदाता है, उसके बिना समूची धरा वनस्पति व जीव रहित, रूखी और वीरान होगी। जीवन में उपयोगिता को निम्नलिखित तथ्यों से समझा जा सकता है—

1. जल जीवनदायी है, इसी से धरा पर वन-वनस्पतियों के अंकुर फूटते हैं तथा जीवों की धड़कन सुनाई पड़ती है।

2. धरा से यदि जल स्रोत को हटा दिया जाए तो इस धरा से हरियाली और जीवधारी भी हट जाएँगे।

3. जल के बिना हमारे दैनिक क्रिया-कलाप जैसे—शौच जाना, स्नान करना, वस्त्र धोना, घर की सफाई करना और भोजन पकाना आदि ठप्प पड़ जाएँगे।

4. जल के बिना समस्त सफाई-कार्य निरर्थक बन जाएँगे और पृथ्वी गन्दगी और रोगों का घर बन जाएगी।

5. जल के अभाव में सिंचाई और जल-विद्युत निर्माण की कल्पना भी करना बेमानी होगा।

6. जल के कारण ही सभी औद्योगिक क्रियाएँ तथा उत्पादन के कार्य सम्पन्न होते हैं। जलाभाव से उनका उत्पादन रुक जाएगा।

7. जल के अभाव में धार्मिक पर्व, जल-स्नान, पूजा-पाठ तथा अर्चनाएँ रुक जाएँगी।

8. जल के अभाव में सूखा आपदा प्राकृतिक विनाश बनाकर टूट पड़ेगी।

9. जल के बिना जलीय पौधों और वनस्पतियों का उगना और बढ़ना सम्भव नहीं होगा।

10. जलराशि में ही जलीय जल-जन्तु विकसित होते हैं। जल नहीं तो जल-जन्तु भी नहीं होंगे।

जल मानव के लिए प्रकृति द्वारा दिया गया अतुल्य उपहार है। जल की एक-एक बूँद में जीवन भरा है। अत: जल की एक बूँद भी नष्ट करना घोर पाप है। जल की उपयोगिता खाड़ी देशों के लोगों से पूछिए, जहाँ सागर के खारे जल को शुद्ध करके पेयजल बनाया जाता है। उनकी कमाई का 50% केवल जलापूर्ति पर ही खर्च हो जाता है। इसीलिए **वर्षा-जल का संचयन एवं भूगर्भीय जल का सम्वर्धन करना हम सभी का पावन कर्त्तव्य बन जाता है।** वर्षा जल के संचयन में अपनी सहभागिता निभाइए तथा भूगर्भीय जल का सीमित और सदुपयोग

कीजिए। सरकार की ओर मत निहारिये, धरती के सपूत बनकर उसे उजाड़ने में नहीं, संवारने में अपना अमूल्य योगदान दीजिए। **वर्षा-जल का संचयन करके, भूगर्भीय जल का सम्वर्धन करके तथा जल-प्रबन्धन की आधुनिक तकनीक अपनाकर ही धरती के जल-स्त्रोतों को बचाया जा सकता है।**

4. ऐसी नदी घाटी योजनाएँ जिनसे एक ही समय में बहुत सी इच्छाएँ पूरी की जा सकती हैं, बहु-उद्देशीय परियोजनाएँ (Multipurpose Projects) कहलाती हैं। इन योजनाओं से प्राप्त होने वाले लाभ इतने अधिक हैं कि इन्हें ''आधुनिक भारत के तीर्थ'' कहा जा सकता है। बाँधों का इतिहास काफी पुराना है। पुरातत्त्व वैज्ञानिक और ऐतिहासिक अभिलेख/दस्तावेज बताते हैं कि हमने प्राचीनकाल से सिंचाई के लिए पत्थरों और मलबे से बाँध, जलाशय अथवा झीलों के तटबन्ध और नहरों जैसी उत्कृष्ट जलीय कृतियाँ बनाई हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हमने इस परम्परा को आधुनिक भारत में भी बनाए रखा है और अधिकतर नदियों के बेसिनों में बाँध बनाए हैं।

परम्परागत बाँध नदियों और वर्षा-जल को एकत्र करने के पश्चात् उसे खेतों की सिंचाई के लिए उपलब्ध करवाते थे। वर्तमान समय में बाँध केवल सिंचाई के लिए ही नहीं बनाए जाते, बल्कि उनका उद्देश्य विद्युत-उत्पादन, घरेलू और औद्योगिक उपयोग, जल-आपूर्ति, बाढ़-नियन्त्रण, मनोरंजन, आन्तरिक नौचालन और मछली-पालन भी है। इसलिए बाँधों को बहु-उद्देशीय परियोजनाएँ भी कहा जाता है, जहाँ एकत्र हुए जल के अनेकों उपयोग समन्वित होते हैं। उदाहरण के लिए, सतलुज-ब्यास बेसिन में भाखड़ा-नांगल परियोजना जल-विद्युत उत्पादन और सिंचाई दोनों कार्यों में सहायक है। इसी प्रकार, महानदी बेसिन में हीराकुण्ड परियोजना जल-संरक्षण और बाढ़-नियन्त्रण का समन्वय है।

स्वतन्त्रता के पश्चात् शुरू की गई समन्वित जल-संसाधन प्रबन्धन उपागम पर आधारित बहु-उद्देशीय परियोजनाओं को औपनिवेशिक काल में बनी समस्याओं को पार करते हुए देश को विकास और समृद्धि के मार्ग पर ले जाने वाले वाहन के रूप में देखा गया। जवाहरलाल नेहरू गर्व से बाँधों को 'आधुनिक भारत के मन्दिर' कहा करते थे। उनका मानना था कि इन परियोजनाओं के चलते कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था, औद्योगीकरण और नगरीय अर्थव्यवस्था समन्वित रूप से विकास करेगी।

यह एक विडम्बना ही है कि जो बाँध बाढ़-नियन्त्रण के लिए बनाए जाते हैं, उनके जलाशयों में तलछट जमा होने से वे ही बाढ़ आने का कारण बन जाते हैं। अधिक वर्षा होने की स्थिति में तो बड़े बाँध भी कई बार बाढ़-नियन्त्रण में विफल रहते हैं। हमने देखा है कि वर्ष 2006 में महाराष्ट्र और गुजरात में भारी वर्षा के दौरान बाँधों से छोड़े गए जल के कारण बाढ़ की स्थिति और भी गम्भीर हो गई थी। इन बाढ़ों से जान और माल की हानि के साथ-साथ बड़े पैमाने पर मृदा-अपरदन भी हुआ। बाँध के जलाशय पर तलछट जमा होने का अर्थ यह भी है कि यह तलछट जो कि प्राकृतिक उर्वरक है, बाढ़ के मैदानों तक नहीं पहुँचती, जिसके कारण भूमि निम्नीकरण की समस्याएँ बढ़ती हैं। यह भी माना जाता है कि बहुउद्देशीय परियोजनाओं के कारण भूकम्प आने की सम्भावना भी बढ़ जाती है। साथ ही इससे हजारों एकड़ भूमि बेकार हो जाती है। इस क्षेत्र में रहने वाले लोगों को बेघर होना पड़ता है और अत्यधिक जल

के भराव से जल-जनित बीमारियाँ, फसलों में कीटाणु-जनित बीमारियाँ और प्रदूषण आदि फैलते हैं।

5. जल संभर विकास से तात्पर्य, मुख्य रूप से, धरातलीय और भौम जल के दक्ष प्रबन्धन व विकास से है। इसके अन्तर्गत बहते जल को रोकना और विभिन्न विधियों, जैसे—अन्त:स्रवण तालाब, पुनर्भरण, कुओं आदि के द्वारा भौम जल का संचयन और पुनर्भरण शामिल है।

गाँव तालाबों के कारण जगह-जगह जल भराव और कीचड़ की समस्या से बचे रहते थे।

तालाबों का एकत्र जल रिस-रिस कर भूगर्भीय जल स्तर को सन्तुलित बनाए रखता है।

तालाबों से भूस्तरीय जल सम्वर्धन तथा भूराभीय जल सम्वर्धन का भरपूर लाभ मिलता है।

नगरीय क्षेत्रों में वर्षा का जल सर्वाधिक नष्ट होता है। नगरों में घर, सड़कें, गलियाँ तथा अधिकांश क्षेत्र पक्के बना दिए जाते हैं, अत: भूमि वर्षा-जल को सोख नहीं पाती। लगभग 98% वर्षा-जल व्यर्थ बह जाता है। शहर के नालों के माध्यम से यह नदियों में पहुँचकर आपदा बन जाता है। अत: नगरों में वर्षा-संचयन की व्यवस्था को लागू करना उपयोगी ही नहीं, अनिवार्य भी है। नगरीय क्षेत्रों में वर्षा-जल संचयन के लिए निम्नलिखित उपाय काम में लाए जा सकते हैं—

1. **रेनवाटर हार्वेस्टिंग प्रणाली लगाना**—वर्षा के जल को व्यर्थ में बहने से रोककर उसका संचयन कर, उसे उपयोगी बनाने की सर्वाधिक उत्तम विधि है 'रेन वाटर हार्वेस्टिंग'। **भारत सरकार ने 2002 में नई राष्ट्रीय जल नीति की घोषणा कर जल संसाधनों का समन्वित विकास करना, जल प्रबन्धन की व्यवस्था करना और जल का संरक्षण करना इसका लक्ष्य बना दिया है।** इस प्रणाली द्वारा वर्षा-जल का संरक्षण करना प्रमुख लक्ष्य बनाया गया। नगरों में बहुमंजिले पक्के भवनों की छतों पर वर्षा-जल को एकत्र करके पाइपों द्वारा नीचे आँगन या पार्क में बने पक्के टैंक तक पहुँचा कर उसे संरक्षित करने की प्रणाली विकसित की गई है। टैंक में एकत्र जल को रिचार्ज करके, स्वच्छ बनाकर उपयोग में लाया जाता है। यह जल एक परिवार के दैनिक उपयोग की आवश्यकता को वर्ष भर पूरी करता है। **रेनवाअर हार्वेस्टिंग प्रणाली जल संसाधनों के संरक्षण एवं उपयोग की एक श्रेष्ठ प्रणाली है।**
2. **छतों पर पक्की टंकियाँ स्थापित करना**—नगरों और कस्बों में बहुमंजिले पक्के भवनों की छतों पर पक्की टंकियाँ स्थापित कर उनमें वर्षा जल एकत्रकर पाइप लाइनों द्वारा खुले में बने पक्के टैंक तक पहुँचाया जाता है, जहाँ वह एकत्र रहेगा। इस एकत्रित जल को पुन: स्वच्छ बनाकर सालभर विविध उपयोगों में लाया जा सकता है।
3. **सड़कों के किनारों पर गहरे कुएँ बनाना**—नगरों में वर्षा जल संचयन की यह सुन्दर व्यवस्था की जानी चाहिए। वर्षा के इस जल को संरक्षित करने के लिए सड़कों के दोनों किनारों पर खाली स्थानों पर गहरे और पक्के कुएँ बनाए जाएँ। ये कुएँ ऊपर से ढके होंगे। इनमें वर्षा का जल पाइप द्वारा पहुँचाया जाए। यह जल पार्कों की सिंचाई करने तथा भवन आदि बनाने में सालभर प्रयोग किया जा सकता है। यह जल भूस्तरीय जल के स्तर को भी ऊँचा बनाए रख सकता है। इस प्रकार यह उपाय वर्षा के जल से होने वाली

जलभराव की असुविधा तथा कीचड़ से मुक्ति दिलाने के साथ-साथ जल का संचित भण्डार भी उपलब्ध कराएगा।

4. **नगरों के बाहरी क्षेत्रों में जलकुण्ड बनाना**—नगरों के बाह्य क्षेत्रों में गहरे कुण्ड बनाकर उनकी दीवारें पक्की करके वर्षा का व्यर्थ जल एकत्र करने की व्यवस्था कर देनी चाहिए। यह जल पशुओं को पानी पिलाने, कपड़े धोने तथा सिंचाई करने में प्रयुक्त हो सकता है। इन कुण्डों का जल भूमिगत जल के स्तर को भी ऊँचा बनाए रखेगा।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

जल की .... खतरनाक है।

(क) यह दुर्लभता जल की निम्न गुणवत्ता के कारण सम्भव है।

(ख) यह चिन्ताजनक है कि विगत वर्षों में जल की प्रचुर उपलब्धता के बावजूद यह उपयोग के लिए उपयुक्त नहीं है।

(ग) औद्योगिक तथा घरेलू अपशिष्टों, रसायनों, कीटनाशकों और कृषि कार्यों में प्रयुक्त उर्वरकों के कारण जल प्रदूषित हो रहा है जो मनुष्य के उपयोग के लिए खतरनाक है।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

नगरीय क्षेत्रों .... अनिवार्य भी है।

(क) नगरीय क्षेत्रों में वर्षा का जल सर्वाधिक नष्ट होता है। नगरों में घर, सड़कें, गलियाँ तथा अधिकांश क्षेत्र पक्के बना दिए जाते हैं, अतः भूमि वर्षा जल को सोख नहीं पाती।

(ख) लगभग 98% वर्षा जल व्यर्थ बह जाता है।

(ग) शहर के नालों के माध्यम से यह नदियों में पहुँचकर आपदा बन जाता है।

4 कृषि

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (घ) 2. (ख) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग) 6. (घ)
7. (ग) 8. (घ) 9. (ग) 10. (क)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिए गए चित्र को देखकर उसके विषय में विस्तृत जानकारी दीजिए इसकी कृषि कहाँ व किस प्रकार की जाती है?**

उत्तर–किताब से लें

कूट आधारित प्रश्न

- **सरकार निम्नलिखित में से कौन-सी घोषणा फसलों को सहायता देने के लिए करती है?**

उत्तर–केवल (iii)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **भारत में ____________ के पौधे का एक महत्वपूर्ण स्थान है।**

उत्तर–(ग) कपास

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर–(ग) (iii) (i) (ii) (iv)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **कृषि से सम्बन्धित कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर–(क) केवल (i)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर–(क) सत्य (ख) असत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. निर्वाह खेती से कृषि भूमि पर दबाव का मुख्य कारण यह है कि किसान अपनी और अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करनेके लिए छोटे खेतों पर खेती करते हैं, जिससे भूमि का अधिक उपयोग होता है और उस पर दबाव पड़ता है।
   भूमिगहन, निर्वाह खेती एक कृषि भूमि पर भारी दबाव क्यों हैं?
2. दालों को चक्रीय फसल के रूप में उगाने के कई फायदे हें। दालें मिट्टी की उर्वरता को बढ़ाती हैं, खरपतवारों को नियंत्रित करती हैं और कीटों की संख्या को कम करती हैं।
3. भारत में कृषि कार्य हजारों वर्षों से अस्तित्व में है। प्रौद्योगिकी तथा संस्थागत संरचना के अभाव में लम्बे समय से परम्परागत रूप में भूमि संसाधन के प्रयोग से कृषि का विकास अवरूद्ध हो गया है तथा वृद्धि की दर मन्द पड़ गई है। सिंचाई साधनों के विस्तार के बाद भी देश का बड़ा भू–भाग अभी भी सिंचाई के लिए मानसून की वर्षा पर निर्भर है।
   देश के 70% लोगों की प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष आजीविका से सम्बद्ध होने के कारण कृषि के क्षेत्र में तकनीकी तथा संस्थानगत सुधार की अपेक्षा है। स्वतन्त्रता के बाद कृषि क्षेत्र में संस्थागत सुधार लाने के लिए चकबन्दी, सहकारी कृषि तथा जमींदारी उन्मूलन जैसी प्रक्रियाओं को लागू किया गया है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत जैसे देश में खाद्यान्नों के मामले में आत्मनिर्भरता पाने का मुद्दा बड़ा पेचीदा रहा है। इसको सावधानी से हल करने की आवश्यकता है। इसमें कोई सन्देह नहीं कि विश्व के देशों में खाद्यान्नों के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता एवं खाद्यान्न-सुरक्षा का मुद्दा अहम रहा है और भविष्य में भी रहेगा क्योंकि खाद्यान्न मानव-जाति की जीवनरक्षक आवश्यकता है। विकासशील देशों की अधिसंख्यक जनसंख्या आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है जबकि विकसित देशों में द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में सर्वाधिक रोजगार के अवसर हैं। विकासशील देशों में अकुशल और निरक्षर लोगों की संख्या अधिक रहने तथा सड़क, बिजली, नई प्रौद्योगिकी, बैंक आदि की सुविधाएँ नगण्य रहने के कारण यहाँ कृषि के क्षेत्र में वैकल्पिक रोजगार के अवसरों का सृजन करना असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है।

2. व्यापारिक कृषि और बागान कृषि में अन्तर

	व्यापारिक कृषि	बागान कृषि
1.	फसलें व्यापार की दृष्टि से बोई जाती हैं।	केवल एक प्रकार की फसल वैज्ञानिक और व्यापारिक स्तर पर या कारखाने में किए जाने वाले विनिर्माण की तर्ज पर उगाई जाती है।
2.	अधिक उपज लेने के लिए वैज्ञानिक विधि और तकनीक का प्रयोग किया जाता है।	बड़े क्षेत्र पर बड़ी मात्रा में पूँजी लगाकर आधुनिक ढंग से कृषि की जाती है। सस्ता श्रम, परिवहन सुविधा, संयुक्त प्रणाली तथा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं।
3.	चावल, गेहूँ, ज्वार, बाजरा, मसाले, कपास, जूट आदि प्रमुख फसलें हैं।	रबर, चाय, कहवा, कोक, गन्ना आदि प्रमुख फसलें हैं।

3. खरीफ फसलें रबी फसलें

	खरीफ फसलें	रबी फसलें
1.	ये फसलें मानसून के आगमन के साथ बोई जाती हैं।	ये मानसून की समाप्ति पर बोई जाती हैं।
2.	जून या जुलाई में बीज बोया जाता है।	बीज अक्टूबर या नवम्बर में बोये जाते हैं।
3.	फसलें सितम्बर या अक्टूबर में काटी जाती हैं।	फसलें अप्रैल-मई में काट ली जाती हैं।
4.	फसलें मानसून पर निर्भर करती हैं।	फसलें मृदा की आर्द्रता पर निर्भर करती हैं।
5.	चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का, जूट, कपास, मूँगफली आदि खरीफ की फसलें हैं।	गेहूँ, चना, सरसों आदि रबी की फसलें हैं।

4. शुष्क भूमि कृषि और आर्द्र भूमि कृषि में अन्तर

	शुष्क कृषि	आर्द्र कृषि
1.	शुष्क कृषि वह कृषि है जिसमें विशेष प्रकार की फसलें, जिनमें आर्द्रता बनी रहती है, उगाई जाती हैं।	यह कृषि वर्षा पर निर्भर करती है।
2.	चना, ज्वार, बाजरा आदि पैदा किया जाता है।	इस प्रकार की कृषि में चावल, जूट तथा सरसों उत्पन्न की जाती है।
3.	यह कृषि सिंचाई पर निर्भर है।	सिंचाई की कोई आवश्यकता नहीं होती।
4.	यह कृषि शुष्क भागों में की जाती है।	इस प्रकार की कृषि भारत के उत्तरी-पूर्वी भागों में की जाती है।

5. भारत में मुख्य रूप से कपास, जूट, सन और प्राकृतिक रेशम—ये चार मुख्य रेशेदार फसलें उगाई जाती हैं। इनमें से कपास, जूट और सन फसल मिट्टी में उगाई जाती है और प्राकृतिक रेशम कीड़े के कोकून से प्राप्त होता है, जो मलबरी पेड़ की हरी पत्तियों पर पाला जाता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. जिन अनाजों में पोषक तत्त्वों की मात्रा अधिक होती है, उन्हें मोटे अनाज (Millets) कहा जाता है।

(i) बाजरा—बलुआ और उथली काली मिट्टी में बाजरा उगाया जाता है। राजस्थान बाजरे का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। इसके अलावा उत्तर प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र ओर हरियाणा में भी बाजरा उगाया जाता है।

(ii) मक्का—इसकी फसल के लिए 21° सेल्सियस से 27° सेल्सियस तापमान, हल्की वर्षा तथा जलोढ़ मिट्टी की आवश्यकता होती है। कर्नाटक, बिहार, उत्तर प्रदेश, आन्ध्र प्रदेश, तेलंगाना आदि मक्का उगाने वाले राज्य हैं।

(iii) ज्वार—यह फसल वर्षा पर निर्भर होती है। अधिकतर आर्द्र क्षेत्रों में उगाए जाने के कारण इसके लिए सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। महाराष्ट्र राज्य इस फसल का सबसे बड़ा उत्पादक है। मध्य प्रदेश, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश इसके अन्य मुख्य उत्पादक राज्य हैं।

(iv) रागी—यह शुष्क प्रदेशों में उगाई जाने वाली फसल है। यह लाल, काली, बलुआ, दोमट और उथली काली मिट्टी पर अच्छी तरह उगाई जाती है। कर्नाटक रागी का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है। उत्तराखण्ड, सिक्किम, झारखण्ड, तमिलनाडु तथा हिमाचल प्रदेश में भी यह एक महत्त्वपूर्ण फसल है।

2. भारत में प्रचलित विभिन्न प्रकार की कृषि पद्धतियों के नाम लिखित हैं—

1. प्रारम्भिक जीविका निर्वाह कृषि, 2. गहन जीविका कृषि, 3. वाणिज्यिक कृषि।

प्रारम्भिक जीविका निर्वाह कृषि की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं—

(i) सर्वप्रथम वनों के किसी भाग को काटकर या जलाकर साफ कर लिया जाता है तथा यहाँ खेती की जाती है। कालांतर में, जब इस मिट्टी की उर्वरा शक्ति समाप्त हो जाती है तो इस भूमि

को परती छोड़कर नए स्थान पर वनों को साफ कर कृषि की जाती है तथा कुछ वर्षों बाद इस क्षेत्र को भी छोड़ दिया जाता है। तब अन्य नए स्थान पर कृषि की जाने लगती है।

(ii) इस प्रकार की कृषि में मोटे अनाज (मक्का, ज्वार, बाजरा, जिमीकंद एवं रतालू) उत्पन्न किए जाते हैं।

(iii) इसके अन्तर्गत कृषि खाद्यान्न का उत्पादन कम किया जाता है।

(iv) इस कृषि पद्धति में यन्त्रों एवं उपकरणों की आवश्यकता नहीं पड़ती, केवल परम्परागत छोटे-छोटे उपकरण ही काम में लाए जाते हैं।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

भारत में .... जाता है।

(क) भारत में 1960 में हरित क्रान्ति आरम्भ हुई थी। जिससे पारम्परिक बीजों का प्रयोग किया गया था।

(ख) भारतीय किसान अच्छी पैदावार प्राप्त करने के लिए अपने खेतों में अपने जानवरों के गोबर से बनी खाद या कम्पोस्ट खाद का प्रयोग करते हैं।

(ग) भारतीय अर्थव्यवस्था का मूल आधार ही कृषि है। हमारे देश के खाद्यान्नों के अलावा चाय, कॉफी, सूखे मेवा, मसाले आदि भी उगाए जाते हैं जिनका विदेशों को निर्यात किया जाता है।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

विश्व में .... सकती हैं।

(क) तुर, अरहर, मूँग, मसूर, उड़द, मटर और चना भारत की मुख्य दलहनी फसलें हैं।

(ख) कुछ दालें खरीफ (जैसे—उड़द, अरहर, मूँग इत्यादि) और कुछ दालें रबी (जैसे—चना, मटर इत्यादि) की फसलें होती हैं।

(ग) दालों को ज्यादा नमी की आवश्यकता नहीं होती है। ये शुष्क परिस्थितियों में भी उगाई जा सकती हैं।

5 खनिज तथा ऊर्जा संसाधन

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (घ)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि कोयला ऊर्जा का कौन-सा स्त्रोत है? तथा इसे खदानों के अन्दर से किस प्रकार प्राप्त किया जाता है?**

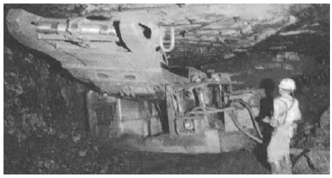

उत्तर– कोयला—भारत में कोयला बहुतायत में पाया जाने वाला जीवाश्म ईंधन है। यह देश की ऊर्जा एवं आवश्यकताओं की पूर्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसका उपयोग ऊर्जा उत्पादन तथा उद्योगों और घरेलू आवश्यकताओं के लिए ऊर्जा की आपूर्ति के लिए किया जाता है। भारत अपनी वाणिज्यिक ऊर्जा आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु मुख्यत: कोयले पर निर्भर है।

कोयले का निर्माण पादप पदार्थों के लाखों वर्षों तक सम्पीड़न से होता है, इसीलिए सम्पीड़न की मात्रा गहराई और दबने के समय के आधार पर कोयला अनेक रूपों में पाया जाता है। दलदलों में क्षय होते पादपों से पीट (Peat) उत्पन्न होता है,जिसमें कम कार्बन, नीम की उच्च मात्रा व निम्न ताप क्षमता होती है। लिग्नाइट (Lignite) एक निम्न कोटि का भूरा कोयला होता है। यह मुलायम होने के साथ-साथ ज्यादा नमीयुक्त होता है। लिग्नाइट के प्रमुख भण्डार तमिलनाडु के नैवेली में मिलते हैं और विद्युत उत्पादन में प्रयोग किए जाते हैं।

कूट आधारित प्रश्न

- **कौन-सा खनिज वर्तमान शताब्दी का ईंधन माना जाता है?**

उत्तर–(घ) केवल (iv)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से मैंगनीज का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य ____________ है?**

उत्तर–(ग) मध्य प्रदेश

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर–(घ) (iv) (iii) (i) (ii)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **खनिजों से सम्बन्धित कौन-सा कथन सही नहीं हैं?**

उत्तर– (क) (i) और (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर–(क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. बायोगैस (Biogas) ग्रामीण भारत के लिए ऊर्जा का सस्ता और सक्षम स्रोत बन सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि अपशिष्टों, पशुओं व मानवजनित अपशिष्टों से बायोगैस उत्पन्न की जा सकती है। इन जैविक पदार्थों के अपघटन से गैस उत्पन्न होती है। बायोगैस की तापीय क्षमता उपलों एवं मिट्टी के तेल से अधिक होती है। बायोगैस संयन्त्र सरकार की सहायता से या निजी स्तर पर लगाए जा सकते हैं। पशुओं के गोबर का प्रयोग करने वाले संयन्त्र ग्रामीण भारत में गोबर गैस प्लाण्ट के नाम से जाने जाते हैं। ये किसानों को दो तरह से लाभान्वित करते हैं—एक ऊर्जा के रूप में और दूसरा उन्नत प्रकार के उर्वरक के रूप में।
2. ''बचाई गई ऊर्जा उत्पादित ऊर्जा है।'' यह कथन ऊर्जा संरक्षण के महतव को बताता है। इसका अर्थ है कि यदि हम ऊर्जा की खपत को कम करते हैं,तो हमें उतनी ही ऊर्जा कम उत्पादन करनी होगी। यह न केवल संसाधनों के संरक्षण में मदद करता है, बल्कि पर्यावरणीय प्रभाव को भी कम करता है।
3. खनन, पृथ्वी से खनिजों को निकालने की प्रक्रिया है। यह पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए कई गंभीर दुष्प्रभाव पैदा करता है। इनमें मिट्टी का कटाव, जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण, जैव विविधता का नुकसान, और मानव स्वास्थ्य पर नकारात्मक प्रभाव शामिल हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. ऊर्जा के नए खोजे गए तथा विकसित किए गए स्रोतों को ऊर्जा के गैर परंपरागत स्रोत कहा जाता है। भारत के ग्रामीण तथा सुदूर क्षेत्रों में सौर ऊर्जा तेजी से लोकप्रिय हो रही है। कुछ बड़े सौर ऊर्जा संयन्त्र देश के कई भागों में स्थापित किए जा रहे हैं। भारत का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा केन्द्र, राजस्थान में माधोपुर के पास भुज में स्थित है, जहाँ सौर ऊर्जा से दूध के बड़े बर्तनों को कीटाणुयुक्त किया जाता है। ऐसी अपेक्षा की जाती है कि सौर ऊर्जा के प्रयोग से ग्रामीण घरों में उपलों तथा लकड़ी पर निर्भरता को कम किया जा सकेंगा तथा यह पर्यावरण–संरक्षण में भी सहयोग प्रदान करेगा।
2. परम्परागत ऊर्जा के साधनों में लकड़ी, उपले, कोयला, पेट्रोलियम, प्राकृतिक गैस तथा विद्युत (दोनों बल विद्युत व ताप विद्युत) सम्मिलित हैं अर्थात् ऊर्जा के वे साधन जिनका पूर्ण उपयोग किया जा सकता है या जिनको एक बार उपयोग में लेने के बाद पुन: प्रयोग में नहीं लाया जा सकता है, परम्परागत ऊर्जा के स्रोत कहलाते हैं।

   विश्व में भारत को 'पवन महाशक्ति' (Wind super power) के रूप में जाना जाता है। भारत में पवन ऊर्जा फार्म की विशालतम पेटी तमिलनाडु में नागरकोइल से मदुरई तक अवस्थित है। इसके अतिरिक्त केरल, गुजरात, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र तथा लक्षद्वीप में भी महत्त्वपूर्ण पवन ऊर्जा संयंत्र स्थित हैं। नागरकोइल तथा जैसलमेर (राजस्थान) पवन ऊर्जा के प्रभावी प्रयोग के लिए प्रसिद्ध हैं।

3. धात्विक और अधात्विक खनिजों में अंतर

	धात्विक खनिज	अधात्विक खनिज
1.	इनको पिघलाकर नए धातु प्राप्त किए जा सकते हैं।	इनको पिघलाने पर नई धातु नहीं मिलती।
2.	ये कठोर होते हैं और इनमें अपनी चमक होती है।	ये अधिक कठोर नहीं होते। इनमें अपनी चमक नहीं होती।
3.	ये लचीले और तार खींचने लायक होते हैं।	इनके तार नहीं खींचे जा सकते तथा ये लचीले नहीं होते।
4.	ये आग्नेय चट्टानों से सम्बन्धित होते हैं।	इनका सम्बन्ध रूपान्तरित चट्टानों से होता है।
5.	ये टूटते नहीं हैं।	इनको चोट मारकर तोड़ सकते हैं।
6.	**उदाहरण**—ताँबा, लोहा, टिन, चाँदी, सोना आदि।	**उदाहरण**—सल्फर, कोयला, अभ्रक, नमक आदि।

4. भू-तापीय ऊर्जा—पृथ्वी के आन्तरिक भागों से ताप का प्रयोग करके उत्पन्न की जाने वाली विद्युत भू-तापीय ऊर्जा (Geo-thermal energy) कहलाती है। भू-तापीय ऊर्जा इसलिए अस्तित्व में होती है, क्योंकि बढ़ती गहराई के साथ-साथ पृथ्वी प्रगामी ढंग से तप्त होती जाती है। जहाँ भी भू-तापीय प्रवणता ज्यादा होती है, वहाँ उथली गहराइयों पर भी तापमान अधिक ही होता है। ऐसे क्षेत्रों में भूमिगत जल, च—ानों से ऊष्मा का अवशोषण करके गर्म हो जाता है। यह पानी इतना अधिक गर्म हो जाता है कि पृथ्वी की सतह की तरह उठकर भाप में परिवर्तित हो जाता है। इसी भाप का प्रयोग टरबाइन को चलाने और विद्युत उत्पन्न करने के लिए किया जाता है। भारत में सैकड़ों गर्म पानी के फव्वारे (Springs) हैं, जिनका प्रयोग विद्युत उत्पादन में किया जा सकता है। भू-तपीय ऊर्जा के दोहन के लिए भारत में दो प्रायोगिक परियोजनाएँ हिमाचल प्रदेश में मणिकरण के पास पार्वती घाटी में तथा दूसरी लद्दाख में पूगा घाटी में शुरू की गई हैं।

5. हमारे देश में ताँबे का सर्वाधिक उपयोग बिजली के तार, बिजली की मशीनें तथा छड़ें बनाने में किया जाता है। इसके अतिरिक्त, मोटरों व इंजिनों के हिस्से, घड़ियाँ, ताले, रेडियो व बल्ब बनाने में भी इसका उपयोग होता है। ताँबे की कुल मात्रा का लगभग 50% भाग बिजली के यन्त्रों, 15% तारों तथा शेष 35% अन्य धातुओं के साथ मिलाने व यन्त्र-निर्माण में किया जाता है।

ताँबे को निकिल में मिलाकर जर्मन सिल्वर, टिन में मिलाकर काँसा तथा जस्ते में मिलाकर पीतल जैसी धातुओं का निर्माण किया जाता है।

भारत में ताँबा उत्पादक क्षेत्र—1. झारखण्ड, 2. आन्ध्र प्रदेश, 3. खेतड़ी ताँबा परियोजना (राजस्थान)।

6. स्थिति—भारत में लौह अयस्क झारखण्ड, छत्तीसगढ़, आन्ध्र प्रदेश, गोआ, उड़ीसा, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और राजस्थान में पाया जाता है।

भारत में विश्व के 20% भण्डार पाए जाते हैं। अधिकतर खानें छत्तीसगढ़ (दुर्ग और दाँतेवारा), झारखण्ड (पश्चिमी और पूर्वी सिंहभूम), उड़ीसा (सुन्दरगढ़, क्योंझर और मयूरभंज), गोआ (इस राज्य का उत्तरी भाग) तथा कर्नाटक (चिकमंगलूर और बेल्लारी) में पाई जाती हैं।

निर्यात—भारत का आधा लौह अयस्क निर्यात कर दिया जाता है क्योंकि यहाँ अधिक लौह अयस्क शुद्ध करने की व्यवस्था नहीं है। इस्पात संयंत्र के लिए अधिक निवेश की जरूरत होती है, जबकि भारत के पास पूँजी की कमी है।

7. मैंगनीज मुख्य रूप से इस्पात के विनिर्माण में प्रयोग किया जाता है। एक टन इस्पात बनाने में लगभग 10 किग्रा मैंगनीज की आवश्यकता होती है। यदि इसे इस्पात में मिलाया जाए, तो इस्पात जंग नहीं खाता है। इसका उपयोग ब्लीचिंग पाउडर, कीटनाशक दवाएँ व पेण्ट बनाने में किया जाता है।

भारत में उड़ीसा मैंगनीज का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है।

8. ऊर्जा आर्थिक विकास का एक आधारभूत संसाधन है। इसकी आवश्यकता कृषि, उद्योग, परिवहन, संचार तथा घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु सदैव बनी रहती है। अत: प्रत्येक राष्ट्र ऊर्जा संसाधनों के विकास के लिए निवेश करता है।

ऊर्जा संसाधनों के संरक्षण के लिए हमें निम्नलिखित उपाय अपनाने होंगे—

1. सभी लोगों को निजी यातायात के स्थान पर सार्वजनिक यातायात का उपयोग करना चाहिए।
2. खनिज तेल, प्राकृतिक गैस ओर बिजली का प्रयोग सावधानीपूर्वक तथा किफायती रूप से करना चाहिए।
3. घर के पंखे, एसी तथा बल्ब बेकार खुले नहीं छोड़ने चाहिएँ।
4. कारखानों में तेल तथा बिजली की बचत करने वाले उपकरणों का प्रयोग करना चाहिए।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'आग्नेय' शब्द का अर्थ 'अग्नि' से होता है। भूगोलवेत्ताओं का विचार है कि प्रारंभ में संपूर्ण पृथ्वी आग का तपता हुआ गोला थी। यह धीरे-धीरे ठंडी होकर द्रव अवस्था में परिणत हुई है। द्रव अवस्था से ठोस तथा इस ठोस अवस्था से अधिकांशत: आग्नेय चट्टानें बनी हैं।

आग्नेय चट्टानों की विशेषताएँ—

(i) इन चट्टानों का निर्माण ज्वालामुखी से निकले गर्म एवं तप्त मैग्मा द्वारा होता है।

(ii) ये अत्यंत कठोर होते हैं और इनमें जल प्रवेश नहीं कर सकता। जल का इन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, परंतु ये विखण्डन के कारण टूट जाती है।

(iii) इन चट्टानों के रवे बड़े महीन होते हैं। इन रवों का कोई आकार तथा क्रम नहीं होता।

(iv) इन चट्टानों का स्वरूप कभी गोलाकार स्थिति में नहीं मिलता है।

(v) ये चट्टानें सघन होती हैं। इनमें परतों का अस्तित्व देखने को भी नहीं मिलता, परंतु ज्वालामुखी उद्गार के क्रमश: होते रहने से परतों की भ्रांति हो सकती है। इन चट्टानों के वर्गाकार जोड़ों पर ही ऋतु-अपक्षय का प्रभाव पड़ता है।

2. भारत में लौह अयस्क के प्रकार—भारत में निम्नलिखित चार प्रकार का खनिज लोहा मिलता है—

1. मैग्नेटाइट—इसमें धातु का अंश 72% होता है।

2. हैमेटाइट—इसमें धातु का अंश 60% से 70% तक पाया जाता है।

3. लिमोनाइट—इसमें धातु का अंश 20% से 40% तक पाया जाता है।

4. लैटेराइट—इसमें धातु का अंश 20% तक होता है।

भारत में लोहे का क्षेत्र—देश के प्रमुख लोहा उत्पादक राज्य निम्न प्रकार हैं—

ओडिशा-झारखण्ड पेटी—ओडिशा में उच्च कोटि का हेमेटाइट किस्म का लौह अयस्क मयूरभन्ज व केन्दूझर जिलों में बादाम पहाड़ खदानों से प्राप्त होता है। इसी से सन्निद्ध झारखण्ड के सिंहभूम जिले में गुआ तथा नोआमुण्डी से हेमेटाइट अयस्क निकाला जाता है।

महाराष्ट्र-गोवा पेटी—यह पेटी गोवा तथा महाराष्ट्र राज्य के रत्नागिरी जिले में स्थित है। यद्यपि यहाँ का लोहा उत्तम प्रकार का नहीं है तथापि इसका दक्षता से दोहन किया जाता है। इसका निर्यात मरमागाओ पत्तन से किया जाता है।

दुर्ग-बस्तर-चन्द्रपुर पेटी—यह पेटी महाराष्ट्र व छत्तीसगढ़ राज्यों के अन्तर्गत पाई जाती है। छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में बेलाडिला पहाड़ी श्रृंखलाओं में उच्च कोटि का हेमेटाइट पाया जाता है। इस गुणवत्ता के लोहे में १४ जमाव मिलते है। इसमें इस्पात बनाने में आवश्यक सर्वश्रेष्ठ भौतिक गुण विद्यमान हैं। इन खदानों का लौह अयस्क विशाखापट्टनम् पत्तन से जापान तथा दक्षिण कोरिया को निर्यात किया जाता है।

बल्लागिर-चित्रदुर्ग, चिक्कमंगलूरु-तुमकूरु पेटी—कर्नाटक की इस पेटी में लौह अयस्क की विपुल राशि संचित है। कर्नाटक में पश्चिमी घाट में अवस्थित कुद्रेमुख की खानें शत्-प्रतिशत निर्यात इकाई हैं। कुद्रेमुख निक्षेप दुनिया के सबसे बड़े निक्षेपों में से एक माने जाते हैं। लौह अयस्क कर्दम (ेत्ल्बि) रूप में पाइपलाइन द्वारा मंगलूरु के निकट एक पत्तन पर भेजा जाता है।

3. भारत में ऊर्जा के महत्वपूर्ण साधन—

परमाणु अथवा आण्विक ऊर्जा—यह ऊर्जा अणुओं की संरचना को परिवर्तित करने से प्राप्त की जाती है। इस परिवर्तन में ऊष्मा के रूप में काफी ऊर्जा विमुक्त होती है, जिसका उपयोग विद्युत ऊर्जा उत्पादन में किया जाता है। भारत में परमाणु ऊर्जा हेतु प्रयुक्त होने वाले यूरेनियम व थोरियम झारखण्ड व राजस्थान की अरावली पर्वत श्रृंखलाओं में पाए जाते हैं। इनका प्रयोग परमाणु अथवा आण्विक ऊर्जा उत्पादन में किया जाता है। केरल में पाए जाने वाले मोनाजाइट रेत कणों में भी थोरियम की मात्रा पाई जाती है।

सौर ऊर्जा—सौर ऊर्जा (Solar energy) को विश्व के भविष्य की ऊर्जा कहा जाता है। यदि तकनीक के विकास के वाणिज्यिक स्तर पर सौर ऊर्जा का उत्पादन होने लगे तो भारत में ऊर्जा का अभाव नहीं होगा। उष्ण कटिबन्धीय होने के कारण भारत में सौर ऊर्जा के दोहन की सम्भावना अत्यधिक है। फोटोवोल्टाइक तकनीक से धूप से सीधे विद्युत तैयार की जा सकती है। भारत के ग्रामीण तथा सुदूर क्षेत्रों में सौर ऊर्जा तेजी से लोकप्रिय हो रही है। कुछ बड़े सौर

ऊर्जा संयन्त्र देश के कई भागों में स्थापित किए जा रहे हैं। भारत का सबसे बड़ा सौर ऊर्जा केन्द्र, राजस्थान में माधोपुर के पास भुज में स्थित है, जहाँ सौर ऊर्जा से दूध के बड़े बर्तनों को कीटाणुयुक्त किया जाता है। ऐसी अपेक्षा की जाती है कि सौर ऊर्जा के प्रयोग से ग्रामीण घरों में उपलों तथा लकड़ी पर निर्भरता को कम किया जा सकेंगा तथा यह पर्यावरण-संरक्षण में भी सहयोग प्रदान करेगा।

पवन ऊर्जा—विश्व में भारत को 'पवन महाशक्ति' (Wind super power) के रूप में जाना जाता है। भारत में पवन ऊर्जा फार्म की विशालतम पेटी तमिलनाडु में नागरकोइल से मदुरई तक अवस्थित है। इसके अतिरिक्त केरल, गुजरात, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र तथा लक्षद्वीप में भी महत्त्वपूर्ण पवन ऊर्जा संयंत्र स्थित हैं। नागरकोइल तथा जैसलमेर (राजस्थान) पवन ऊर्जा के प्रभावी प्रयोग के लिए प्रसिद्ध हैं।

बायोगैस—बायोगैस (Biogas) ग्रामीण भारत के लिए ऊर्जा का सस्ता और सक्षम स्रोत बन सकती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि अपशिष्टों, पशुओं व मानवजनित अपशिष्टों से बायोगैस उत्पन्न की जा सकती हे। इन जैविक पदार्थों के अपघटन से गैस उत्पन्न होती है। बायोगैस की तापीय क्षमता उपलों एवं मि—ी के तेल से अधिक होती है। बायोगैस संयंत्र सरकार की सहायता से या निजी स्तर पर लगाए जा सकते हैं। पशुओं के गोबर का प्रयोग करने वाले संयंत्र ग्रामीण भारत में गोबर गैस प्लाण्ट के नाम से लगाए गए हैं। ये किसानों को दो तरह से लाभान्वित करते हैं—एक ऊर्जा के रूप में और दूसरा उन्नत प्रकार के उर्वरक के रूप में।

4. परमाणु ऊर्जा वर्तमान युग में ऊर्जा का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। अनेक विकसित और विकासशील देश परमाुण ऊज्र का विद्युत में रूपांतरण कर रहे हें। परमाणु ऊर्जा बहुत लंबे समय तक हमारी ऊर्जा संबंधी जरूरती को पूरा कर सकती है। यह अन्य स्रोतों की अपेक्षा कम खर्च पर ऊर्जा प्रदान करती है। परमाणु ऊर्जा कम मात्रा में ही हरित गृह गैसों को उत्पन्न करती हैं। इस प्रकार परमाणु ऊर्जा मानव की आवश्यकताओं तथा पर्यावरण की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

परमाणु ऊर्जा संयन्त्र राज्य

(i)	नरोरा	उत्तर प्रदेश
(ii)	रावतभाटा	राजस्थान
(iii)	काकरापारा	गुजरात
(iv)	तारापुर	महाराष्ट्र
(v)	कैगा	कर्नाटक
(vi)	कलपक्कम	तमिलनाडु
(vii)	चन्द्रपुर	महाराष्ट्र
(viii)	वियजवाड़ा	आन्ध्र प्रदेश
(ix)	कोरबा	छत्तीसगढ़
(x)	बरौनी	बिहार

5. खनिज संसाधन के संरक्षण की आवश्यकता

(i) खनिज निर्माण की भूगर्भिक प्रक्रियाएँ इतनी धीमी हैं कि उनके वर्तमान उपभोग की दर की तुलना में उनके पुनर्भरण की दर अपरिमित दर से थोड़ी है।

(ii) खनिज संसाधन सीमित तथा अनवीकरण योग्य हैं।

(iii) अयस्कों के सतत् उत्खनन से लागत बढ़ती है, क्योंकि खनिजों के उत्खनन की गहराई बढ़ने के साथ उनकी गुणवत्ता घटती जाती है।

खनिज संसाधन सीमित और गैर-नवीकरणीय (Non-renewable) हैं, इसलिए हमें खनिज संसाधनों को संरक्षित करने की आवश्यकता है।

खनिज संसाधनों को सुनियोजित एवं सतत पोषणीय ढंग (Sustainable Manner) से प्रयोग करके हम इनके संरक्षण में सहयोग दे सकते हैं। निम्नकोटि के अयस्कों से गुणवत्तापूर्ण पदार्थों को तैयार करने के लिए उन्नत प्रौद्योगिकी का विकास भी अनिवार्य है। धातुओं का पुनर्चक्रण, व्यर्थ धातुओं का प्रयोग तथा अन्य प्रतिस्थापनों का उपयोग भविष्य में हमारे खनिज संसाधनों के संरक्षण के उपाय हैं।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

  ऐसे धात्विक .... निभाते हैं।

(क) ऐसे धात्विक खनिज पदार्थ जिनमें लौह अंश नहीं पाया जाता, अलौह खनिज (non-ferrous minerals) कहलाते हैं।

(ख) इनका इन्जीनियरिंग तथा विद्युत उद्योग में महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

(ग) अलौह खनिज में ताँबा, बॉक्साइट, सीसा और सोना आते हैं।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

  प्राकृतिक गैस .... ईंधन है।

(क) प्राकृतिक गैस एक महत्त्वपूर्ण स्वच्छ ऊर्जा संसाधन है, जो पेट्रोलियम के साथ अथवा अलग भी पाई जाती है।

(ख) इसे ऊर्जा के एक साधन के रूप में तथा पेट्रो रसायन उद्योग के एक औद्योगिक कच्चे माल के रूप में प्रयोग किया जाता है।

(ग) कार्बन डाई-ऑक्साइड के कम उत्सर्जन के कारण प्राकृतिक गैस को पर्यावरण-अनुकूल माना जाता है, इसलिए यह वर्तमान समय का बेहतर ईंधन है।

6 विनिर्माण उद्योग

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) **2.** (क) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (ग) **6.** (क)
7. (घ)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि उद्योग पर्यावरण को किस प्रकार दूषित करते हैं? उद्योगों द्वारा पर्यावरण को कम करने के लिए उठाए गए उपायों को लिखिए।**

उत्तर– कारखानों द्वारा निष्कासित एक लीटर अपशिष्ट से लगभग आठ गुना स्वच्छ जल दूषित होता है। औद्योगिक प्रदूषण से स्वच्छ जल को बचाने के लिए कुछ सुझाव निम्न प्रकार से—

(i) नदियों व तालाबों में गर्म जल तथा अपशिष्ट पदार्थों को प्रवाहित करने से पहले उनका शोधन करना। औद्योगिक अपशिष्ट का शोधन तीन चरणों में किया जा सकता है—(क) यान्त्रिक साधनों द्वारा प्राथमिक शोधन। (ख) जैविक प्रक्रियाओं द्वारा द्वितीयक शोधन; (ग) जैविक, रासायनिक तथा भौतिक प्रक्रियाओं द्वारा तृतीयक शोधन।

(ii) विभिन्न प्रक्रियाओं में जल का कम-से-कम उपयोग करना।

(iii) जल की आवश्यकता पूर्ति हेतु वर्षा जल संग्रहण।

कूट आधारित प्रश्न

- **आर्थिक विकास की नींव कौन रखता है?**

उत्तर–(ग) केवल (iii)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **कागज का निर्माण ______________ किया जाता है?**

उत्तर–(घ) लकड़ी

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (ग) (iii) (iv) (ii) (i)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **विनिर्माण उद्योग से सम्बन्धित कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर–(ख) (iii) व (iv)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर–(क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. सूती कपड़े का उद्योग भारत का सबसे बड़ा तथा महत्वपूर्ण उद्योग है। कपड़े के कारखानों में देश के 15 लाख से अधिक व्यक्ति काम करते हैं। भारत में सूती वस्त्र का सबसे पहला कारखाना मुम्बई (बम्बई) में 1854 ई० में खोला गया था। सन् 1951 ई० में भारत में 453 सूती मिलें थीं। वर्तमान में हमारे देश में सूती वस्त्र के 1,062 कारखाने हैं (जिनमें 777 कताई के और 285 कताई-बुनाई दोनों के हैं।) इन कारखानों में 188 मिलें सरकारी क्षेत्र में, 110 सहकारी क्षेत्र में और 764 निजी क्षेत्र में हें। इन कारखानों में 1,2000 करोड़ रु० की पूँजी लगी है।

2. उद्योगों द्वारा कार्बनिक अपशिष्ट पदार्थों को नदी में छोड़ने से जल प्रदूषण (Water pollution) फैलता है। इसके प्रमुख कारक—कागज, लुग्दी, रसायन, वस्त्र तथा रंगाई उद्योग, तेल शोधनशालाएँ, चमड़ा उद्योग तथा इलेक्ट्रोप्लेटिंग उद्योग हैं,

औद्योगिक तथा यातायात—जनित गतिविधियों के कारण पर्यावरण में अधिक अनुपात में अनचाही विषैली गैसें, जैसे—सल्फर डाइऑक्साइड तथा कार्बन मोनोऑक्साइड गैसें उत्पन्न हो रही हैं जो बढ़ते वायु प्रदूषण (Air pollution) का कारण है।

जब कारखानों तथा तापघरों से गर्म जल को बगैर ठण्डा किए नदियों तथा तालाबों में प्रवाहित कर दिया जाता है, तो जल में तापीय (Thermal) प्रदूषण होता है।

ध्वनि प्रदूषण से न केवल खिन्नता एवं उत्तेजना वरन् श्रवण असक्षमता, हृदय गति, रक्तचाप तथा अन्य कायिक व्यथाओं में भी वृद्धि होती है।

3. लोहा तथा इस्पात उद्योग एक आधारभूत (Basic) उद्योग है, क्योंकि अन्य सभी हल्के, मध्यम और भी उद्योग इनसे बनी मशीनरी पर निर्भर हैं। अलग-अलग प्रकार के इंजीनियरिंग सामान, निर्माण, सामग्री, रक्षा, चिकित्सा, टेलीफोन, वैज्ञानिक उपकरण और विभिन्न प्रकार की उपभोक्ता वस्तुओं के निर्माण के लिए इस्पात की जरूरत होती है।

इस्पात के उत्पादन तथा खपत को प्राय: एक देश के विकास का पैमाना माना जाता है। लोहा तथा इस्पात भारी उद्योग (Heavy industry) के अन्तर्गत आता है, क्योंकि इसमें प्रयुक्त कच्चा तथा तैयार माल दोनों ही भारी और स्थूल होते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. उद्योगों को निम्नलिखित आधार पर वर्गीकृत किया जाता है—

   (i) प्रयुक्त कच्चे माल के आधार पर—प्रयुक्त कच्चे माल के आधार पर उद्योग दो प्रकार के होते हैं—कृषि पर आधारित उद्योग तथा खनिज पर आधारित उद्योग।

   (ii) प्रमुख भूमिका के आधार पर उद्योग—ये उद्योग दो प्रकार के होते हैं—आधारभूत उद्योग तथा उपभोक्ता उद्योग।

   (iii) पूँजी निवेश के आधार पर—पूँजी निवेश के आधार पर उद्योगों का वर्गीकरण दो प्रकार से होता है—लघु उद्योग तथा वृहत् उद्योग।

   (iv) स्वामित्व के आधार पर—स्वामित्व के आधार पर उद्योगों को चार भागों में बाँटा गया है—(अ) सार्वजनिक क्षेत्र (ब) निजी क्षेत्र (स) संयुक्त उद्योग (द) सहकारी उद्योग।

   (v) कच्चे माल तथा तैयार माल की मात्रा के आधार पर—कच्चे माल तथा तैयार माल के आधार पर उद्योगों को भारी तथा हल्के उद्योग में बाँटा जाता है।

2. (i) यह हल्की धातु है (ii) यह जंग अवरोधी होता है (iii) यह ऊष्मा का सुचालक है (iv) दूसरी धातुओं के साथ मिलाए जाने पर यह कठोर हो जाता है (v) यह लचीला होता है।

3. उद्योगों द्वारा कार्बनिक अपशिष्ट पदार्थों को नदी में छोड़ने से जल प्रदूषण (Water pollution) फैलता है। इसके प्रमुख कारक—कागज, लुग्दी, रसायन, वस्त्र तथा रंगाई उद्योग, तेल शोधनशालाएँ, चमड़ा उद्योग तथा इलेक्ट्रोप्लेटिंग उद्योग हैं,

   औद्योगिक तथा यातायात—जनित गतिविधियों के कारण पर्यावरण में अधिक अनुपात में अनचाही विषैली गैसें, जैसे—सल्फर डाइऑक्साइड तथा कार्बन मोनोऑक्साइड गैसें उत्पन्न हो रही हैं जो बढ़ते वायु प्रदूषण (Air pollution) का कारण है।

   जब कारखानों तथा तापघरों से गर्म जल को बगैर ठण्डा किए नदियों तथा तालाबों में प्रवाहित कर दिया जाता है, तो जल में तापीय (Thermal) प्रदूषण होता है।

   ध्वनि प्रदूषण से न केवल खिन्नता एवं उत्तेजना वरन् श्रवण असक्षमता, हृदय गति, रक्तचाप तथा अन्य कायिक व्यथाओं में भी वृद्धि होती है।

4. कृषि और उद्योग एक-दूसरे के पूरक होते हैं। कृषि का विकास उद्योगों पर और उद्योगों का विकास कृषि पर टिका है। भारत में कृषि आधारित उद्योगों ने कृषि-विकास के द्वार खोल दिए हैं। कृषि ने उद्योगों को कपास, गन्ना, रबड़, तिलहन, जूट, कच्चा रेशम आदि देकर उनका पोषण किया है। मशीनें, कीटनाशक, पम्पसैट, ट्रैक्टर, उन्नतशील बीज और रासायनिक उर्वरक देकर उद्योगों ने कृषि को निर्वाहमूलक स्वरूप से निकालकर आधुनिकीकरण के पथ पर बढ़ा दिया है। कृषि और उद्योगों के समन्वय और एकीकरण ने भारत के कृषि-उत्पादों और औद्योगिक उत्पादों को वैश्वीकरण के युग में पहुँचा दिया है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. बुनाई कटाई तथा अन्य प्रक्रमण का 90 प्रतिशत कार्य विकेन्द्रित (decentralised) क्षेत्र में है। भारत में सूती वस्त्र उद्योग का जन्म महाराष्ट्र तथा गुजरात के कपास-उत्पादक क्षेत्रों में हुआ था। इन दोनों राज्यों में अब भी सूती वस्त्र उद्योग अत्यन्त विकसित दशा में है क्योंकि यहाँ—

1. पर्याप्त कपास कच्चे माल के रूप में सुलभ है।
2. इन दोनों राज्यों की नम जलवायु वस्त्र बुनने के अनुकूल है।
3. यहाँ परिवहन व्यवस्था बहुत विकसित है।
4. परम्परागत कुशल श्रम सुलभ है।
5. पर्याप्त पूँजी सुलभ होने से मिलें स्थापित हैं।
6. पत्तन सूती वस्त्रों के निर्यात में सहायक हैं।
7. रँगाई का रंग, मशीनें तथा उपकरण सुविधापूर्वक मिल जाते हैं।
8. भारत में सूती वस्त्रों की माँग अन्तर्राट्रीय बाजारों में खूब है।

2. भारत में लोहे व इस्पात की वस्तुयें बनाने क लिए कुटीर उद्योग का प्रचलन प्राचीन काल से है। ईसा से भी 300 वर्ष पूर्व दिल्ली का लौह स्तम्भ इस बात का प्रमाण है। यह स्तम्भ पता नहीं किस उच्चकोटि के इस्पात से बना है कि धूप, वर्षा, सर्दी, गर्मी आदि में हजारों वर्षों से खड़ा है, परन्तु **आज तक इसे जंग नहीं लगा।** वैज्ञानिकों के लिए यह आश्चर्य की वस्तु बनी हुई है। भारत में लोहे के संचित भण्डार पर्याप्त हैं। साथ ही, यहाँ के लोहे की किस्म भी अच्छी है। **लौह व इस्पात कारखानों का महत्व उनकी संख्या से नहीं,** अपितु उनकी इस्पात क्षमता से आँका जाता है। 1951 ई० में भारत के लोहे के कारखानों की इस्पात उत्पादन क्षमता 15 लाख टन थी; किन्तु 2011 ई० में यह बढ़कर 640 लाख टन हो चुकी थी। और 2016 ई० में इस्पात का वास्तविक उत्पादन 976 लाख टन हुआ।

लोहा और इस्पात उद्योग केवल प्रायद्वीपीय भारत में ही स्थित है, क्योंकि—

(i) यहाँ लोहे की खानें हैं।
(ii) यहाँ कोयले की खानें हैं।
(iii) यहाँ लोहे की खानों के पास ही मैंगनीज व चूना भी पाया जाता है।
(iv) यहाँ स्वच्छ जल तथा लोहा ढालने के लिए बलुई मि—ी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है।
(v) यहाँ कुशल मजदूर यथेष्ठ संख्या में मिल जाते हैं।
(vi) यहाँ पर्याप्त रेलमार्ग हैं जो दूर-दूर तक फैले हुए हैं।

3. देश के आर्थिक विकास में सार्वजनिक क्षेत्र के योगदान—सर्वाजनिक क्षेत्र का देश के आर्थिक विकास में निम्नलिखित योगदान है—

(i) यह क्षेत्र भारत के सभी लोगों के लिए सड़कों, पुलों, रेलवे जैसी सेवाओं पर खर्चों को पूरा करने के लिए करों व अन्य तरीकों के माध्यम से धन जुटाता है।

(ii) सरकार रेलवे, नौवहन, हवाई जहाज, मैट्रो ओर स्थानीय रेलगाड़ियाँ चलाती है, इनपर भारी खर्च करती है और सुनिश्चित करती है कि ऐसी सुविधा सभी के लिए उपलब्ध हो।

(iii) भारत में सरकार उचित मूल्य पर किसानों से गेहूँ और चावल खरीदती है, इसे अपने गोदामों में भण्डारित करती है और राशन की दुकानों के माध्यम से उपभोक्ताओं को कम कीमत पर बेचती है। सरकार को लागत का कुछ भाग वहन करना पड़ता है। इस प्रकार, सरकार किसानों और उपभोक्ताओं दोनों की सहायता करती है।

4. वर्तमान युग सूचना क्रान्ति का युग है जिसे साकार किया है, प्रौद्योगिकी और इलेक्ट्रॉनिक्स ने। इलेक्ट्रॉनिक उद्योग में टेलीविजन, कम्प्यूटर, टेलीफोन, सेल्यूलर फोन, टेलीकॉम, पेजर, राडार तथा दूरसंचार उद्योग आते हैं। बंगलुरू नगर भारत की इलेक्ट्रॉनिक राजधानी तथा

सॉफ्टवेयर टेक्नोलॉजी पार्कस के रूप में विख्यात है। भारत के अन्य इलेक्ट्रॉनिक सामान बनाने के केन्द्र दिल्ली, मुम्बई, हैदराबाद, पुणे, चेन्नई, कोलकाता तथा लखनऊ आदि हैं। भारत में अब तक 18 सॉफ्टवेयर तकनीक पार्क (Software Technology Parks) स्थापित हो चुके हैं। ये पार्क सॉफ्टवेयर विशेषज्ञों की एकल विन्डो सेवा तथा उच्च आँकड़ें संचार (High Data Communication) सुविधा प्रदान करते हैं। यह उद्योग भारत में मुख्य रोजगार प्रदाता उद्योग है।

2005 में इस उद्योग में इस उद्योग में 10 लाख से भी अधिक लोग कार्यरत थे। एक अनुमान के अनुसार आगामी 4 वर्षों में यह संख्या 8 गुणा बढ़ सकती है। यह भी जानने योग्य है कि इस उद्योग में कुल सेवारत लोगों में 30 प्रतिशत स्त्रियाँ हैं। सूचना प्रौद्योगिकी एवं इलेक्ट्रॉनिक उद्योग भारत का सर्वाधिक विदेशी मुद्रा कमाने वाला उद्योग बन गया है। इसका कारण बाह्य स्त्रोतीकरण [Business Processes Outsourcing (BPO)] है। भारत में इस उद्योग की सफलता के पीछे इसके हार्डवेयर व साफ्टवेयर दोनों उद्योग रहे हैं।

यद्यपि उद्योगों की हमारे देश की अर्थव्यवस्था की वृद्धि व विकास में सराहनीय एवं महत्त्वपूर्ण भूमिका है तथापि इनके द्वारा बढ़ते पर्यावरण-प्रदूषण को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। उद्योग निम्न चार प्रकार के प्रदूषणों के लिए उत्तरदायी होते हैं—(i) वायु (ii) जल (iii) मृदा (iv) ध्वनि।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  औपनिवेशिक काल .... बनी हुई है।

(क) औपनिवेशिक काल में भारत में अंग्रेज शासकों ने विनिर्माण उद्योग के विकास की ओर ध्यान देने की अपेक्षा भारत के परम्परागत कुटीर उद्योगों का ही विनाश कर दिया।

(ख) वे भारत से कच्चे माल सस्ते मूल्यों पर इंग्लैण्ड ले जाते और वहाँ से तैयार माल भारत के बाजारों में उतार देते।

(ग) स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत में विनिर्माण उद्योग की स्थापना पर विशेष ध्यान दिया गया।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्त्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

  भारत में .... लगा दिया।

(क) भारत में आधुनिक ढंग से चीनी का पहला कारखाना सन् 1906 में बिहार में स्थापित किया गया था।

(ख) सन् 1931 में भारत में जावा व क्यूबा की चीनी भारी मात्रा में आयात की जाती थी।

(ग) सन् 1932 में सरकार ने इस उद्योग को संरक्षण प्रदान किया और बिहार से आने वाली चीनी पर आयात कर लगा दिया।

7 राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखाएँ

बहुविकलपीय प्रश्न

1. (क) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग) 5. (ग) 6. (ख)
7. (घ) 8. (ग)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(ग) यदि 'A' सत्य है लेकिन 'R' असत्य है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **चित्र को देखकर बताइए कि राष्ट्रीय राजमार्गों पर आपातकालीन कॉल बॉक्स किस प्रकार से उपयोगी है? और क्या इस प्रकार की कॉल सुविधाएँ अन्य स्थानों पर भी होनी चाहिए।**

उत्तर– राष्ट्रीय राजमार्गों पर आपातकालीन कॉल बॉक्स अत्यंत उपयोगी हैं, क्योंकि राजमार्गों के आस-पास सघन आबादी नहीं होती है। ऐसे में आपातकालीन कॉल बॉक्स द्वारा सहायता प्राप्त की जा सकती है। हाँ, इस प्रकार की कॉल सुविधाएँ अन्य स्थानों पर भी होनी चाहिए।

कूट आधारित प्रश्न

- **भारत की उत्तरी पर्वतीय क्षेत्रों के लिए परिवहन का सबसे अच्छा साधन है–**

उत्तर– (क) केवल (i)

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

- **दक्षिण मध्य रेलवे का प्रधान कार्यालय ____________ है?**

उत्तर– (ग) चेन्नई

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (ख) (ii) (iii) (iv) (i)

सत्य-असत्य पर आधारित प्रश्न

- **परिवहन से सम्बन्धित कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर–(ग) केवल (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर– (क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. परिवहन और संचार किसी देश की अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा हैं क्योंकि ये देश के अलग-अलग हिस्सों को आपस में जोड़ते हें, और वस्तुओं, सेवाओं और सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हें। इससे व्यापार, आर्थिक विकास और सामाजिक संपर्क में मदद मिलती है।
2. पिछले 15 वर्षो में तकीनक और बेहतर परिवहन के कारण अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में बहुत परिवर्तन हुआ है। किसी भी देश द्वारा एक बाजार तक पहुँचने की क्षमता बहुत बढ़ गई है। ज्यादातर देश आर्थिक उदारीकरण की वकालत करने लगे हैं। परंतु ऐसी स्थिति में बड़े उत्पादक देश एक-दूसरे से उलझने भी लगे हें। जैसे हाल ही में अमेरिका और चीन में कथति व्यापार युद्ध हो रहा है।
3. समतल मैदानी क्षेत्रों में रेल परिवहन अत्यधिक सुविधाजनक परिवहन है। क्योंकि यहाँ रेल ट्रैक बनाना आसान है। ट्रैक का रखरखाव भी आसान व सस्तर है। यही कारण है कि उत्तर भारत में चुनौतियों के बावजूद भी रेल परिवहन एक सुविधाजनक पविहन साधन है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **स्वर्णिम चतुर्भुज महा राजमार्ग**—भारत सरकार ने दिल्ली—कोलकत्ता, चेन्नई—मुम्बई व दिल्ली को जोड़ने के लिए ६ लेन वाली महा-राजमार्गों की सड़क परियोजना शुरू की है। इस परियोजना के अन्तर्गत दो गलियारा प्रस्तावित हैं; प्रथम उत्तर-दक्षिण गलियारा जो श्रीनगर को कन्याकुमारी से जोड़ता है तथा द्वितीय पूर्व-पश्चिम गलियारा जो सिलचर (असम) तथा पोरबन्दर (गुजरात) को जोड़ता है। इस महा-राजमार्ग का प्रमुख उद्देश्य भारत के मेगासिटी के बीच की दूरी व परिवहन समय को कम करना है। यह राजमार्ग-परियोजना भारत के राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) के अधिकार क्षेत्र में है।
2. सड़क परिवहन के तीन गुण निम्नलिखित हैं—
   (i) रेल की तुलना में सड़कें बनाने की लागत कम पड़ती है।
   (ii) सड़कें ऊबड़-खाबड़ और विभिन्न भूभागों पर भी बनाई जाती हैं।
   (iii) सड़क परिवहन लचीला है अर्थात् सुविधानुसार इसमें परिवहन किया जा सकता है।
3. जल परिवहन, परिवहन का सबसे सस्ता साधन है। यह भारी व स्थूलकाय वस्तुएँ ढोने में अनुकूल है। यह परिवहन साधनों में ऊर्जा सक्षम व पर्यावरण अनुकूल है।
4. स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद, कच्छ में कांदला पत्तन को प्रथम पत्तन के रूप में विकसित किया गया। ऐसा देश-विभाजन के बाद कराची पत्तन के पाकिस्तान चले जाने की कमी को पूरा करने तथा मुम्बई से होने वाले व्यापारिक दबाव को कम करने के लिए किया गया था। कांदला एक ज्वारीय पत्तन है। यह जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान व गुजरात के उद्योगों तथा खाद्यान्नों के आयात-निर्यात को संचालित करता है।

5. आर्थिक विकास में विदेशी व्यापार के अनेक लाभ होते हैं, जिनमें से प्रमुख लाभ निम्नलिखित हैं—

1. विशिष्टीकरण—विदेशी व्यापार के फलस्वरूप सभी देश केवल उन वस्तुओं का उत्पादन करते हैं, जिन्हें वे सस्ता व उत्तम बना सकते हैं। इस कारण विभिन्न देशों में भिन्न-भिन्न वस्तुओं के उत्पादन का विशिष्टीकरण हो जाता है, जिससे देशों का आर्थिक विकास होता है।

2. उपयोगिता में वृद्धि—विदेशी व्यापार में देशी व्यापार की भाँति दोनों देशों को उपयोगिता का लाभ होता है। प्रत्येक देश कम उपयोगिता वाली (आवश्यक) वस्तु को प्राप्त करता है। इस प्रकार दोनों देशों को उपयोगिता में वृद्धि का लाभ होता है।

3. देश में न उत्पन्न होने वाली वस्तुओं की प्राप्ति—विदेशी व्यापार के कारण देश उन वस्तुओं का आयात करता है जो वह स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकता अथवा ऊँची लागत पर उत्पन्न कर पाता है। उदाहरण के लिए, भारत चाय व जूट के सामान का निर्यात करके मशीनें मँगा लेता है। स्विट्जरलैण्ड में कोयला उत्पन्न नहीं होता, परन्तु विदेशी व्यापार के कारण वह इसका प्रयोग करने में समर्थ होता है।

6. पिछले तीन दशकों में भारतीय पर्यटन उद्योग में महत्त्वपूर्ण बढ़ोत्तरी हुई है। सन् 2014 की तुलना में 2015 के दौरान, देश में विदेशी पर्यटकों के आगमन में 4.5 प्रतिशत बढ़ोत्तरी दर्ज की गई, जिससे लगभग 1,35,193 करोड़ विदेशी मुद्रा प्राप्त हुई।

भारत ने पर्यटन के क्षेत्र में विकास किया है। विदेशी पर्यटकों के आगमन में निरन्तर वृद्धि दर्ज की गई है। पर्यटन आर्थिक विकास के क्षेत्र में भारत महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुका है। सन् 2017 में यह भारत के कुल 'सकल घरेलू उत्पाद' (GDP) का 9.4 प्रतिशत भाग है। सन् 2016 में 89 लाख से ज्यादा विदेशी पर्यटक भारत में आए थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. रेल परिवहन की अपेक्षा सड़क परिवहन की महत्ता अधिक है। इस संबंध में जानकारी निम्नलिखित है—

(i) रेल की तुलना में सड़क बनाने में लागत कम आती है।

(ii) सड़कें ऊबड़-खाबड़ और विभिन्न भूभागों पर भी बनाई जा सकती हैं।

(iii) सड़क परिवहन लचीला है अर्थात् इसमें सुविधानुसार परिवहन किया जा सकता है।

(iv) इनकी पहुँच दुर्गम इलाकों तक भी होती है।

(v) रेल की तुलना में सड़क का रखरखाव सस्ता है।

(vi) सड़कें दैनिक उपयोग की चीजों (दूध, अण्डा, फल, सब्जियाँ आदि) के परिवहन में उपयोगी हैं।

(vii) सड़कों की पहुँच गाँवों तक होती है, जहाँ भारत की अधिकतर आबादी रहती है।

(viii) सड़कें रेल परिवहन तक सवारियाँ व सामान पहुँचाती हैं।

(ix) सड़कों की पठारी, मरुस्थलीय व वन क्षेत्र में भी आसान पहुँच है।

(x) रेल की अपेक्षा सड़क अधिक सर्वसुलभ होने से सबसे अधिक प्रभावी होती है।

2. संचार का अर्थ होता है—समाचार/संदेश/विचार का एक जगह से दूसरी जगह जाना।

भारत का संचार तंत्र—भारत ने एक शक्तिशाली और प्रभावी दूर संचार तंत्र स्थापित करने में सफलता प्राप्त कर ली है। भारत में संचार के मुख्य साधन निम्नलिखित हैं—

1. डाक सेवाएँ—भारत में लगभग 1,56,000 डाकघर हैं जो पत्र, रजिस्टर्ड पत्र और पार्सल के माध्यम से संचार की सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं। डाकघर मनीऑर्डर, मनी ट्रांसफर, बचत बैंक, जीवन बीमा की सेवाएँ भी प्रदान करते हैं।

2. टेलीफोन—भारत में सुदृढ़ संचार तंत्र के माध्यम से लैण्डलाइन, मोबाइल तथा रेडियो पेजिंग आदि दूरसंचार की सुविधाएँ उपलब्ध हो रही हैं।

3. ई-मेल—इलेक्ट्रॉनिक विधि से सन्देश भेजने को ई-मेल कहा जाता है। इसे देश-विदेश में कम व्यय में सुविधापूर्वक भेजा जाता है।

4. बेतार का तार—मारकोनी द्वारा आविष्कृत यह प्रणाली सेना, पुलिस तथा प्रशासन के लिए वरदान थी। वर्ष 2013 में भारत में इस प्रणाली को बन्द कर दिया गया और इसके स्थान पर इन्टरनेट का प्रयोग किया जाने लगा।

5. दूरदर्शन—दूरदर्शन, वर्तमान युग में दूर संचार का सशक्त तथा लोकप्रिय माध्यम बन गया है। भारत में इसका श्रीगणेश 1959 ई० में हुआ था। भारत में प्रसार भारती 900 से अधिक ट्रांसमीटरों से दूरदर्शन के अनेक चैनलों का प्रसारण करती है। सैटेलाइट ने दूरदर्शन को भारत की 90% जनसंख्या तक पहुँचा दिया है। दूरदर्शन, समाचार व खेलों का सीधा प्रसारण, मौसम की भविष्यवाणी, तथा शिक्षा और विज्ञान के प्रसारण की उपयोगिता सिद्ध कर रहा है।

6. रेडियो—भारत में रेडियो दूर संचार का प्रमुख माध्यम बना हुआ है। भारत में 213 आकाशवाणी केन्द्रों से नियमित रेडियो का प्रसारण किया जाता है। रेडियो देश-विदेश के समाचार तथा खेलों का आँखों-देखा हाल प्रसारित करता है।

7. टेलेक्स सेवा—भारत में टेलेक्स सेवा का प्रारम्भ 1963 ई० में किया गया था। वर्तमान में भारत में लगभग 332 टेलेक्स एक्सचेंज कार्यरत हैं। ये टेलीप्रिण्टर्स द्वारा सन्देशों का प्रसार करते हैं।

8. विदेश संचार सेवा—भारत में 'समुद्र पार संचार सेवा' (O.C.S.) नामक कार्यालय द्वारा विदेशों के साथ दूर संचार व्यवस्था स्थापित की जाती है। इनका संचालन उपग्रह भूकेन्द्रों द्वारा होता है। ओ०सी०एच० कार्यालय हिन्द महासागर में स्थित है। यह इन्टेल सेट के माध्यम से दूर संचार का कार्य करता है।

9. प्रिन्ट मीडिया—भारत में समाचार पत्र-पत्रिकाएँ जो विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होते हैं, प्रिण्ट मीडिया के रूप में दूर संचार का काम करते हैं। समाचार-पत्र दैनिक तथा पत्रिकाएँ पाक्षिक, मासिक, त्रिमासिक तथा वार्षिक होती हैं।

3. **भारत के आर्थिक विकास में परिवहन के साधनों का महत्त्व**—वर्तमान काल में, भारत अपने विशाल आकार, विविधताओं, भाषायी-सामाजिक-सांस्कृतिक विभिन्नताओं के होते हुए भी विश्व के सभी क्षेत्रों से जुड़ा हुआ है। **रेल, वायुयान तथा जलयान, समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, रेडियो, सिनेमा, दूरदर्शन तथा इण्टरनेट ने भारत के लिए आर्थिक विकास के**

स्वर्णिम अवसर जुटाएँ है। इन्होंने राष्ट्रीय (देशी) व्यापार और अन्तर्राष्ट्रीय (विदेशी) व्यापार के क्षेत्र में राष्ट्र को प्रगतिशील बनाकर राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया है। **परिवहन और संचार तन्त्र की जीवन-रेखाओं ने राष्ट्र में आर्थिक विकास, समृद्धि और आरामदायक जीवन सुलभ कराकर अर्थव्यवस्था में प्राण फूँक दिए हैं।** यही कारण है कि भारत इन दोनों व्यवस्थाओं में नित नए सुधार करने में जुटा है। आधुनिक संचार तन्त्र और परिवहन व्यवस्था राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को पूरी तरह प्रभावित करते हैं या यह कहें कि ये अर्थव्यवस्था के आधार स्तम्भ हैं। सघन और सक्षम परिवहन व्यवस्था तथा संचार के साधन आधुनिक विश्व, राष्ट्र तथा स्थानीय व्यापार के लिए आवश्यक हैं।

4. वस्तुओं की अदल-बदल और क्रय-विक्रय को व्यापार कहा जाता है। भारत की व्यापारिक वृद्धि ही उसके विकास की सूचक है। व्यापार को दो भागों में बाँटा गया है—1. देशी व्यापार, 2. विदेश व्यापार। भारत की भौगोलिक सीमाओं के अन्तर्गत विभिन्न राज्यों के मध्य होने वाला व्यापार देशी या राष्ट्रीय व्यापार; जबकि अनेक देशों के साथ होने वाला व्यापार **अन्तर्राष्ट्रीय या विदेश व्यापार** कहलाता है। विदेश व्यापार के दो पहलू हैं—1. आयात 2. निर्यात। **विदेशों से माल मँगाने को आयात तथा विदेशों को माल भेजने को निर्यात कहते हैं।** विदेशी व्यापार का बढ़ता आकार राष्ट्र के तीव्र आर्थिक विकास का सूचक है।

विदेशी व्यापार के लाभ

1. विशिष्टीकरण—विदेशी व्यापार के फलस्वरूप सभी देश केवल उन वस्तुओं का उत्पादन करते हैं, जिन्हें वे सस्ता व उत्तम बना सकते हैं। इस कारण विभिन्न देशों में भिन्न-भिन्न वस्तुओं के उत्पादन का विशिष्टीकरण हो जाता है, जिससे देशों का आर्थिक विकास होता है।

2. उपयोगिता में वृद्धि—विदेशी व्यापार में देशी व्यापार की भाँति दोनों देशों को उपयोगिता का लाभ होता है। प्रत्येक देश अपनी उपयोगिता के अनुसार वस्तुओं का आयात करता है। इस प्रकार दोनों देशों को उपयोगिता में वृद्धि का लाभ होता है।

3. देश में न उत्पन्न होने वाली वस्तुओं की प्राप्ति—विदेशी व्यापार के कारण देश उन वस्तुओं का आयात करता है जो वह स्वयं उत्पन्न नहीं कर सकता अथवा जिन्हें वह ऊँची लागत पर उत्पन्न कर पाता है। उदाहरण के लिए, भारत चाय व जूट के सामान का निर्यात करके मशीनें मँगा लेता है। स्विट्जरलैण्ड में कोयला उत्पन्न नहीं होता, परन्तु विदेशी व्यापार के कारण वह इसका प्रयोग करने में समर्थ हो पाता है।

4. संकटकाल में सहायता—विदेशी व्यापार के फलस्वरूप विभिन्न देशों के सम्बन्ध अच्छे रहते हैं जिससे संकटकाल में एक देश दूसरे देश की सहायता करता है। आजादी के बाद, भारत ने अपने खाद्य-संकट के समय विदेशों से अनाज मँगाकर अपने देशवासियों की आवश्यकताएँ पूरी की थीं।

5. अतिरिक्त माल का उपयोग—विदेशी व्यापार के माध्यम से विभिन्न देश अपने कच्चे अथवा पक्के माल से सम्बन्धित अतिरिक्त उत्पादन दूसरे देशों को बेच देते हैं और वहाँ से अपनी आवश्यकता की वस्तु मँगा लेते हैं, जिससे दोनों देशों के उपभोक्ताओं को विभिन्न प्रकार की वस्तुओं का उपभोग करने का अवसर मिल जाता है।

6. मूल्यों में कमी—विभिन्न वस्तुओं के उत्पादक देशों में पारस्परिक स्पर्द्धा होती है जिसके फलस्वरूप प्रत्येक देश अपने माल की लागत में कमी लाने की चेष्टा करता है तथा इसकी गुणवत्ता सुधारने की कोशिश करता है। इसके फलस्वरूप उपभोक्ताओं को बढ़िया माल सस्ते मूल्य पर उपलब्ध हो जाता है।

7. एकाधिकार पर नियन्त्रण—विदेशी व्यापार के कारण माल एक देश से दूसरे देश में आता-जाता रहता है, जिससे माल में पारस्परिक प्रतिस्पर्द्धा होती रहती है। इसके फलस्वरूप एकाधिकार पर नियंत्रण रहता है तथा उपभोक्ताओं का शोषण नहीं हो पाता है।

8. मूल्यों में स्थिरता—विदेशी व्यापार, कीमतों में तीव्र परिवर्तन को रोकता है क्योंकि जहाँ वस्तु का कम उत्पादन होता है, वहाँ यातायात की उन्नति के कारण तुरन्त माल को भेजा जा सकता है। इससे माँग व पूर्ति में सन्तुलन बना रहता है और मूल्य स्थिर रहते हैं।

9. रोजगार में वृद्धि—विदेशी व्यापार के कारण अनेक नए उद्योगों तथा व्यवसायों का जन्म होता है। उदाहरण के लिए—भारत में जहाजरानी उद्योग का विकास तथा सामुदायिक बीमा व्यवसाय का विकास विदेशी व्यापार के कारण ही हुआ है। दूसरे, आयात व निर्यात में लगे अनेक मध्यस्थों तथा व्यापारियों को रोजगार मिल जाता है। इस प्रकार विदेशी व्यापार से रोजगार में वृद्धि होती है।

10. प्राकृतिक साधनों का अधिकाधिक उपयोग—प्रत्येक देश अपने उपलब्ध प्राकृतिक साधनों का इसलिए पूर्णरूपेण प्रयोग करता है क्योंकि वह अतिरिक्त उत्पादन को विदेशों को बेच सकता है। विदेशी व्यापार के कारण ही प्रत्येक देश भूगर्भ में छिपे हुए प्राकृतिक साधनों की खोज करता रहता है और वैज्ञानिक विकास के कारण उनका अधिकाधिक उपयोग करने में समर्थ होता है।

11. उत्पादकों को लाभ—विदेशी व्यापार के कारण उत्पादक अधिक माल का उत्पादन करते हैं, जिससे उन्हें लाभ होता है।

12. सरकार को लाभ—आयात व निर्यात पर कर लगाने से सरकार की आय में वृद्धि होती है।

13. अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग—विदेशी व्यापार के कारण विभिन्न राष्ट्रों के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ता है।

5. भारत के प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे निम्नलिखित हैं—

(i) राजीव गांधी अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र, हैदराबाद

(ii) इंदिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र, दिल्ली

(iii) कैम्पेगौड़ा अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र, बौंग्लौर

(iv) मनोहर अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र, गोआ

(v) दाबोलिम अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र, गोआ

(vi) नेताजी सुभाषचंद्र बोस अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र, कोलकाता

(vii) बिरसा मुंडा अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र, रांची

(viii) डॉ छत्रपति शिवाजी अंतर्राष्ट्रीय विमान क्षेत्र, नागपुर

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

  भारत में .... बना दिया।

  (क) भारत में रेल परिवहन का विकास और शुभारम्भ करने का श्रेय अंग्रेजों को है।

  (ख) पहली रेलगाड़ी 1853 ई० में मुम्बई से थाणे के बीच चलाई गई।

  (ग) स्वतन्त्रता–प्राप्ति के बाद भारतीय नेतृत्व ने रेल पथों का जाल बिछाकर रेल परिवहन को भारतीय अर्थव्यवस्था की जीवन रेखा बना दिया।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

  आधुनिक युग .... सकता है।

  (क) आधुनिक युग में वायु परिवहन के महत्त्व में दिन–प्रतिदिन वृद्धि होती जा रही है।

  (ख) यह यातायात का महँगा परन्तु तीव्रतम साधन है। वायु परिवहन के माध्यम से समय की बचत होती है। यह आरामदायक और प्रतिष्ठित परिवहन साधन है।

  (ग) दुर्गम स्थानों जैसे ऊँचे पहाड़ों, मरुस्थलों, बाढ़ग्रस्त क्षेत्रों, घने जंगलों व लम्ब समुद्री रास्तों को, वायु परिवहन द्वारा आसानी से पार किया जा सकता है।

इकाई-III : लोकतांत्रिक राजनीति-2 (नागरिकशास्त्र)

1 सत्ता की साझेदारी

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (घ) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (ख)
6. (ग) **7.** (क) **8.** (क)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(ग) यदि 'A' सत्य है लेकिन 'R' असत्य है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **उपर्युक्त कार्टून यह दर्शाता है कि पुतिन अपनी असीमित शक्तियों के द्वारा लोकतन्त्र पर एक प्रकार से हावी है और इसके कारण देश में केन्द्रीयकरण की स्थिति उत्पन्न हो रही**

है। इस कार्टून की और अधिक व्याख्या कीजिए और बताइए कि किसी व्यक्ति विशेष ने हाथों में बहुत अधिक शक्तियाँ किस प्रकार से लोकतन्त्र के लिए हानिकारक हैं?

उत्तर– लोकतंत्र जनता का शासन होता है, और जनता अपना शासक स्वयं चुनती है। परंतु कभी-कभी यह शासक जनता के अधिकारों का दमन करके लोकतंत्र की मूल भावना को ही नष्ट कर देते हैं। रूसी राष्ट्रपति व्लदिमीर पुतिन ने रूस के संविधान में कई संशोधन करके स्वयं को एक तानाशाह सरीखा बना लिया है। उन्होंने कथित तौर पर विपक्ष के नेता की हत्या करवा दी। उनके द्वारा कई मनमाने फैसले लिए गए, जिनका जनता भी विरोध नहीं कर पाती। इस प्रकार के नेता लोकतंत्र की मूलभावना को नष्ट करके, इके लिए खतरा बन जाते हैं।

कूट आधारित प्रश्न

- **लोकतन्त्र में सत्ता किसके हाथों में होती है?**

उत्तर–(क) केवल (i)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **श्रीलंका का सबसे प्रमुख सामाजिक समूह ____________ है।**

उत्तर–(ख) सिंहलियों का

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर–(क) (iv) (i) (ii) (iii)

- **कौन-सा ही कथन सही नहीं है–**

उत्तर–(ग) केवल (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

(क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. बेल्जियम और श्रीलंका दोनों की जनसंख्या में विविधता है, परन्तु बेल्जियम केलोगों में केवल भाषायी भिन्नता है। वही श्रीलंका में भाषा के साथ-साथ धार्मिक भेद भी पाया जाता है।
बेल्जियम में स्थिति तनावपूर्ण होते हुए भी कभी व्यापक हिंसा नहीं हुई। वहीं श्रीलंका दशकों तक गृहयुद्ध की मार झेलता रहा।

2. सत्ता की भागीदारी की आवश्यकता निम्नलिखित कारणों से होती है—
   1. सत्ता की भागीदारी सामाजिक समूहों के टकराव को रोकने में सक्षम है।
   2. समाज में हिंसा और राजनीतिक अस्थिरता रोकने का सुगम उपाय है सत्ता की भागीदारी।
   3. राजनीतिक स्थिरता और अखण्डता बनाए रखने के लिए सत्ता की भागीदारी आवश्यक है।

4. बहुसंख्यक समुदाय की इच्छाओं को अल्पसंख्यक समुदाय पर थोपने से बचाने का एकमात्र उपाय है सत्ता की भागीदारी।
5. सत्ता की साझेदारी लोकतन्त्र की आत्मा है, अत: उसकी सुरक्षा करने का उपाय सत्ता की भागीदारी है।
6. वैध सरकार की सफलता के लिए समूह शासन व्यवस्था लागू करने के लिए सत्ता की भागीदारी नितान्त आवश्यक है।

3. सन् 1956 में एक कानून बनाया गया, जिसके अन्तर्गत तमिल को महत्त्व न देते हुए सिंहली को एकमात्र राजभाषा (Official Language) घोषित कर दिया गया। विश्वविद्यालयों और सरकारी नौकरियों में सिंहलियों को प्राथमिकता देने की नीति भी चली। नए संविधान में यह प्रावधान भी किया गया कि सरकार बौद्ध मत को संरक्षण और बढ़ावा देगी।

एक-एक करके आए इन सरकारी निर्णयों ने श्रीलंकाई तमिलों की नाराजगी को बढ़ाने का कार्य किया। उन्हें लगा कि बौद्ध धर्मावलम्बी सिंहलियों के नेतृत्व वाले सभी राजनीतिक दल उनकी भाषा एवं संस्कृति को लेकर असंवेदनशील हैं। उन्हें लगने लगा कि संविधान और सरकार की नीतियाँ उन्हें समान राजनीतिक अधिकारों से वंचित कर रही है। नौकरियों और लाभ के अन्य कामों में उनके साथ भेदभाव हो रहा है और उनके हितों की अनदेखी की जा रही है। परिणाम यह हुआ कि तमिल और सिंहली समुदायों के सम्बन्ध बिगड़ते चले गए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. किसी भी लोकतन्त्र में, हर प्रकार की राजनैतिक शक्ति का स्रोत प्रजा होती है। यह लोकतन्त्र का एक मूलभूत सिद्धान्त है। ऐसी शासन-व्यवस्था में लोग राजस्व की संस्थाओं के माध्यम से अपने आप पर शासन करते हैं। एक समुचित लोकतान्त्रिक सरकार में, समाज के विविध समूहों और मतों को उचित सम्मान दिया जाता है। जन-नीतियों के निर्माण में हर नागरिक की आवाज सुनी जाती है। इसलिए लोकतन्त्र में यह जरूरी हो जाता है कि राजनैतिक सत्ता में बँटवारा अधिक-से-अधिक नागरिकों के बीच हो।

2. बेल्जियम एक छोटा-सा देश है जिसकी आबादी एक करोड़ से थोड़ा अधिक है। इस छोटे से देश के समाज की जातीय बनावट बहुत जटिल है। देश की कुल आबादी का 59% हिस्सा फ्लेमिश इलाके में रहता है और डच भाषा बोलता है। देश की कुल आबादी का 40% हिस्सा वेलोनिया क्षेत्र में रहता है और प्रेंच भाषा बोलता है। शेष एक फीसदी लोग जर्मन भाषा बोलते हैं।

बेल्जियम की राजधानी ब्रूसेल्स है। यहाँ के 80% लोग फ्रेंच भाषा बोलते हैं और 20% लोग डच भाषा बोलते हैं।

3. अल्पसंख्यक फ्रेंच-भाषी लोग तुलनात्मक रूप से ज्यादा समृद्ध और ताकतवर हैं। बहुत बाद में, आर्थिक विकास और शिक्षा का लाभ पाने वाले डच-भाषी लोगों को इस स्थिति से नाराजगी हो गई थी। इसके चलते 1950 और 1960 के दशक में फ्रेंच और डच बोलने वाले समूहों के बीच तनाव पैदा हो गया।

4. श्रीलंकाई तमिलों ने अपने अधिकारों को हासिल करने के लिए अपनी राजनीतिक पार्टियाँ बनाईं और तमिल को राजभाषा बनाने, क्षेत्रीय स्वायत्तता हासिल करने तथा शिक्षा और रोजगार में समान अवसरों की माँग को लेकर संघर्ष किया। लेकिन तमिलों की आबादी वाले इलाके की स्वायत्तता की उनकी माँगों को लगातार नकारा गया। 1980 के दशक तक, उत्तर-पूर्वी श्रीलंका में स्वतंत्र तमिल ईलम बनाने की माँग को लेकर अनेक राजनीतिक संगठन बने।

5. श्रीलंका में बहुसंख्यक सिंहलियों के हितों को ध्यान में रखकर कानून बनाये गए। इसके कारण सभी महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर सिंहलियों का एकाधिकार हो गया। इन सरकारी फैसलों ने, शासन के प्रति श्रीलंकाई तमिलों में नाराजगी और विरोध को बढ़ाया। उन्हें लगा कि संविधान और सरकार की नीतियाँ उन्हें समान राजनीतिक अधिकारों से वंचित कर रही हैं, उनके हितों की अनदेखी की जा रही है। परिणाम यह हुआ कि तमिल और सिंहली समुदायों के आपसी सम्बन्ध बिगड़ते चले गए। इस टकराव ने गृहयुद्ध का रूप धारण कर लिया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. निम्नलिखित दो उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि सामाजिक विभाजनों ने राजनीति को किस प्रकार प्रभावित किया है—

1. कनाडा के ओंटोरियो प्रान्त की सरकार ने वहाँ के मूलवासी समुदाय के साथ जमीन के दावों का निपटरा करने पर सहमति दे दी। स्थानीय मामलों के लिए जवाबदेह मन्त्री ने घोषणा की कि सरकार मूलवासी समुदाय के साथ पारस्परिक सम्मान और सहयोग की भावना से काम करेगी।

(i) यह विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच शक्ति के विभाजन (अर्थात् सत्ता की भागीदारी) का उदाहरण है।

(ii) यहाँ सत्ता की साझेदारी आदिवासियों तथा अन्य सामाजिक समूहों के बीच हो रही है।

2. रूस की दो प्रभावशाली राजनीतिक पार्टियों–द यूनियन ऑन राइट फोर्सेज और लिबरल याब्लोको मूवमेंट ने एक मजबूत दक्षिणपंथी गठबन्धन बनाने के लिए अपने संगठनों के विलय का फैसला किया। इनका प्रस्ताव है कि अगले संसदीय चुनाव में हम उम्मीदवारों की साझा सूची बनाएँगे।

(i) जिस तरह से राजनीतिक दल, दबाव समूह तथा आन्दोलन सत्ता को नियन्त्रित या प्रभावित करते हैं, सत्ता का यह विभाजन उसी का उदाहरण है।

(ii) यह सत्ता की साझेदारी यूनियन ऑन राइट फोर्सेस तथा लिबरल याब्लोको मूवमेंट के बीच हो रही है।

2. सत्ता की साझेदारी जरूरी है क्योंकि विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच टकराव का अंदेशा कम हो जाता है। ये सामाजिक टकराव हिंसा और राजनीतिक अस्थिरता का रूप ले लेते हैं। इसलिए सत्ता में हिस्सा दे देना राजनीतिक व्यवस्था के स्थायित्व के लिए अच्छा है। बहुसंख्यक समुदाय की इच्छा को बाकी सभी पर थोपना देश की अखंडता के लिए घातक हो सकता है। इसलिए सत्ता की साझेदारी जरूरी है। सत्ता का बँटवारा लोकतान्त्रिक व्यवस्थाओं के लिए ठीक है।

भारत में सत्ता का बँटवारा सरकार के विभिन्न स्तरों के बीच हुआ है; जैसे—केन्द्र सरकार, राज्य सरकार ओर स्थानीय सरकार।

(i) युक्तिपरक कारण—भारत एक घनी आबादी वाला देश है। पूरे देश के लिए एक ही सरकार के द्वारा कानून बनाना, शान्ति तथा व्यवस्था बनाना सम्भव नहीं है। इसलिए सरकार को विभिन्न स्तरों पर बाँट दिया गया है और उनके बीच कार्यों का बँटवारा संविधान के अनुसार कर दिया गया है, जिससे ये सरकारें बिना झगड़ा किए देश के लोगों के हितों को ध्यान में रखकर शासन कर सकें।

(ii) नैतिक कारण—लोकतन्त्रीय देश में सत्ता का बँटवारा जरूरी है। यदि एक ही प्रकार की सरकार होगी तो वह निरंकुश हो जाएगी, ज्यादा से ज्यादा की भागीदारी शासन में नहीं हो पाएगी—जोकि लोकतन्त्र के लिए एक खतरा है। इसलिए भारत में विभिन्न स्तरों पर सरकारों का वर्गीकरण कर दिया गया है।

3. बेल्जियम के नेताओं ने समझदारी दिखाते हुए श्रीलंका से अलग रास्ता अपनाने का निर्णय किया। उन्होंने क्षेत्रीय अन्तरों और सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार किया। सन् 1970 और सन् 1993 के मध्य उन्होंने अपने संविधान में चार संशोधन केवल इस बात के लिए किए कि देश में रहने वाले किसी भी व्यक्ति को बेगानेपन का अहसास न हो और सभी मिल-जुलकर रह सकें। उन्होंने इसके लिए जो व्यवस्था की, वह बहुत ही कल्पनाशील है तथा कोई अन्य देश ऐसा नहीं कर पाया। बेल्जियम के मॉडल की कुछ मुख्य बातें निम्नलिखित हैं—

(i) संविधान में इस बात का प्रावधान है कि केन्द्रीय सरकार में डच और फ्रेंच भाषी मन्त्रियों की संख्या बराबर रहेगी। कुछ विशेष कानून तभी बन सकते हैं जब दोनों भाषायी समूह के सांसदों का बहुमत उसके पक्ष में हो। इस प्रकार किसी एक समुदाय के लोग एकतरफा निर्णय नहीं कर सकते।

(ii) केन्द्र सरकार की अनेक शक्तियाँ देश के दो क्षेत्रों की क्षेत्रीय सरकारों को सुपुर्द कर दी गई हैं यानी राज्य सरकारें केन्द्रीय सरकार के अधीन नहीं हैं।

(iii) ब्रूसेल्स में अलग सरकार है और इसमें दोनों समुदायों को समान प्रतिनिधित्व प्राप्त है। फ्रेंच-भाषी लोगों ने ब्रूसेल्स में समान प्रतिनिधित्व के इस प्रस्ताव को स्वीकार किया, क्योंकि डच-भाषी लोगों ने केन्द्रीय सरकार में बराबरी का प्रतिनिधित्व स्वीकार किया था।

(iv) केन्द्रीय और राज्य सरकारों के अतिरिक्त यहाँ एक तीसरे स्तर की सरकार भी काम करती है अर्थात् सामुदायिक सरकार। इस सरकार का चुनाव एक ही भाषा बोलने वाले व्यक्ति करते हैं। डच, फ्रेंच और जर्मन बोलने वाले समुदायों के व्यक्ति चाहे वे जहाँ भी रहते हों, इस सामुदायिक सरकार को चुनते हैं। इस सरकार को सांस्कृतिक, शैक्षणिक और भाषायी समस्याओं पर निर्णय लेने का अधिकार है।

4. जब शासन व्यवस्था में धार्मिक, भाषायी या जातीय आधार पर बहुसंख्यक समुदाय का वर्चस्व स्थापित होने लगता है तो इसे बहुसंख्यकवाद कहते हैं।

श्रीलंका में गृहयुद्ध व अशांति का विकास

सन् 1948 में श्रीलंका एक स्वतन्त्र राष्ट्र (Nation) के रूप में निर्मित हुआ। सिंहली समुदाय के नेताओं ने अपनी बहुसंख्या के बल पर शासन पर प्रभुत्व जमाने का प्रयास किया। इस

कारण लोकतान्त्रिक रूप से निर्वाचित सरकार ने सिंहली समुदाय की प्रभुता स्थापित करने के लिए अपनी बहुसंख्यक-परस्ती के अन्तर्गत अनेक कदम उठाए।

सन् 1956 में एक कानून बनाया गया, जिसके अन्तर्गत तमिल को महत्त्व न देते हुए सिंहली को एकमात्र राजभाषा (Official Language) घोषित कर दिया गया। विश्वविद्यालयों और सरकारी नौकरियों में सिंहलियों को प्राथमिकता देने की नीति भी चली। नए संविधान में यह प्रावधान भी किया गया कि सरकार बौद्ध मत को संरक्षण और बढ़ावा देगी।

एक-एक करके आए इन सरकारी निर्णयों ने श्रीलंकाई तमिलों की नाराजगी को बढ़ाने का कार्य किया। उन्हें लगा कि बौद्ध धर्मावलम्बी सिंहलियों के नेतृत्व वाले सभी राजनीतिक दल उनकी भाषा एवं संस्कृति को लेकर असंवेदनशील हैं। उन्हें लगने लगा कि संविधान और सरकार की नीतियाँ उन्हें समान राजनीतिक अधिकारों से वंचित कर रही है।

नौकरियों और लाभ के अन्य कामों में उनके साथ भेदभाव हो रहा है और उनके हितों की अनदेखी की जा रही है। परिणाम यह हुआ कि तमिल और सिंहली समुदायों के सम्बन्ध बिगड़ते चले गए।

श्रीलंकाई तमिलों ने अपने राजनीतिक दलों का गठन किया और तमिल को राजभाषा बनाने, क्षेत्रीय स्वायत्तता प्राप्त करने तथा शिक्षा और रोजगार में समान अवसरों की माँग को लेकर संघर्ष किया। लेकिन तमिलों की आबादी वाले क्षेत्र की स्वायत्तता की माँगों को निरन्तर नकारा गया। 1980 के दशक तक उत्तर-पूर्वी श्रीलंका में स्वतन्त्र तमिल ईलम (सरकार) बनाने की माँग को लेकर अनेक राजनीतिक संगठन बने।

श्रीलंका में दो समुदायों के बीच एक-दूसरे के प्रति अविश्वास ने बड़े टकराव का रूप धारण कर लिया।

शीघ्र ही यह टकराव गृहयुद्ध में परिवर्तित हो गया।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  आधुनिक लोकतान्त्रिक .... साझेदारी है।

(क) आधुनिक लोकतान्त्रिक व्यवस्था का आधार ही सत्ता की भागीदारी पर टिका हुआ है।

(ख) विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के बीच बँटी सत्ता का अनुपालन करते हुए ये तीनों अंग प्रशासनिक तन्त्र को सफल बनाते हैं।

(ग) लोकतन्त्र में विभिन्न सामाजिक समूहों के मध्य संघर्ष और टकराव रोकने का एक सरलतम उपाय सत्ता की साझेदारी है।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**
  राजनीतिक .... स्रोत है।

(क) राजनीतिक सत्ता का बँटवारा नहीं किया जा सकता—इसी धारणा के विरुद्ध सत्ता की साझेदारी के विचार की उत्पत्ति हुई थी।

(ख) लम्बे समय से यही माना जाता था कि सारी शक्तियाँ एक व्यक्ति या किसी विशेष स्थान पर रहने वाले व्यक्ति-समूह के हाथ में रहनी चाहिए।

(ग) लोकतन्त्र का एक बुनियादी सिद्धान्त है कि जनता ही सम्पूर्ण राजनीति शक्ति का स्रोत है।

2 संघवाद

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (घ) **6.** (ग)
7. (ग) **8.** (ख)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **ऊपर दिए गए दोनों मानचित्र भारत के इतिहास के अलग-अलग कालखण्डों को दर्शाते हैं इन दोनों मानचित्रों का अध्ययन करके बताइए कि आप इन दोनों को किन-किन प्रकार से भिन्न पाते हैं।**

उत्तर– इन दोनों मानचित्रों के अध्ययन से निम्न बातें स्पष्ट होती हैं–

(i) पहल मानचित्र में अविभाजित भारत है, जबकि दूसरे मानचित्र में भारत का वर्तमान स्वरूप है।

(ii) पहले मानचित्र में भारत एक बिखरी हुई राजनीतिक व्यवस्था नजर आता है, वहीं दूसरा मानचित्र भारत के एक सुदृढ राजनीतिक व्यवस्था को दर्शाता है।

(iii) पहले मानचित्र में दिख रहे बहुत से राज्य समाप्त हो गए या उनके नाम बदल दिए गए। भाषायी आधार पर राज्यों का पुनर्गठन हुआ।

कूट आधारित प्रश्न

- **भारत की राजभाषा कौन-सी है?**

उत्तर–(क) (i) व (ii)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **सरकार के विभिन्न स्तरों के बीच विवाद की स्थिति में निम्न में से ____________ अम्पायर की भूमिका निभाता है?**

उत्तर– (घ) सर्वोच्च न्यायालय

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर–(घ) (iv) (ii) (iii) (i)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **संघवाद से जुड़ा कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर–(ग) केवल (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर–(क) सत्य (ख) असत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. भारत की संघीय व्यवस्था की द्वितीय परीक्षा भाषा-नीति के आधार पर हुई। भारतीय संविधान में किसी एक भाषा को राष्ट्रभाषा का दर्जा नहीं दिया गया है। यह जानना आवश्यक है कि हिन्दी को राजभाषा माना गया क्योंकि भारत की सम्पूर्ण जनसंख्या में लगभग 40 प्रतिशत से अधिक लोगों की मातृभाषा हिन्दी है। पूरे भारत में हिन्दी के साथ और भी भाषाएँ बोली जाती हैं, इसलिए अन्य भाषाओं के संरक्षण के कई दूसरे उपाय किए गए। भारतीय संविधान में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य 21 भाषाओं को अनुसूचित भाषा का दर्जा प्राप्त है। केन्द्र सरकार के किसी पद का उम्मीदवार इनमें से किसी भी भाषा को विकल्प के रूप में चुनकर परीक्षा दे सकता है। सभी राज्यों की अपनी भिन्न-भिन्न राजभाषाएँ हैं और राज्यों का अपना अधिकांश कार्य अपनी राजभाषा में ही होता है।
2. भारतीय संविधान संघ और राज्यों के अधिकारों को तीन सूचियों में बाँटकर शक्ति का बँटवारा करता है।
3. जब केन्द्र और राज्य सरकारों से शक्तियाँ लेकर स्थानीय सरकारों को दी जाती हैं, तो इसे सत्ता का विकेन्द्रीकरण (Decentralisation) कहते हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. जब केन्द्र और राज्य सरकारों से शक्तियाँ लेकर स्थानीय सरकारों को सौंप दी जाती हैं तो इसे सत्ता का विकेन्द्रीकरण कहते हैं। इसमें तीसरे स्तर को स्थानीय शासन कहा जाता है। स्थानीय शासन का महत्व निम्नलिखित है—

   (i) अनेक समस्याओं का निपटारा स्थानीय स्तर पर ही बढ़िया ढंग से हो सकता है क्योंकि लोगों को अपने क्षेत्र की समस्याओं की अच्छी समझ होती है।

   (ii) लोगों को इस बात की भी जानकारी होती है कि पैसा कहाँ खर्च किया जाए और चीजों का अधिक कुशलता से उपयोग किस तरह किया जा सकता है।

   (iii) स्थानीय स्तर पर लोगों को फैसलों में सीधे भागीदार बनाना भी सम्भव हो जाता है। इससे लोकतान्त्रिक भागीदारी की आदत पड़ती है।

इस प्रकार स्थानीय सरकारों की स्थापना स्वशासन के लोकतान्त्रिक सिद्धान्त को वास्तविक बनाने का सबसे अच्छा तरीका है।

2. इस संशोधन द्वारा निम्नलिखित प्रावधानों के माध्यम से स्थानीय स्वशासन को मजबूत किया गया है—

(i) स्थानीय स्वशासी निकायों के चुनाव नियमित रूप से कराना संवैधानिक बाध्यता है।

(ii) निर्वाचित स्वशासी निकायों के सदस्य तथा पदाधिकारियों के पदों में अनुसूचित जातियों, जनजातियों और पिछड़ी जातियों के लिए सीटें आरक्षित होती हैं।

(iii) कम-से-कम एक तिहाई पद महिलाओं के लिए आरक्षित रखे जाते हैं।

(iv) हर राज्य में स्थानीय सरकार के चुनाव कराने के लिए राज्य चुनाव आयोग नामक स्वतन्त्र संस्था का गठन किया गया है।

(v) राज्य सरकारों को अपने राजस्व और अधिकारों का कुछ हिस्सा इन स्थानीय निकायों को देना पड़ता है।

3. भारत में भाषायी आधार पर बहुत अधिक विभिन्नता पाई जाती है। भारत में संघात्मक शासन लाने के लिए एवं उसे सफल बनाने के लिए राज्यों को भाषा के आधार पर पुनर्गठित किया गया। नए राज्यों को गठित करने के लिए, सन् 1950 के दशक में, भारत के अनेक पुराने राज्यों की सीमाएँ बदलनी पड़ीं। ऐसा इसलिए किया गया था ताकि एक भाषा को बोलने वाले एक राज्य में आ जाएँ। कुछ अन्य राज्यों का गठन संस्कृति, भूगोल के आधार पर किया गया। ऐसे राज्यों में नागालैण्ड, उत्तराखण्ड और झारखण्ड जैसे राज्य शामिल हैं। भाषा के आधार पर राज्य का गठन करते समय राजनेताओं के मन में था कि कहीं इससे देश टूट न जाए। किन्तु हमारा अनुभव बताता है कि भाषायी आधार पर राज्य बनाने से, देश ज्यादा एकीकृत और मजबूत हुआ। इससे, प्रशासन भी पहले की अपेक्षा कहीं अधिक सुविधाजनक हो गया।

4. **संघात्मक शासन की स्थापना के दो प्रमुख तरीके निम्नलिखित हैं—**

(i) दो या दो से अधिक स्वतन्त्र राट्रों को एक साथ लाकर एक बड़ी इकाई गठित करके संघ का गठन किया जाता है। इसमें सभी स्वतन्त्र राष्ट्र अपनी सम्प्रभुता के साथ रहते हैं, अपनी अलग-अलग पहचान बनाए रखते हैं और अपनी सुरक्षा और खुशहाली बढ़ाते हैं। इसके उदाहरण हैं—संयुक्त राज्य अमेरिका, स्विट्जरलैण्ड और ऑस्ट्रेलिया। इस व्यवस्था में प्रान्तों को समान अधिकार प्राप्त होता है।

(ii) दूसरा तरीका है, एक बड़े देश द्वारा अपनी आन्तरिक विविधता को ध्यान में रखते हुए राज्यों का गठन करना और फिर राज्य और राष्ट्रीय सरकार के बीच सत्ता का बँटवारा कर देना। भारत, बेल्जियम और स्पेन इसके उदाहरण हैं। इस श्रेणी में, राज्यों से केन्द्र सरकार अधिक शक्तिशाली होती है। सामान्यत: इस व्यवस्था में विभिन्न राज्यों को समान अधिकार दिए जाते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत का संघात्मक स्वरूप अन्य संघों की अपेक्षा इस प्रकार से भिन्न है कि इसमें एकात्मक शासन की अनेक विशेषताएँ पाई जाती हैं—

(i) केन्द्र के पक्ष में शक्तियों का वितरण। (ii) संघ व राज्यों के लिए एक ही संविधान।
(iii) इकहरी नागरिकता। (iv) एकीकृत न्याय-व्यवस्था।
(v) संकटकाल में एकात्मक रूप।
(vi) संसद को राज्यों के पुनर्गठन की शक्ति।
(vii) राज्यसभा में राज्यों का असमान प्रतिनिधित्व।
(viii) राष्ट्रपति द्वारा राज्यपालों की नियुक्ति।
(ix) संवधान-संशोधन प्रक्रिया में संघ की सर्वोच्चता।
(x) अन्तर्राज्यीय व क्षेत्रीय परिषद्।

2. **राज्य सूची**—इसके अन्तर्गत पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि और सिंचाई जैसे प्रान्तीय और स्थानीय महत्त्व के विषय आते हैं। राज्य सूची (State List) में वर्णित विषयों के बारे में केवल राज्य सरकार को ही कानून बनाने का अधिकार प्राप्त है।

समवर्ती सूची—इसके अन्तर्गत शिक्षा, वन, मजदूर संघ, विवाह, गोद लेना और उत्तराधिकार जैसे विषय आते हैं। समवर्ती सूची (Concurrent List) में वर्णित विषय केन्द्र के साथ राज्य सरकारों के साझे अधिकार क्षेत्र में आते हैं।

इस सूची में वर्णित विषयों पर केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों दोनों को ही कानून बनाने का अधिकार प्राप्त है। लेकिन टकराव की स्थिति में केन्द्र सरकार द्वारा बनाया कानून ही मान्य होता है।

3. सन् 1947 में एक बहुत ही दुखद और रक्तरंजित विभाजन के बाद भारत को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। स्वतन्त्रता के कुछ समय पश्चात् ही अनेक स्वतन्त्र रजवाड़े भारत में शामिल हो गए। भारतीय संविधान में भारत को राज्यों का संघ घोषित किया गया है।

संविधान ने मौलिक रूप से दो स्तरीय शासन-व्यवस्था का प्रावधान किया था—

(i) संघ सरकार (केन्द्र सरकार) (ii) राज्य सरकारें।

केन्द्र सरकार को पूरे भारतीय संघ का प्रतिनिधित्व करना था। बाद में पंचायतों और नगरपालिकाओं के रूप में संघीय शासन का एक तीसरा स्तर भी जोड़ा गया। किसी भी संघीय व्यवस्था की तरह हमारे यहाँ भी तीनों स्तर की शासन-व्यवस्थाओं के अपने भिन्न-भिन्न अधिकार क्षेत्र हैं। संविधान में स्पष्ट रूप से केन्द्र और राज्य सरकारों के मध्य विधायी अधिकारों को तीन भागों अथवा सूचियों में विभक्त किया गया है। ये तीन सूचियाँ निम्नलिखित हैं—

(i) संघ सूची (ii) राज्य सूची और (iii) समवर्ती सूची।

संघ सूची—इसके अन्तर्गत प्रतिरक्षा, विदेशी मामले, बैंकिंग, संचार और मुद्रा जैसे राष्ट्रीय महत्त्व के विषय आते हैं। पूरे देश के लिए इन मामलों में एक तरह की नीतियों की आवश्यकता होती है। इसी कारण इन विषयों को संघ सूची (Union List) में सम्मिलित किया गया है। संघ सूची में वर्णित विषयों के बारे में कानून बनाने का अधिकार केवल केन्द्र सरकार को होता है।

राज्य सूची—इसके अन्तर्गत पुलिस, व्यापार, वाणिज्य, कृषि और सिंचाई जैसे प्रान्तीय और

स्थानीय महत्त्व के विषय आते हैं। राज्य सूची (State List) में वर्णित विषयों के बारे में केवल राज्य सरकार को ही कानून बनाने का अधिकार प्राप्त है।

समवर्ती सूची—इसके अन्तर्गत शिक्षा, वन, मजदूर संघ, विवाह, गोद लेना और उत्तराधिकार जैसे विषय आते हैं। समवर्ती सूची (Concurrent List) में वर्णित विषय केन्द्र के साथ राज्य सरकारों के साझे अधिकार क्षेत्र में आते हैं।

इस सूची में वर्णित विषयों पर केन्द्र सरकार व राज्य सरकारों दोनों को ही कानून बनाने का अधिकार प्राप्त है, लेकिन टकराव की स्थिति में केन्द्र सरकार द्वारा बनाया कानून ही मान्य होता है।

जो विषय किसी भी सूची में नहीं आते, वे हमारे संविधान के अनुसार केन्द्र सरकार के अधिकार-क्षेत्र में चले जाते हैं।

4. भारत में संघीय व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

1. संघवाद केन्द्र, राज्य और स्वशासन वाली संस्थाओं के खम्भों पर टिका है।

2. केन्द्र तथा राज्य सरकारें एक ही नागरिक-समूह पर शासन करती हैं, परन्तु कानून बनाने तथा कर उगाने के उनके अधिकार-क्षेत्र अलग-अलग हैं।

3. संघवाद में संविधान केन्द्र तथा राज्यों के बीच अधिकार तथा शक्तियों का विभाजन करके प्रत्येक के अस्तित्व तथा अधिकारों की सुरक्षा की गारण्टी देता है।

4. संविधान के मौलिक प्रावधानों के अनुसार, एक स्तर की सरकार अकेले ही नहीं बदल सकता है। यह परिवर्तन दोनों स्तरों पर ही होगा।

5. सर्वोच्च न्यायलय संविधान तथा सरकार के अधिकारों की व्याख्या करने का अधिकारी होता है।

6. केन्द्र तथा राज्य सरकारों के विवादों को सुलझाने में सर्वोच्च न्यायालय निर्णायक भूमिका निभाता है।

7. वित्तीय स्तर पर स्वतन्त्रता को निश्चित करने के लिए विभिन्न स्तरों पर सरकारों के राजस्व-प्राप्ति के अलग-अलग स्रोत निर्धारित कर दिए गए हैं।

8. संघवाद की मुख्य विशेषता राष्ट्र की एकता, अखण्डता और सुरक्षा को बनाए रखने में निहित है।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  सामान्य रूप .... करते हैं।

(क) सामान्य रूप से प्रभुसत्ता का विभाजन संघीय एवं राज्य सरकारों के मध्य उनके संविधान में वर्णित होता है।

(ख) साधारणतया संघीय सरकार को ऐसे कार्यों के संचालन का भार दिया जाता है।

(ग) क्षेत्र विस्तार खर्चीला होने के कारण राज्य स्वयं चलाने में कठिनाई अनुभव करते हैं।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

  केन्द्र और .... मिला है।

  (क) केन्द्र और राज्यों के सम्बन्धों में होने वाले परिवर्तनों ने संघवाद को नवीन शक्ति प्रदान की है।

  (ख) सत्ता की साझेदारी की संवैधानिक व्यवस्था वास्तव में किस प्रकार ढलेगी यह इस बात पर निर्भर करती है कि शासक और नेता किस प्रकार की व्यवस्था का अनुसरण करते हैं।

  (ग) भारत में लगभग 70 वर्षों तक केन्द्र में एक ही दल का शासन रहा है।

3 जाति-धर्म और लैंगिक मसले

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (क) **6.** (ग)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिया गया विश्व के विभिन्न क्षेत्रों की राट्रीय संसदों में महिलाओं की भागीदारी दर्शाता है। आप इससे क्या निष्कर्ष निकालते हैं? और क्या आपके अनुसार संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व समाज में समानता को द्योतक है?**

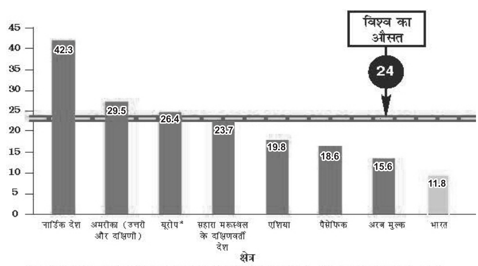

*यूरोप–ओ.एस.सी.ई. (ऑर्गेनाइजेशन फॉर सिक्युरिटी एंड कोऑपरेशन इन यूरोप); नॉर्डिक देशों (डेनमार्क, फिनलैंड, आइसलैंड, नॉर्वे और स्वीडन) को छोड़कर ओ.एस.सी.ई. के सदस्य देश।
टिप्पणी : यह आँकड़े 1 अक्तूबर 2018 तक प्रत्यक्ष निर्वाचित सदनों में महिलाओं के प्रतिशत की स्थिति बताते हैं।
स्रोत : www.ipu.org/wmn-e/world.htm

उत्तर– दिए गए आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि विश्व की संसदों में महिलाओं की भागीदारी काफी कम है। इसमें विकसित और विकासशील दोनों ही राष्ट्र शामिल हैं। भारत का अरब और अफ्रीकी देशों से भी पीछे रहना शर्मनाक है।

संसद में महिलाओं का प्रतिनिधित्व समा में समानता का द्योतक है।

कूट आधारित प्रश्न

- **धर्मनिरपेक्ष राज्य का अर्थ है–**

उत्तर– ( ) केवल (iv)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **श्रीलंका का मुख्य धर्म ______________ है।**

उत्तर– (घ) बौद्ध धर्म

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (ख) (ii) (i) (iv) (iii)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (ख) (ii) और (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर–(क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. भारतीय समाज की एक बहुत बड़ी विडंबना, जातिवाद रही है। जातिवाद ने भारतीय समाज को अलगाव की भावना में जकड़े रखा है। इससे भारत की बड़ी आबादी को अत्याचार सहने पड़ते हैं। जाविाद से राष्ट्रीय ओर सामाजिक एकता को खतरा रहता है।
2. 19वीं शताब्दी में भारतीय समाज सुधारकों ने महिलाओं के अधिकारों के लिए आंदोलन किए। राजा राममोहन राय ने विधवा विवाह ओर सती प्रथा के उन्मूलन के लिए काम किया। ज्योतिबा फूले ओर रमाबई जेसे समाज सुधारकों ने महिला शिक्षा के लिए काम किया। इस क्रम में महातमा गांधी, डॉ० अंबेडकर, ऐनीबेसेन्ट आदि कई महान समाज सुधारकों ने कार्य किए।
3. लोकतंत्र तभी सफल हो सकता हे, जब नागरिकों में परस्पर समानता हो तथा सबको उचित प्रतिनिधित्व मिले। भारतीय समाज धर्म, जाति एवंलैंगिक आधार पर विभाजित है। जिस कारण प्रभावशाली वर्ग ही सत्ता के शिखर पर होते हैं। वे अपने से कमजोर वर्ग के अधिकारों के प्रति उदासीन बने रहते हें या उनका विरोध करते हैं। इससे समाज में टकराव होते हें, जो लोकतंत्र के विकास में बाधक है। भारतीय लोकतंत्र के विकास के लिए इन विभाजनों का खात्मा आवश्यक है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. सभी धर्मों में निम्नलिखित मानवीय मूल्य समान हैं—

(i) पवित्र बनो। (ii) सहिष्णु बनो। (iii) सब धर्मों का आदर करो। (iv) सत्य का पालन करो। (v) परहित की भावना से प्रेरित जीवन जियो।

2. जातिवाद को दूर करने के उपाय—

(i) जातिवाद को मिटाने के लिए अन्तर्जातीय विवाह किए जाने चाहिएँ।

(ii) जातिवाद का पोषण करने वाले संगठनों को समाप्त कर दिया जाना चाहिए।

(iii) जातिसूचक उपनाम लिखने पर कानूनी रोक लगा देनी चाहिए।

(iv) चुनावों को जातिवाद का आधार मानकर चलने वाले राजनीतिक दलों को प्रतिबन्धित कर दिया जाना चाहिए।

(v) आरक्षण का जातिगत आधार तुरन्त समाप्त कर देना चाहिए।

3. नारीवादी आन्दोलन की विशेषताएँ—

(i) इस आन्दोलन ने समस्त नारी जाति को संगठित होने का आह्वान किया।

(ii) इस आन्दोलन ने नारी को परिवार और राजनीति में समानता देने की माँग उठाई।

(iii) इस आन्दोलन ने नारी को शिक्षा व रोजगार के समान अवसर उपलब्ध कराने की माँग की।

(iv) इस आन्दोलन ने सार्वजनिक जीवन में नारी की भूमिका बढ़ाने पर जोर दिया।

(v) इस आन्दोलन की सबसे बड़ी विशेषता यह रही कि सब महिलाएँ बड़े सब्र, उत्साह व समझदारी से अपनी माँगों के लिए संघर्षरत रहीं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. सरकार द्वारा लैंगिक समानता और महिला सशक्तीकरण के क्षेत्र में उठाए गए कदम निम्नलिखित हैं—

(i) स्त्रियों के लिए शिक्षा की उचित व्यवस्था करके उन्हें शिक्षित बनाया गया।

(ii) समाज के सभी वर्गों की स्त्रियों को शिक्षित बनाया गया।

(iii) स्त्रियों को रोजगार सम्बन्धी प्रशिक्षण देकर उन्हें आर्थिक दृष्टि से स्वावलम्बी बनाया गया।

(iv) स्त्रियों को पारिवारिक सम्पत्ति में कानून द्वारा समान अधिकार प्रदान किये गए।

(v) स्त्रियों को सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में समान अधिकार दिये गए।

(vi) दहेज-प्रथा, पर्दा-प्रथा, बाल-विवाह तथा बहु-विवाह जैसी कुरीतियों को कानूनी रूप से दण्डनीय बनाया गया।

(vii) स्त्रियों के लिए विज्ञान, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी की शिक्षा पाने की समुचित व्यवस्था की गई।

(viii) पुरुषों की संकुचित और स्वार्थी मानसिकता से स्त्रियों की कानून द्वारा सुरक्षा की गई।

(ix) स्त्रियों के हितों को संरक्षण देने के लिए कानूनी व्यवस्था सुनिश्चित की।

(x) भ्रूण हत्या व प्रसवपूर्व लिंग-परीक्षण के लिए कानूनी दण्ड की व्यवस्था की।

स्त्री और पुरुष परिवार के रथ के दो पहिए हैं। दोनों पर समान भार और उत्तरदायित्व रहता है। किसी एक के भी कमजोर होने से रथ रुक सकता है। दोनों ही समाज के दो आधार-स्तम्भ हैं। समाज-रूपी भवन तब तक ही टिका है, जब तक दोनों स्तम्भ मजबूत हैं।

2. **अस्पृश्यता**—अस्पृश्यता एक विचार है जिसके अनुसार निम्न जाति का व्यक्ति उच्च जाति के व्यक्ति को छू नहीं सकता है। अगर वह ऐसा करता है तो उसे कड़ी सजा मिलती है। चाहे संवैधानिक प्रावधानों ने अस्पृश्यता की प्रथा को खत्म कर दिया है, परन्तु यह प्रथा अभी पूरी तरह खत्म नहीं हुई है।

आज के वैज्ञानिक व आधुनिक युग में जबकि अस्पृश्यता सरीखी सामाजिक बुराइयों को समूल नष्ट हो जाना चाहिए था, फिर भी किन्हीं कारणों से इनका वर्चस्व विकासशील देशों में अभी-भी बना हुआ है। भारतीय समाज में, छुआछूत को समाप्त करने के लिए अनक कदम उठाए गए हैं। 'छुआछूत' को कानूनी तौर पर नकार दिया गया है। छुआछूत के अमल पर कानून में दण्ड का प्रावधान है। समाज के दलित व शोषित वर्ग को मुख्य धारा में लाने के लिए सरकार ने कई स्तर पर व्यवस्था की है—

(i) उन्हें नि:शुल्क शिक्षा दी गई है।

(ii) राशन, रसोई के लिए गैस सिलेण्डर आदि में काफी आर्थिक छूट दी गई है।

(iii) रोजगार में उन्हें आरक्षित श्रेणी में रखा गया है।

3. दहेज-प्रथा से समाज कमजोर होता है, और समाज में कई नकारात्मक प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं। दहेज-प्रथा ऐसी सामाजिक कुरीति है जिसके अस्तित्व के कारण न जाने कितनी विवाहिताओं का जीवन नरक बन जाता है और कितने ही गरीब परिवार चरमराकर मिट जाते हैं। दहेज प्रथा को समाप्त करने के दो ही सम्भावित तरीके हैं—

(i) दहेज प्रथा के अमानवीय व अनैतिक पक्ष को समाज में उजागर करके इस कुप्रथा को समाप्त किया जा सकता है। इसके लिए, लोगों को जागरूक बनाना होगा ताकि वे दहेज के कुप्रभावों को समझकर इस कुप्रथा से तौबा कर लें। सामाजिक जागरण के द्वारा यह कुप्रथा समाप्त हो पाएगी, इसकी सम्भावना कम है। क्योंकि लोभ से छुटकारा पाना इतना आसान नहीं है।

(ii) दहेज-प्रथा से छुटकारा पाने का दूसरा और ठोस तरीका है—इस सम्बन्ध में कानून बनाना। यदि इस बारे में कानून बनाकर उनका सख्ती से पालन सुनिश्चित किया जाय तो यह कुप्रथा नि:सन्देह समाप्त हो जाएगी।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

पहले अधिकांश .... माँग उठाई।

(क) पहले अधिकांश समाजों में केवल पुरुष ही सार्वजनिक भूमिका निभा सकते थे तथा मत देने या चुनाव लड़ने का कार्य कर सकते थे।

(ख) राजनीति में लैंगिक समानता की माँग उठने से, विश्व के अनेक क्षेत्रों में स्त्रियों ने संगठित होकर बराबरी का अधिकार पाने के लिए कठोर संघर्ष किया।

(ग) उन्होंने मताधिकार देने, वैधानिक रूप से समान मानने तथा शिक्षा पाने के अधिकारों की माँग उठाई।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

केन्द्र और .... मिला है।

(क) जनगणना में प्रत्येक दस वर्ष बाद सभी नागरिकों के धर्म को भी दर्ज किया जाता है। जनगणना विभाग के कर्मचारी घर-घर जाकर लोगों से उनके बारे में सूचनाएँ एकत्र करते हैं।

(ख) लोग अपने धर्म, जाति इत्यादि बातों के बारे में जो कुछ बताते हैं, ठीक वैसा ही फॉर्म में दर्ज किया जाता है।

(ग) यदि कोई व्यक्ति कहता है कि वह नास्तिक है या किसी धर्म को नहीं मानता है तो फॉर्म में वैसा ही दर्ज कर दिया जाता है। इसी आधार पर एकत्रित सूचनाओं के कारण देश के विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोगों की संख्या और उनके अनुपात में आए किसी बदलाव के बारे में हमारे पास विश्वसनीय सूचनाएँ होती हैं।

4 राजनीतिक दल

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (घ) **6.** (ग) **7.** (ख) **8.** (क)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(ख) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **उपर्युक्त कार्टून को देखकर बताइए कि क्या मीडिया पर नियन्त्रण किसी सरकार को विपक्षी दलों की अपेक्षा अधिक लाभ देता है और क्या मीडिया जनमत को इस हद तक प्रभावित कर सकता है कि सत्ताधारी दल की सफलता अवश्यम भावी हो जाए।**

उत्तर– मीडिया पर नियंत्रण करके सरका को अवश्य ही विपक्षों दलों की अपेक्षा अधिक लाभ मिलता है। इससे वह अपने बारे में अच्छी बातों को प्रसारित कराती है तथा विपक्ष के खिलाफ दुष्प्रचार चलाया जाता है। मीडिया का समाज पर प्रभाव अवश्य है। परंतु आज सोसल मीडिया के युग में जनता (विशेषकर साक्षर) को बेवकूफ बनाना इतना आसान नहीं रह गया है। लेकिन फिर भी मीडिया जनतत को काफी हद तक प्रभावित कर सकता ह।

कूट आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में कौन-सा कार्य राजनीतिक दल का नहीं है?**

उत्तर– (घ) केवल (iv)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **चुनाव लड़ने और सरकार में सत्ता सँभालने के लिए एकजुट हुए लोगों के समूह को __________ कहते हैं।**

उत्तर– (क) रानीतिक दल

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (ग) (iii) (i) (iv) (ii)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (ग) केवल (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

  (क) सत्य (ख) सत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. राजनीतिक दलों के गठन के तीन आधार निम्नलिखित हैं—

(क) विचारधारा के आधार पर—अधिकतर राजनीतिक दल एक विशेष विचारधारा के आधार पर गठित होते हैं; जैसे—भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी साम्यवाद के आधार पर गठित राजनीतिक दल है।

(ख) भाषाई आधार पर—हमारे देश में बहुत से राजनीतिक दल भाषाई आधार पर गठित हुए हैं जैसे 'द्रविड़ मुनेत्र कड़गम' तमिल भाषा के आधार पर गठित राजनीतिक दल है।

(ग) क्षेत्रीय अस्मिता के आधार पर—बहुत से राजनीतिक दल क्षेत्रीय आधार पर भी गठित होते हैं जेसे—'असम गण परिषद।'

2. **राजनीतिक दल–**किसी क्षेत्र विशेष में संगठित राजनीतिक दल पाँच वर्षों तक राजनीतिक क्रियाकलापों में संलग्न रहते हुए चुनाव आयोग द्वारा निर्धारित किसी चुनाव में सीटें जीत लेता

है। क्षेत्रीय राजनीतिक दल की मान्यता प्राप्त कर लेता है।

- **राष्ट्रीय लोकदल**—इस दल के अध्यक्ष **श्री जयंत चौधरी** हैं तथा इसका चुनाव चिह्न **'हैण्ड पम्प'** है। यह दल उत्तर प्रदेश में प्रभावी है।
- **राष्ट्रीय जनता दल**—यह बिहार का प्रभावी राजनीतिक दल है। इसके अध्यक्ष **लालू प्रसाद यादव** हैं तथा चुनाव चिह्न **'लालटेन'** है।
- **अकाली दल**—पंजाब में प्रभावी यह दल सिक्खों के अधिकारों के लिए प्रयासरत रहता है। सुखबीर **सिंह बादल** इस दल के नेता हैं। दल का चुनाव चिह्न **'तराजू'** है।
- **तेलुगूदेशम्**—इस दल की स्थापना 1983 ई० में **एन० टी० रामाराव** ने की थी। वर्तमान में इस दल के अध्यक्ष **श्री चन्द्रबाबू नायडू** हैं। इसका चुनाव चिह्न **साइकिल** है। यह दल आन्ध्र प्रदेश का एक प्रभावी क्षेत्रीय दल है।

3. द्वि-दलीय पद्धति गुण–

(i) दो प्रमुख राजनीतिक दल होने से मतदाताओं में भ्रम की स्थिति नहीं होती है।

(ii) जोड़-तोड़ व गठबंधन की राजनीति से निजात।

द्वि-दलीय पद्धति दोष–

(i) मतदाताओं के पास ज्यादा विकल्प का न होना।

(ii) किसी एक दल के निरंकुश हो जाने का भय।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एकदलीय शासन प्रणाली—एकदलीय व्यवस्था को अच्छा विकल्प नहीं माना जा सकता, क्योंकि यह लोकतान्त्रिक विकल्प नहीं है। किसी भी लोकतान्त्रिक व्यवस्था में कम से कम दो दलों को राजनीतिक सत्ता के लिए चुनाव में प्रतिद्वन्द्विता करने की अनुमति तो होनी ही चाहिए। साथ ही उन्हें सत्ता में आ सकने का उचित अवसर भी मिलना चाहिए।

द्विदलीय शासन प्रणाली—बहुत से देशों में सत्ता साधारणतया दो मुख्य दलों के बीच ही परिवर्तित होती रही है। वहाँ अन्य दल भी होते हैं वे भी चुनाव लड़कर कुछ सीटों पर जीत प्राप्त कर सकते हैं लेकिन केवल दो ही दल बहुमत पाने और सरकार बनाने के प्रबल दावेदार होते हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका, ब्रिटेन ऐसी ही दो दलीय व्यवस्था वाले देश हैं।

बहुदलीय शासन प्रणाली—जब अनेक दल सत्ता के लिए होड़ में हों और दो दलों से अधिक के लिए अपने बलबूते या दूसरों से गठबन्धन करके सत्ता में आने का ठीक-ठाक अवसर हो, तो यह बहुदलीय व्यवस्था (Multiparty System) कहलाती है। भारत में भी ऐसी ही बहुदलीय व्यवस्था है।

2. राजनीतिक दलों के गठन के तीन आधार निम्नलिखित हैं—

(क) विचारधारा के आधार पर—अधिकतर राजनीतिक दल एक विशेष विचारधारा के आधार पर गठित होते हैं; जैसे—भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी साम्यवाद के आधार पर गठित राजनीतिक दल है।

(ख) भाषाई आधार पर—हमारे देश में बहुत से राजनीतिक दल भाषाई आधार पर गठित हुए हैं जैसे 'द्रविड़ मुनेत्र कड़गम' तमिल भाषा के आधार पर गठित राजनीतिक दल है।

(ग) क्षेत्रीय अस्मिता के आधार पर—बहुत से राजनीतिक दल क्षेत्रीय आधार पर भी गठित होते हैं जेसे—'असम गण परिषद।'

3. जब किसी बहुदलीय व्यवस्था में अनेक दल गठबंधन करके सरकार बनाते हैं तो इस प्रकार की सरकार को गठबंधन सरकार या मिली-जुली सरकार कहते हैं। 1998 ई० में अटलबिहारी वाजपेयी ने 13 दलों के साथ मिलकर इसी प्रकार की एक मिली-जुली सरकार बनाई थी।

4. **द्विदलीय शासन प्रणाली**—बहुत से देशों में सत्ता साधारणतया दो मुख्य दलों के बीच ही परिवर्तित होती रही है। वहाँ अन्य दल भी होते हैं वे भी चुनाव लड़कर कुछ सीटों पर जीत प्राप्त कर सकते हैं लेकिन केवल दो ही दल बहुमत पाने और सरकार बनाने के प्रबल दावेदार होते हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका, ब्रिटेन ऐसी ही दो दलीय व्यवस्था वाले देश हैं।

5. **राजनीतिक दल समान विचार तथा उद्देश्य रखने वाले सदस्यों का वह ऐच्छिक संगठन है जो लोकतन्त्र की संरचना, चुनावी राजनीति, सरकार के गठन और संचालन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।** राजनीतिक दल सत्ता की भागीदारी के वाहक, लोकतान्त्रिक राजनीति में सामाजिक समूहों की ओर से तोल-मोल करने का माध्यम होते हैं।

6. **एकदलीय शासन प्रणाली**—एकदलीय व्यवस्था को अच्छा विकल्प नहीं माना जा सकता, क्योंकि यह लोकतान्त्रिक विकल्प नहीं है। किसी भी लोकतान्त्रिक व्यवस्था में कम से कम दो दलों को राजनीतिक सत्ता के लिए चुनाव में प्रतिद्वन्द्विता करने की अनुमति तो होनी ही चाहिए। साथ ही उन्हें सत्ता में आ सकने का उचित अवसर भी मिलना चाहिए।

7. **बहुदलीय शासन प्रणाली**—जब अनेक दल सत्ता के लिए होड़ में हों और दो दलों से अधिक के लिए अपने बलबूते या दूसरों से गठबन्धन करके सत्ता में आने का ठीक-ठाक अवसर हो, तो यह बहुदलीय व्यवस्था (Multiparty System) कहलाती है। भारत में भी ऐसी ही बहुदलीय व्यवस्था है, इस व्यवस्था में कई दल गठबन्धन (Coalition) बनाकर भी सरकार का गठन कर लेते हैं। **जब किसी बहुदलीय व्यवस्था में अनेक दल चुनाव लड़ने और सत्ता में आने के लिए आपस में हाथ मिला लेते हैं, तो इसे गठबन्धन या मोर्चा कहा जाता है।** अधिकतर यह देखा गया है कि बहुदलीय व्यवस्था बहुत घालमेल वाली लगती है और देश को राजनीतिक अस्थिरता की ओर ले जाती है लेकिन इसके साथ ही इस प्रणाली में विभिन्न हितों और विचारों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व भी प्राप्त होता है।

8. भारत के प्रमुख राजनीतिक दलों की नीतियाँ निम्नलिखित हैं—

   (i) भारतीय राट्र कांग्रेस—इस पार्टी ने धर्मनिरपेक्षता और कमजोर वर्गों तथा अल्पसंख्यक समुदायों के हितों को अपना मुख्य एजेंडा बनाया है।

   (ii) भारतीय जनता पार्टी—यह पार्टी भारत की प्राचीन संस्कृति और मूल्य, दीनदयाल उपाध्याय के मानवतावाद एवं अन्त्योदय से प्रेरणा लेकर एक मजबूत और आधुनिक भारत बनाने की पक्षधर है।

   (iii) बहुजन समजा पार्टी—दलितों और कमजोर वर्ग के लोगों के कल्याण ओर उनके हितों की रक्षा के मुद्दों पर यह पार्टी कार्य करती है।

   (iv) भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी—यह पार्टी देश में पूँजीवाद और सांप्रदायिकता का विरोध करती है। यह समाजवाद और लेनिनवाद को बढ़ावा देती है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. राजनीतिक दल लोगों का एक ऐसा समूह है जो साथ मिलकर चुनाव लड़ते हैं, सत्ता में भागीदारी करते हैं, समाज के विकास के लिए कुछ नीतियों एवं कार्यक्रमों पर सहमत होते हैं तथा उन पर मिलकर काम करते हैं।
   लोकतंत्र में राजनीतिक दलों का महत्त्व—हमें विश्व के लगभग सभी छोटे-बड़े, नए-पुराने, विकसित—अविकसित देशों में राजनीतिक दल दिखाई पड़ते हैं।
   आपको ज्ञात है कि बड़े समाजों के लिए प्रतिनिधित्व-आधारित लोकतन्त्र की आवश्यकता होती है। जब समाज जटिल तथा बड़े हो जाते हैं, तब उन्हें भिन्न-भिन्न मुद्दों पर विभिन्न विचारों को एकत्रित करने और सरकार के सामने लाने के लिए किसी एक विशिष्ट माध्यम की जरूरत होती है। कई स्थानों से सम्बन्धित क्षेत्रीय प्रतिनिधियों को साथ मिलाने की जरूरत पड़ती है, जिससे कि एक उत्तरदायी सरकार का गठन हो सके। उन्हें प्रशासन का समर्थन करने या उनपर अंकुश रखने, नीति-निर्माण करने, समर्थन एवं विरोध करने के लिए उपकरणों की आवश्यकता रहती है। प्रत्येक प्रतिनिधि प्रशासन की आवश्यकताएँ इस तरह के राजनीतिक दल ही पूरा करते हैं। अत: हम कह सकते हैं कि राजनीतिक दल लोकतन्त्र के अति आवश्यक घटक हैं।
2. भारत में, राजनीतिक दलों के भीतर आन्तरिक लोकतन्त्र की कमी है। अधिकतर राजनीतिक दलों में बैठकों का नियमित समय नहीं है।कई बार, आन्तरिक चुनाव भी लम्बे समय तक सम्पन्न नहीं हो पाते। दल के आम सदस्य व कार्यकर्ता को आन्तरिक क्रियाओं की जानकारी नहीं मिल पाती। कभी-कभी, दल की सत्ता पर काबिज व्यक्ति व्यक्तिगत हित साधने में इस कदर लीन हो जाता है कि विरोध या तो अनसुना कर दिया जाता है, या विरोध कर रहे कार्यकर्ताओं को बाहर का रास्ता दिखा दिया जाता है। कार्यकर्ताओं को नेता में निष्ठा रखने को प्रेरित किया जाता है, न कि पार्टी के सिद्धान्तों में। दल के कार्यों व नीतियों में पारदर्शिता न होने से छोटे कार्यकर्ता असमंजस की स्थिति में रहते हैं। दल के शीर्षस्थ पदों पर परिवारवाद का प्रभाव होने से दल प्रगतिनहीं कर पाता व अपनी सार्वजनिक प्रासंगिकता को खो देता है। असक्षम व अनुभवहीन नेतृत्व होने से दल में असन्तोष व विरोध बढ़ने लगता है, और धनवान व औद्योगिक प्रतिष्ठान के लोग धन-बल के जरिये दल को अपने हिसाब से चलाने लगते हें। जनहित की मूल भावना से दूर होकर राजनीतिक दल कई प्रकार की दुष्प्रवृत्तियों को आमन्त्रित कर लेते हैं, जिसके कारण दल-बदल सरीखा बहुत कुछ अनैतिक होने लगता है।
   इन सब कृत्यों के फलस्वरूप आमजन निराश व कुण्ठित हो जाते हैं, विकास उल्टी दिशा पकड़ लेता है और लोकतन्त्र कमजोर हो जाता है।
3. **भारतीय जनता पार्टी**—पुराने भारतीय जनसंघ को, जिसे श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने सन् 1951 में गठित किया, पुनर्जीवित करके सन् 1980 में यह पार्टी बनाई गई। भारत की प्राचीन संस्कृति और मूल्य, दीनदयाल उपाध्याय के विचार—समग्र मानवतावाद एवं अन्त्योदय से प्रेरणा लेकर मजबूत और आधुनिक भारत बनाने का लक्ष्य, भारतीय राष्ट्रवाद और राजनीति की इसकी अवधारणा में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद अर्थात् हिन्दुत्व एक प्रमुख तत्त्व है। यह पार्टी जम्मू और कश्मीर को क्षेत्रीय व राजनीतिक स्तर पर विशेष दर्जा देने के खिलाफ रही है और वर्तमान में वहाँ से धारा 35A व 370 हटा दी गयी है। यह दल देश में रहने वाले सभी धर्मों

के लोगों के लिए समान नागरिक संहिता बनाने और धर्मांतरण पर रोक लगाने के पक्ष में है। 1990 के दशक में इसके समर्थन का आधार बहुत व्यापक हुआ। पहले यह दल देश के उत्तर और पश्चिमी तथा नगरीय क्षेत्रों तक ही सीमित था। परन्तु इस दशक में इस पार्टी ने दक्षिण, पूर्व, पूर्वोत्तर तथा देश के ग्रामीण क्षेत्रों में अपना आधार बढ़ाया। राष्ट्रीय जनतान्त्रिक गठबन्धन के नेता की भूमिका से यह पार्टी सन् 1998 में सत्ता में आई। गठबन्धन में कई प्रान्तीय और क्षेत्रीय दल शामिल थे। सन् 2019 के लोकसभा चुनाव में 303 (56.01%) सीटें जीतकर सबसे बड़ी पार्टी के रूप में यह आज लोकसभा का नेतृत्व कर रही है।

4. **एकदलीय प्रणाली**—जिस देश में केवल एक ही दल हो और शासन शक्ति का प्रयोग करने वाले सभी सदस्य इस एक ही राजनीतिक दल के सदस्य हों, तो वहाँ की दल प्रणाली को एकदलीय कहा जाता है।

एकदलीय प्रणाली की गुण

(i) एकदलीय शासन प्रणाली में सुदृढ़ शासन स्थापित होता है क्योंकि एक दलीय पद्धति में केवल एक ही दल का नियंत्रण होता है।

(ii) शक्तियों के केंद्रीकरण से घूसखोरी तथा चोरबाजारी का अंत हो जाता है।

(iii) एकदलीय व्यवस्था में जनता में विभाजन तथा गुटबंदी का डर समाप्त हो जाता है तथा राट्रीय एकता बनी रहती है।

एकदलीय प्रणाली के दोष

(i) एकदलीय शासन प्रणाली में जनता का उचित प्रतिनिधित्व नहीं हो पाता क्योंकि इसमें शासन पर नियंत्रण लगाने के लिए विपक्ष नहीं होता।

(ii) एकदलीय पद्धति में तानाशाही, अनुत्तरवादी सरकार जैसे प्रवृत्ति को प्रोत्साहन मिलता है।

(iii) एकदलीय शासन प्रणाली में लोकतांत्रिक भावना का अभाव होता है।

5. भारत में जो राजनीतिक दल सम्पूर्ण भारत में प्रभावी हैं, उन्हें राष्ट्रीय राजनीतिक दल कहा जाता है।

1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस—इसे सामान्यत: कांग्रेस पार्टी कहा जाता है। यह दल संसार के सबसे पुराने दलों में से एक है। यह दल 1885 ई० में गठित हुआ था तथा इसमें कई बार विभाजन हुए। आजादी के बाद अनेक दशकों तक इसने भारतीय राजनीति में प्रमुख भूमिका निभाई। जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में इसने भारत को एक आधुनिक धर्मनिरपेक्ष, लोकतान्त्रिक गणराज्य बनाने का प्रयास किया।

भारतीय जनता पार्टी—पुराने भारतीय जन संघ को जिसे श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने सन् 1951 में गठित किया, पुनर्जीवित करके सन् 1980 में यह पार्टी बनाई गई। भारत की प्राचीन संस्कृति और मूल्य, दीनदयाल उपाध्याय के विचार—समग्र मानवतावाद एवं अन्त्योदय से प्रेरणा लेकर मजबूत और आधुनिक भारत बनाने का लक्ष्य, भारतीय राष्ट्रवाद और राजनीति की इसकी अवधारणा में सांस्कृतिक राष्ट्रवाद अर्थात् हिन्दुत्व एक प्रमुख तत्त्व है।

बहुजन समाज पार्टी—काशीराम के नेतृत्व में सन् 1984 में इस पार्टी का गठन हुआ। बहुजन समाज पार्टी जिसमें दलित, आदिवासी, पिछड़ी जातियाँ और धार्मिक अल्पसंख्यक सम्मिलित हैं, के लिए राजनीतिक सत्ता पाने का प्रयास और उनका प्रतिनिधित्व करने का दावा करती है।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी–मार्क्सवादी (सी०पी०आई०एम०)—सन् 1964 में स्थापित यह पार्टी मार्क्सवाद—लेनिनवाद में आस्था रखती है। यह पार्टी समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और लोकतन्त्र की समर्थक है तथा साम्राज्यवाद और साम्प्रदायिकता की विरोधी है।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (सी०पी०आई०)—भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी सन् 1925 में गठित हुई। मार्क्सवाद, लेनिनवाद, धर्मनिरपेक्षता तथा लोकतन्त्र में इसकी आस्था है।

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी—कांग्रेस पार्टी के विभाजन के पश्चात् सन् 1999 में यह पार्टी बनी। गांधीवादी, धर्मनिरपेक्षता, समता, लोकतन्त्र, सामाजिक न्याय और संघवाद में इस पार्टी की आस्था है।

सर्वभारतीय तृणमूल कांग्रेस—यह पार्टी 1 जनवरी, 1998 को ममता बनर्जी के नेतृत्व में बनी। इसे 2016 में चुनाव आयोग ने राष्ट्रीय राजनीतिक दल के रूप में मान्यता दी। 'पुष्प और तृण' (घास) पार्टी का प्रतीक है। यह धर्मनिरपेक्षता और समाजवाद को सहयोग करती है।

6. किसी क्षेत्र विशेष या राज्य में राजनीतिक स्तर पर प्रभावी दल क्षेत्रीय दल या प्रान्तीय राजनीतिक दल के रूप में मान्यता प्राप्त कर लेता है। इनका राजनीतिक प्रभाव भले ही क्षेत्र तक सीमित हो, परन्तु इनका दृष्टिकोण राष्ट्रीय होता है।

क्षेत्रीय राजनीतिक दलों का परिचय

1. समाजवादी पार्टी (स०पा०)—इस दल का गठन श्री मुलायम सिंह यादव ने 1992 ई०में किया था। वर्तमान में इसके अध्यक्ष श्री अखिलेश यादव हैं। इस दल का चुनाव चिह्न साइकिल है। इस पार्टी का मुख्य कार्यक्रम क्षेत्रीय असमानता को दूर कर गरीबी तथा बेरोजगारी मिटाना है। यह उत्तर प्रदेश का एक प्रभावशाली क्षेत्रीय दल हैं।

2. तेलुगूदेशम—इस दल की स्थापना 1983 ई० में एन०टी० रामाराव ने की थी। वर्तमान में इस दल के अध्यक्ष श्री चन्द्रबाबू नायडू हैं। इसका चुनाव चिह्न साइकिल है। यह दल आन्ध्र प्रदेश का प्रभावी क्षेत्रीय दल है।

3. शिवसेना—शिवसेना महाराष्ट्र ओर दादरा नगर हवेली राज्य का प्रभावी क्षेत्रीय दल है। इसकी सीापना बाल ठाकरे नेकी थी। वर्तमान में, इसके प्रमुख उद्धव ठाकरे हैं, तथा इसका चुनाव चिह्न 'धनुष बाण' है।

4. तृणमूल कांग्रेस—यह पश्चिम बंगाल का प्रभावी क्षेत्रीय दल है। इसकी अध्यक्षा ममता बनर्जी हैं तथा इसका चुनाव चिह्न 'घास और फूल' है।

7. द्वि-दलीय प्रणाली—जिन देशों में दो सबसे महत्त्वपूर्ण राजनीतिक दल होते हैं वहाँ पर द्वि-दलीय प्रणाली प्रचलित होती है, जैसे अमेरिका और इंग्लैण्ड में।

गुण—

(i) शासन में स्थिरता—द्वि-दलीय पद्धति में संसद में बहुमत वाले दल की सरकार बनने के कारण शासन में स्थिरता बनी रहती है।

(ii) मतदाताओं के लिए सुविधाजनक पहचान—जिस देश में दो दल होते हैं, वहाँ मतदाताओं को दोनों के कार्यक्रमों का सुस्पष्ट ज्ञान हो जाता है। वे अपनी इच्छानुसार दल का चुनाव करके मतदान कर सकते हैं।

अवगुण—

(i) द्वि-दलीय प्रणाली में यदि एक ही दल की सरकार बन जाती है तो वह स्वेच्छाधारी और निरंकुश हो जाता है तथा दूसरे दल या विपक्ष की परवाह नहीं करता। लोकतन्त्र का एक सिद्धान्त है कि अल्पसंख्यकों के विचारों और राय को भी ध्यान से सुना जाना चाहिए, क्योंकि वे भी लोकतन्त्र के अभिन्न अंग हैं।

(ii) भारत जैसे विभिन्नताओं के देश में सभी धर्मों, क्षेत्रों और विभिन्न विचारधारा के समूह अपना अलग से दबाव बनाना चाहते हैं। इसलिए केवल द्वि-दलीय व्यवस्था ही राष्ट्र की एकता के अधिक अनुकूल जान पड़ती है।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

राजनीतिक दल .... में आई।

(क) राजनीतिक दल लोकतन्त्र का आधार ही नहीं वरन् एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ है। लोकतन्त्र और राजनीतिक दलों का विकास एक साथ ही हुआ।

(ख) भारत में 1885 ई० में राजनीतिक दल के रूप में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जन्म हुआ।

(ग) 1906 ई० में मुस्लिम लीग अस्तित्व में आई।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

हम गैर-दलीय .... पड़ते हैं।

(क) यद्यपि इस प्रकार के चुनावों में राजनीतिक दल औपचारिक रूप से अपने-अपने प्रत्याशी नहीं खड़े करते किन्तु चुनावकाल में पूरा गाँव कई खेमों में बँट जाता है और प्रत्येक समूह सभी पदों के लिए अपने प्रत्याशियों का 'पैनल' खड़ा करता है।

(ख) राजनीतिक दल प्रत्याशियों का पैनल बनाते हैं।

(ग) हमें विश्व के लगभग सभी छोटे-बड़े, नए, पुराने, विकसित अथवा अविकसित देशों में राजनीतिक दल दिखाई पड़ते हैं।

5 लोकतन्त्र के परिणाम

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (घ) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (घ)
6. (घ) **7.** (ख)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (ग) यदि 'A' सत्य है लेकिन 'R' असत्य है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिया गया चित्र वर्ष 2000-2006 के विभिन्न वर्गों के मध्य आय के बँटवारे को दर्शाता है। इस चित्र के माध्यम से आप क्या निष्कर्ष निकालते हैं और क्या आपको लगता है कि इस अवधि में धनी और धनी होते गए तथा गरीब पहले की अपेक्षा गरीब हो गए।**

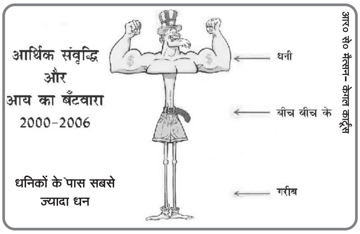

उत्तर– दिए गए चित्र से पता चलता है कि वर्ष 2000-2006 के मध्य विभिन्न वर्गों में आर्थिक असमानता रही। इससे पता चलता है कि विकास का लाभ प्रत्येक वर्ग तक समान रूप से नहीं पहुँचा। निशिचत ही इस अवधि में धनी और धनी होते गए और गरीब पहले ही अपेक्षा गरीब हो गए।

कूट आधारित प्रश्न

- **वर्तमान में विश्व में निम्नलिखित में से किस प्रकार की सरकारों की संख्या अधिक है?**

उत्तर– (ख) केवल (ii)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **____________ ही शासन व्यवस्था का सर्वोत्तम रूप है।**

उत्तर– (ग) लोकतन्त्र

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (ग) (iii) (iv) (ii) (i)

सत्य-असत्य कथन आधाति प्रश्न

- **लोकतन्त्र से जुड़ा कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (ग) (ii) व (iv)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर– (क) सत्य (ख) असत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. लोग लोकतंत्र अधिक पसंद करते हैं, क्योंकि–
   - यह व्यक्ति की गरिमा को बढ़ाता है;

- इससे फैसलों में बेहतरी आती है;
- यह टकरावों को टालने-सँभालने का तरीका देता है;
- यह नागरिकों में समानता को बढ़ावा देने में सहायक है; और
- इसमें गलतियों को सुधारने की गुंजाइश होती है।

2. सबको साथ लेकर सबके विकास के लिए प्रगति-पथ पर आगे बढ़ते जाना कोई आसान काम नहीं है। ऐसे में अनेक चुनोतियाँ आड़े आती हैं व कई बार व्यवधान पड़ता है। फिर भी, कुल मिलाकर देखा जाय तो, लोकतान्त्रिक सरकारें कार्य-कुशल होती हैं। लोकतन्त्र अन्य शासन-व्यवस्थाओं से श्रेष्ठ है। लोकतन्त्र में भले ही कार्य होने में विलम्ब हो, जोकि स्वाभाविक हे, लेकिन कार्य में सर्वसम्मति होती है व इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता।

3. (i) अयोग्य तथा मूर्ख व्यक्तियों का शासन।
(ii) गुणों की अपेक्षा संख्या को अधिक महत्व देना।
(iii) अस्थायी तथा कमजोर शासन।
(iv) खर्चीला और अनुत्तरदायी शासन।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लोकतन्त्र का समर्थन करने वाले कारक हैं—

1. वर्तमान में विश्व के सौ से भी अधिक देशों में लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था प्रचलित है। इनका औपचारिक संविधान है, नियमित चुनाव होते हैं, राजनीतिक दल हैं तथा नागरिक को मौलिक अधिकारों की गारन्टी की जाती है।

2. इन देशों में लोकतान्त्रिक व्यवस्था का प्रभाव समाज की अर्थव्यवस्था और संस्कृति पर पड़ा है।

3. लोग लोकतन्त्र को प्रत्येक रोग की रामबाण औषधि मान लेते हैं। उनकी आस्था है कि लोकतन्त्र सभी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक समस्याओं का समाधान कर सकता है।

4. लोकतन्त्र के परिणामों का सही ढंग से मूल्यांकन करने की कसौटी यह है कि हम यह मानें कि लोकतन्त्र शासन का एक स्वरूप मात्र है जो कुछ चीजों को सुलभ कराने की स्थितियाँ बना सकता है।

2. सबको साथ लेकर सबके विकास के लिए प्रगति-पथ पर आगे बढ़ते जाना कोई आसान काम नहीं है। ऐसे में अनेक चुनोतियाँ आड़े आती हैं व कई बार व्यवधान पड़ता है। फिर भी, कुल मिलाकर देखा जाय तो, लोकतान्त्रिक सरकारें कार्य-कुशल होती हैं। लोकतन्त्र अन्य शासन-व्यवस्थाओं से श्रेष्ठ है। लोकतन्त्र में भले ही कार्य होने में विलम्ब हो, जोकि स्वाभाविक हे, लेकिन कार्य में सर्वसम्मति होती है व इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होता।

3. लोकतन्त्र की मुख्य विशेषताएँ—लोकतन्त्र नागरिकों में समानता, गरिमा, निर्णयों का बेहतर बनाने, संघर्ष टालने और त्रुटियों को सुधारने का काम करता है।

लोकतन्त्र सभी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं का समाधान कर सकता है।

लोकतन्त्र में निर्णय नियम-कानूनों के आधार पर किए जाते हैं।

नागरिकों की गरिमा और स्वतन्त्रता प्रदान करने में अन्य व्यवस्थाओं से आगे है।

4. गैर-लोकतान्त्रिक व्यवस्थाएँ साधारणतया अपने आन्तरिक व सामाजिक मतभेदों से आँखें फेर लेती हैं या उन्हें दबाने का प्रयत्न करती हैं। इस प्रकार सामाजिक अन्तर, विभाजन और टकरावों की स्थिति होना आम बात हो जाती है। चूँकि सबको साथ लेकर चलने की इन गैर-लोकतान्त्रिक देशों में कोई व्यवस्था ही नहीं होती, अत: अशांति से ये देश सदा कराहते रहते हैं।

5. (i) अयोग्य तथा मूर्ख व्यक्तियों का शासन।

(ii) गुणों की अपेक्षा संख्या को अधिक महत्व देना।

(iii) अस्थायी तथा कमजोर शासन।

(iv) खर्चीला और अनुत्तरदायी शासन।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लोकतान्त्रिक सरकारों की प्रमुख विशेषताएँ—

(i) नागरिकों में समानता बढ़ती है।

(ii) नागरिक गरिमामय जीवन जीते हैं।

(iii) सरकार का प्रत्येक निर्णय दूरगामी व सर्वहितकारी होता है।

(iv) देश में सौहार्द व सहयोग का माहौल निर्मित होता है।

(v) शिकायतों के निपटारे की पूरी व्यवस्था होती है।

(vi) नागरिक अपने मौलिक अधिकारों का भरपूर आनन्द लेते हैं।

(vii) देश में असन्तोष व टकराव की सम्भावना बहुत कम होती है।

(viii) लोगों में स्वस्थ व प्रगतिशील दृष्टि विकसित होती है।

2. **प्रजातन्त्रीय तथा गैर-प्रजातन्त्रीय परिस्थितियों में अन्तर**

प्रजातन्त्रीय परिस्थिति गैर-प्रजातन्त्रीय परिस्थिति

(i) शासन-व्यवस्था पारदर्शी होती है।

(i) शासन-व्यवस्था अपारदर्शी होती है।

(ii) जनता सर्वोपरि होती हे।

(ii) जनता गौण होती है।

(iii) शासन का अस्तित्व जनता पर टिका होता है।

(iii) शासन का अस्तित्व नकारात्मक साधनों पर टिका होता है।

(iv) शासन के प्रत्येक निर्णय में जनहित निहित होता है।

(iv) शासन के प्रत्येक निर्णय में अहम् व जनता की अवहेलना निहित होती है।

(v) शासन का दृष्टिकोण विशाल होता है।

(v) शासन का दृष्टिकोण संकीर्ण होता है।

(vi) समता की बहुलता होती है।

(vi) समता का अभाव होता है।

(vii) सर्वत्र शान्ति व सन्तोष होता है।

(vii) सर्वत्र अशान्ति व असन्तोष होता है।

(viii) शासन का प्रत्येक कानून जनता के हित में बनाया जाता है।

(viii) शासन का प्रत्येक कानून केवल शासक के हित में बनाया जाता है।

3. लोकतन्त्र में शासन की सर्वोच्च शक्ति जनता के हाथों में रहती है।

लोकतन्त्र वर्तमान विश्व में सर्वाधिक लोकप्रिय है। इसके विषय में यह मान्यता है कि लोकतन्त्र अन्य व्यवस्थाओं से उत्तम है। तानाशाही और राजतन्त्र जहाँ अभिशाप हैं, लोकतन्त्र वरदान है। यह सर्वोत्तम है क्योंकि लोकतन्त्र नागरिकों में समानता को बढ़ावा देता है; यथा—

1. यह व्यक्ति की गरिमा को बढ़ाता है।
2. इससे फैसलों में बेहतरी आती है।
3. यह टकरावों को टालने-सँभालने का तरीका देता है।
4. इसमें गलतियों को सुधारने की गुंजाइश होती है।

लोकतन्त्र अन्य वैकल्पिक शासन-व्यवस्थाओं से श्रेष्ठ है।

लोकतन्त्र में एक निश्चित कार्यकाल के उपरान्त निर्वाचन-व्यवस्था द्वारा जनता अपना प्रतिनिधि चुनती है। ये प्रतिनिधि सरकार का निर्माण करते हैं। ये विभिन्न समस्याओं पर चर्चा करते हैं एवं जनहितैषी नीतियाँ एवं कार्यक्रम बनाते हैं।

4. **भारत में लोकतन्त्र को बनाए रखने के लिए आवश्यक तत्व**

(i) सामाजिक तत्व—सामाजिक तत्वों के अन्तर्गत परिस्थिति की समानता, कानून के समक्ष समानता तथा अवसरों की समानता, शैक्षणिक और सांस्कृतिक तौर पर विकसित नागरिकता के गुण, सभी किस्म के भेदभाव से परे तथा सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक प्रक्रियाओं में भाग लेने के अवसर आते हैं।

(ii) आर्थिक तत्व—अत्यधिक असमानता की अनुपस्थिति, एक प्रतिष्ठित मानव-अस्तित्व के लिए आवश्यक न्यूनतम भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति, संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण, लाभप्रद रोजगार के समान अवसर, समान कार्य के लिए समान वेतन और शोषण के विरुद्ध परिरक्षा आदि आर्थिक तत्वों के अन्तर्गत आते हैं।

(iii) राजनीतिक तत्व—राजनीतिक तत्वों में विधि का शासन, नागरिकों की समानता तथा राजनीतिक मामलों में प्रतिभागिता के समान अवसर, विचार, आस्था तथा अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता के गारण्टीकृत और परिरक्षित अधिकार सम्मिलित हैं। इसमें नागरिक और राजनीतिक प्रक्रियाओं में प्रतिभागिता की स्वतन्त्रता, लोगों या उनके प्रतिनिधियों की सरकार, स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष चुनाव तथा नाराजगी और विरोध का समुचित समाधान करना भी सम्मिलित है।

5. लोकतन्त्र में सबको साथ लेकर सबका विकास करना होता है। इस व्यवस्था में शासन को सब तक पहुँच रखनी होती है ताकि सबके हित में कार्य हो सके। ऐसे में यह स्वाभाविक ही है कि विभिन्न लोग शिकायत करें। लेकिन शिकयतों को लोकतन्त्र की सफलता माना जाता है क्योंकि शासन को उन समस्याओं को हल करके शिकायतकर्ताओं को राहत देनी होती है व

अपनी प्रांसगिकता सिद्ध करनी होती है। इसे ही दायित्व–निर्वाह कहा जाता है।

शिकायतें लोकतन्त्र की सफलता का प्रमाण हैं, यह निम्नलिखित तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है—

(i) देश का क्षेत्र विशाल होने से यह स्वाभाविक होता है कि शासन की पहुँच प्रत्येक व्यक्ति तक न हो पाई हो।

(ii) क्षेत्र की विशालता के कारण, शासन की नीतियों का लाभ प्रत्येक परिवार को न मिला हो।

(iii) सरकार के कुछ अधिकारी अकर्मण्य या लालची हों कुछ लोगों को शासन के निर्णयों से लाभान्वित न करना चाहते हों।

(iv) जनता में भी परस्पर विद्वेष होने से शिकायत की नौबत आई हो।

(v) लोगों के गलत होने पर भी कई बार शिकायतें अस्तित्व में आती हैं।

लेकिन ऐसी तमाम शिकायतों का न्यायपूर्वक समाधान करके लोकतान्त्रिक सरकार अपना कर्तव्य–पालन करती है और इससे देश में एक स्वस्थ रचनात्मक माहौल निर्मित होता है।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

लोकतन्त्र .... उत्तरदायित्व है।

(क) लोकतन्त्र में वही सरकार जिम्मेवार या जवाबदेह है, जो अपने नागरिकों के प्रति उत्तरदायी है।

(ख) सरकार अपने नागरिकों और उनकी जरूरतों अथवा उम्मीदों के अनुरूप सभी निर्णय लेने के लिए उत्तरदायी होती है।

(ग) किसी भी निर्णय को लागू करने से पूर्व प्रक्रियाओं का उचित पालन करना सरकार का उत्तरदायित्व है।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

नागरिकों की .... आधार है।

(क) नागरिकों की गरिमा और स्वतन्त्रता (अुहगूर्ब्ह् ड्ााद्स) के सन्दर्भ में लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था किसी भी अन्य शासन प्रणाली से श्रेष्ठतर है।

(ख) प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा होती है कि समाज में उसे सम्मान मिले। जब कुछ नागरिकों को प्रतीत होता है कि उनके साथ सम्मानित व्यवहार नहीं किया जा रहा है तब प्राय: टकराव की स्थिति भी उत्पन्न होती है।

(ग) नागरिकों की स्वतन्त्रता और गरिमा के प्रति इच्छा ही लोकतन्त्र का आधार है।

1 विकास

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (घ) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (घ) **6.** (क)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर–(क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **प्रस्तुत चित्र लोगों द्वारा सरदार सरोवर बाँध के विरोध को दर्शाता है। बाँध हमारे लिए कई प्रकार से उपयोगी हैं, परन्तु लोग इसका विरोध करते हैं क्यों?**

उत्तर– लोग पर्यावरणीय तथा सामाजिक कारणों से बाँधों का विरोध करते हैं। बाँध बनाने से नदी दो भागों में बँट जाती है। इससे जलीय जीवों का प्राकृतिक आवास नष्ट हो जाता है। बाँध बनाने के लिए आस-पास के लोगों को विस्थापित किया जाता है। अव्यवस्था होने पर बाँध अक्सर टूट जाते हैं व भयानक तबाही का कारण बनाते हैं।

कूट आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित में से कौन-सा संगठन मानव विकास रिपोर्ट तैयार करता है?**

उत्तर– (घ) केवल (iv)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **निम्न में से ____________ राज्य की प्रति व्यक्ति आय सर्वाधिक है?**

उत्तर– (क) हरियाणा

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (ग) (iii) (iv) (ii) (i)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **कौन-सा ही कथन सही नहीं है–**

उत्तर– (ग) केवल (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर– (क) सत्य (ख) असत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. **सकल घरेलू उत्पाद**—यह एक वर्ष की अवधि में किसी अर्थव्यवस्था में अवस्थित सभी उत्पादक संसाधनों द्वारा उत्पादित अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं के बाजार मूल्यों के जोड़ के समान होता है।
2. **आर्थिक विकास का अर्थ**—विकास राष्ट्र की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने का एक मार्ग है जिसपर चलकर प्रत्येक राष्ट्र अपने आर्थिक लक्ष्यों को पूरा कर पाता है। लोकतन्त्र में जनकल्याण और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को पाने का मार्ग ही विकास कहलाता है। भूमिहीन ग्रामीण कृषक को भूमि दिलाना, नगर के बेरोजगार श्रमिक को रिक्शा दिलवाना, शिक्षित युवकों को रोजगार दिलवाना, प्रत्येक खेत को पानी, बीज और खाद उपलब्ध कराना, बच्चों, महिलाओं और वृद्धों को पोषण उपलब्ध करवाना विकास के ही लक्ष्य हैं। अर्थात् **विकास उस प्रगति का नाम है** जो सीधी रेखा में आगे और आगे बढ़ती जाती है, कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखती। विकास का मापदण्ड है आर्थिक। प्रत्येक विकासशील राष्ट्र आर्थिक विकास की गति को तीव्रतर करके विकास का लक्ष्य पाना चाहता है। आर्थिक विकास वह अवधारणा है जिसमें दीर्घकाल में प्रति व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। आर्थिक विकास उत्पादन, वितरण, आय तथा व्यय के समन्वय से निर्धारित होता है। विकास के द्वारा जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता है आय सरपट दौड़ने लगती है, राष्ट्र में सर्वत्र विकास की लहर दौड़ने लगती है। विकास की गति जितनी तीव्रतर होगी, नागरिक उतनी अधिक आय अर्जित करके राष्ट्रीय आय में वृद्धि करेंगे।

   आर्थिक संवृद्धि—एक अर्थव्यवस्था में लम्बे समय तक प्रति हजार व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में निरन्तर वृद्धि।

   आर्थिक संवृद्धि को प्रकट करने के दो तरीके होते हैं—(i) सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि, (ii) प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि।
3. स्वयं कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. **धारणीयता** या सतत् प्राप्ति से तात्पर्य है—मानव उपयोग की चीजों या संसाधनों का लम्बी अवधि तक सर्वदा उपयोग हेतु बने रहना। विकास का चक्र हमेशा और धीमी गति से चल सकता है, जब इसके लिए आवश्यक सभी संसाधन उपलब्ध रहें। यह मुद्दा महत्वपूर्ण है क्योंकि वैज्ञानिक रिपोर्ट के अनुसार, खनिज तेल और भूगत जल के आरक्षित कोष बहुत तेजी के साथ रिक्त होते जा रहे हैं। उनका संरक्षण और परिरक्षण इन कारणों से इस समय की अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है।

2. **सकल राष्ट्रीय उत्पाद** (G.N.P.)—सकल राष्ट्रीय उत्पाद (G.N.P.) के अन्तर्गत देश की एक वर्ष की अवधि में उत्पन्न वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादों को बाजार-मूल्य पर सम्मिलित किया जाता है। इसमें विदेशों से प्राप्त आय भी सम्मिलित की जाती है।
3. **राष्ट्रीय आय**—राष्ट्रीय आय वस्तुओं और सेवाओं का वह शुद्ध उत्पादन है जो एक वर्ष की अवधि में देश की उत्पादन-प्रणाली में अन्तिम उपभोक्ताओं के हाथों में पहुँचता है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. **व्यक्ति की श्रेणी विकास के लक्ष्य/आकांक्षाएँ**

भूमिहीन ग्रामीण मजदूर

काम करने के अधिक दिन और बेहतर मजदूरी; स्थानीय स्कूल उनके बच्चों को उत्तम शिक्षा प्रदान करने में सक्षम; कोई सामाजिक भेदभाव नहीं और गाँव में वे भी नेता बन सकते हैं।

पंजाब के समृद्ध किसान

किसानों को उनकी उपज के लिए ज्यादा समर्थन मूल्यों और मेहनती और सस्ते मजदूरों द्वारा उच्च पारिवारिक आय सुनिश्चित करना ताकि वे अपने बच्चों को विदेशों में बसा सकें।

किसान जो खेती के लिए केवल वर्षा पर निर्भर है

किसान फसल को सूखने से बचाने के लिए नलकूप चाहता है।

भूस्वामी परिवार की एक ग्रामीण महिला

महिला चाहती है कि उसकी फसल ऊँचे दामों पर बिके जिससे वह ऋण मुक्त हो जाए।

शहरी बेरोजगार युवक

शहरी बेरोजगार युवक चाहता है कि उसे तुरन्त नौकरी मिल जाए।

शहर के अमीर परिवार का एक लड़का

शहर के अमीर परिवार का लड़का बढ़िया नए मॉडल की कार खरीदना चाहता है।

शहर के अमीर परिवार की एक लड़की

उसे भाई के जैसी आजादी चाहिए और वह अपने फैसले खुद करना चाहती है। वह अपनी पढ़ाई विदेश में करने की इच्छुक है।

नर्मदा घाटी का एक आदिवासी

नर्मदा घाटी का आदिवासी जल-जंगल और जमीन पर अपना अधिकार चाहता है।

एक शिक्षक

एक शिक्षक शिक्षा को नवीन तकनीक से जोड़ना चाहता है।

एक गृहिणी

गैस, आटे, दाल-सब्जी के मूल्य घटते देखना चाहती है।

इनमें से हर एक अलग-अलग चीजें पाना चाहता है। वे ऐसी चीजें चाहते हैं जो उनके लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं, अर्थात् वे चीजें जो उनकी आकांक्षाओं और इच्छाओं को पूरा कर सकें। वास्तव में, कई बार दो व्यक्ति या दो गुट ऐसी चीजें चाह सकते हैं, जिनमें परस्पर विरोध हो सकता है। एक लड़की अपने भाई के समकक्ष आजादी और अवसर मिलने और

भाई भी घर के कामकाज में हाथ बटाएगा, की आशा रखती है। हो सकता है कि भाई को यह पसन्द न हो। इसी तरह, अधिक बिजली पाने के लिए, उद्योगपति ज्यादा बाँध चाहते हैं। लेकिन इससे जमीन जलमग्न हो सकती है और उन लोगों का जीवन अस्तव्यस्त हो सकता है जो बेघर हों जाएँ, जैसे कि आदिवासी। वे इसका विरोध कर सकते हैं और हो सकता है कि वे अपने खेतों की सिंचाई के लिए केवल छोटे चैक बाँध या तालाब पसन्द करें।

इस तरह दो बातें साफ हैं—**एक, अलग-अलग लोगों के विकास के लक्ष्य भिन्न हो सकते हैं** और दूसरा, **एक के लिए जो विकास है वह हो सकता है कि दूसरे के लिए विकास न हो। यहाँ तक कि वह दूसरे के लिए विनाशकारी भी हो सकता है।**

2. **आर्थिक विकास का अर्थ**—विकास राष्ट्र की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को पूरा करने का एक मार्ग है जिसपर चलकर प्रत्येक राष्ट्र अपने आर्थिक लक्ष्यों को पूरा कर पाता है। लोकतन्त्र में जनकल्याण और राष्ट्र के सर्वांगीण विकास के लक्ष्य को पाने का मार्ग ही विकास कहलाता है। भूमिहीन ग्रामीण कृषक को भूमि दिलाना, नगर के बेरोजगार श्रमिक को रिक्शा दिलवाना, शिक्षित युवकों को रोजगार दिलवाना, प्रत्येक खेत को पानी, बीज और खाद उपलब्ध कराना, बच्चों, महिलाओं और वृद्धों को पोषण उपलब्ध करवाना विकास के ही लक्ष्य हैं। अर्थात् **विकास उस प्रगति का नाम है** जो सीधी रेखा में आगे और आगे बढ़ती जाती है, कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखती। विकास का मापदण्ड है आर्थिक। प्रत्येक विकासशील राष्ट्र आर्थिक विकास की गति को तीव्रतर करके विकास का लक्ष्य पाना चाहता है। आर्थिक विकास वह अवधारणा है जिसमें दीर्घकाल में प्रति व्यक्ति आय और राष्ट्रीय आय में वृद्धि होती है। आर्थिक विकास उत्पादन, वितरण, आय तथा व्यय के समन्वय से निर्धारित होता है। विकास के द्वारा जैसे-जैसे उत्पादन बढ़ता है आय सरपट दौड़ने लगती है, राष्ट्र में सर्वत्र विकास की लहर दौड़ने लगती है। विकास की गति जितनी तीव्रतर होगी, नागरिक उतनी अधिक आय अर्जित करके राष्ट्रीय आय में वृद्धि करेंगे।

आर्थिक संवृद्धि—एक अर्थव्यवस्था में लम्बे समय तक प्रति हजार व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में निरन्तर वृद्धि।

आर्थिक संवृद्धि को प्रकट करने के दो तरीके होते हैं—(i) सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि, (ii) प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

  राष्ट्रीय विकास .... स्तम्भ हैं।

  (क) राष्ट्रीय विकास से आशय, लोगों के जीवन में गुणवत्ता का आनन्द, उपलब्ध अवसर और स्वतन्त्रताओं के उपभोग से लगाया जाता है।

  (ख) स्वतन्त्रताओं में वृद्धि लाना विकास का एक प्रभावशाली कारक है।

  (ग) राष्ट्र में संसाधनों तक सबकी पहुँच, स्वस्थ होना, शिक्षा और सुखद आवास राष्ट्रीय विकास के आधार स्तम्भ हैं।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

  प्रकृति ने .... चाहिए।

  (क) प्रकृति ने मानव को उपहार स्वरूप प्राकृतिक संसाधन प्रदान किए हैं।

  (ख) योजनाबद्ध ढेग से व्यय करेसे संसाधनों और पूँजी का उचित प्रयोग हो सकता है।

  (ग) आर्थिक विकास की अंधी दौड़ से तात्पर्य है कि प्रकृति व संसाधनों की परवाह किए बना विकास के कार्य करते रहना।

2 भारतीय अर्थव्यवस्था के क्षेत्र

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (क) **6.** (ग)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिए गए चित्र को देखकर बताइए कि यह कार्य किस क्षेत्रक के अन्तर्गत आता है? इस क्षेत्र के श्रमिकों को निम्नलिखित मुद्दों पर संरक्षण की आवश्यकता है—मजदूरी, सुरक्षा और स्वास्थ्य। उदाहरण सहित व्याख्या कीजिए।**

उत्तर– दिए गए चित्र में द्वितीयक क्षेत्रक के श्रमिकों को दर्शाया गया है। इस क्षेत्रक में नियोक्त अक्सर उचित मजदूरी नहीं देते हैं। मजदूरों को बहुत असुरक्षित माहौल में काम करना पड़ता है। उनका स्वास्थ्य कठिन परिस्थितियों जैसे गर्मी, लू, आदि के कारण खराब हो जाता है। इसलिए इस क्षेत्रक के श्रमिकों को मजदूरी, सुरक्षा और स्वास्थ्य पर संरक्षण की आवश्यकता है।

कूट आधारित प्रश्न

- **कौन-सी गतिविधि तृतीयक क्षेत्रक से सम्बन्धित है?**

उत्तर– ( ) (iii) व (iv)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **एक वस्तु का अधिकांशतः प्राकृतिक प्रक्रिया से उत्पादन _________ क्षेत्रक की गतिविधि है।**

उत्तर– (क) प्राथमिक

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (ग) (iii) (iv) (i) (ii)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **कौन-सा ही कथन सही नहीं है–**

उत्तर– (ख) केवल (ii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

  (क) सत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. हजारों की संख्या में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की गणना करना असम्भव कार्य है। इस कठिनाई के समाधान के लिए अर्थशास्त्रियों का सुझाव है कि वस्तुओं और सेवाओं की वास्तविक संख्याओं का जोड़ करने के स्थान पर उनके मूल्य का उपयोग किया जाना चाहिए। जैसे, यदि 10,000 कि०ग्रा० गेहूँ 8 रु० प्रति कि०ग्रा० की दर से बेचा जाता है, तो गेहूँ का मूल्य 80,000 रु० होगा। 10 रु० प्रति नारियल की दर से 5000 नारियल का मूल्य 50,000 रु० होगा। इसी प्रकार, तीनों क्षेत्रकों की वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य की गणना की जाती है और उसके बाद जोड़ प्राप्त करते हैं।

किसी विशेष वर्ष में प्रत्येक क्षेत्रक द्वारा उत्पादित अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य, उस वर्ष में क्षेत्रक के कुल उत्पादन की जानकारी प्रदान करता है। तीनों क्षेत्रकों के उत्पादों के योगफल को देश का **सकल घरेलू उत्पाद (स०घ०उ० (GDP))** कहते हैं। यह **किसी देश के भीतर** किसी विशेष वर्ष में उत्पादित सभी अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य है।

2. तृतीय क्षेत्र, जिसे सेवा क्षेत्र भी कहा जाता ह, अन्य क्षेत्रों से भिन्न है क्योंकि यह वस्तुओं के उत्पादन के बजाए सेवाएँ प्रदान करता है। प्राथमिक क्षेत्र में प्राकृतिक संसाधनों का उत्पादन होता है (जैसे–कृषि) और द्वितीयक क्षेत्र में इन संसाधनों को वस्तुओं में बदल दिया जाता है। तृतीयक क्षेत्रक में बैंकिंग, परिवहन, शिक्षा, स्वास्थ्य, और पर्यटन जेसी सेवाएँ शामिल हैं।

3. विभिन्न क्षेत्रकों का ऐतिहासिक सन्दर्भ देखें तो विकास की प्रारम्भिक अवस्था में प्राथमिक क्षेत्रक ही आर्थिक सक्रियता का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्रक रहा है। कृषि प्रणाली विकसित होने

के साथ प्राथमिक क्षेत्रक/कृषि क्षेत्रक समृद्ध होता चला गया, जिससे कम श्रम बल से ज्यादा उत्पादन होने लगा, तब लोग दूसरे काम करने लगे। व्यापारियों और शिल्पियों की संख्या में बढ़ोत्तरी होने लगी। इसके अतिरिक्त कई लोग परिवहन, प्रशासक, सैनिक कार्यों इत्यादि में रुचि लेने लगे।

इसके बाद विनिर्माण की नई प्रणाली के आने से कारखाने स्थापित होने लगे और उद्योगों का प्रसार होने लगा। पहले लोग खेतों में काम करते थे, उनमें से बहुत ज्यादा लोग अब कारखानों में काम करने लगे। इन कारखानों में कम कीमत में वस्तुएँ तैयार होने लगीं, जिन्हें लोगों ने प्रयोग करना आरम्भ कर दिया। अब कुल उत्पादन और रोजगार की दृष्टि से द्वितीयक क्षेत्रक महत्त्वपूर्ण हो गया।

विगत् लगभग 100 वर्षों में, विकसित देशों में द्वितीयक क्षेत्रक से तृतीयक क्षेत्रक की ओर फिर से परिवर्तन होने लगे। अब कुल उत्पादन की दृष्टि से सेवा क्षेत्रक का महत्त्व बढ़ गया। विकसित देशों में यही सामान्य लक्षण देखा गया है। अधिकतर श्रमजीवी सेवा क्षेत्रक में ही नियोजित हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. शहरी क्षेत्रों में रोजगार को निम्नलिखित तरीकों से बढ़ाया जा सकता है—

(i) सरकार द्वारा ऋण, प्रशिक्षण आदि सुविधाएँ देकर स्व-रोजगार को बढ़ावा देकर।

(ii) यातायात, कच्चे माल व विद्युत-आपूर्ति आदि को सुनिश्चित करके।

(iii) सूचना और प्रौद्योगिकी, पर्यटन सरीखे सेवा-क्षत्रकों को प्रचारित करके व इन्हें सहायता देकर।

(iv) लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित करके।

(v) शिक्षा में व्यावसायिकता को जोड़कर।

(vi) श्रम-गहन तकनीक का उत्पादन में प्रयोग करके।

2. **शहरी क्षेत्रों में रोजगार में वृद्धि** निम्नलिखित ढंग से की जाती है—

(i) उत्पादन की श्रम-गहन तकनीक को अपनाया जाना चाहिए।

(ii) लघु एवं कुटीर उद्योगों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

(iii) विद्युत आपूर्ति, कच्चे माल ओर यातायात से सम्बन्धित समस्याओं को दूर किया जाना चाहिए, जिससे जो उद्योग क्षमता से कम उत्पादन कर रहे हैं, वे अपनी पूर्ण उत्पादन-क्षमता का उपयोग कर सकें।

(iv) हमारी शिक्षा प्रणाली को रोजगारोन्मुख बनाया जाना चाहिए। व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

(v) सरकार को चाहिए कि वह ऋण, प्रशिक्षण, विपणन जैसी सुविधाएँ प्रदान कर स्व-रोजगार को प्रोत्साहित करे।

(vi) विशेषकर पर्यटन, सूचना एवं प्रौद्योगिकी जैसे सेवा क्षेत्रकों में रोजगार की व्यापक सम्भावनाएँ हैं। इन क्षेत्रों में समुचित आयोजन और सरकारी सहायता की आवश्यकता है।

(vii) लक्षित रोजगार सृजन कार्यक्रमों को पूर्ण लगन और ईमानदारी से लागू किया जाना चाहिए।

3. हजारों की संख्या में उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की गणना करना असम्भव कार्य है।

इस कठिनाई के समाधान के लिए अर्थशास्त्रियों का सुझाव है कि वस्तुओं और सेवाओं की वास्तविक संख्याओं का जोड़ करने के स्थान पर उनके मूल्य का उपयोग किया जाना चाहिए। जैसे, यदि 10,000 कि०ग्रा० गेहूँ 8 रु० प्रति कि०ग्रा० की दर से बेचा जाता है, तो गेहूँ का मूल्य 80,000 रु० होगा। 10 रु० प्रति नारियल की दर से 5000 नारियल का मूल्य 50,000 रु० होगा। इसी प्रकार, तीनों क्षेत्रकों की वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य की गणना की जाती है और उसके बाद जोड़ प्राप्त करते हैं।

किसी विशेष वर्ष में प्रत्येक क्षेत्रक द्वारा उत्पादित अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य, उस वर्ष में क्षेत्रक के कुल उत्पादन की जानकारी प्रदान करता है। तीनों क्षेत्रकों के उत्पादों के योगफल को देश का **सकल घरेलू उत्पाद (स०घ०उ० (GDP))** कहते हैं। यह **किसी देश के भीतर** किसी विशेष वर्ष में उत्पादित सभी अन्तिम वस्तुओं और सेवाओं का मूल्य है।

4. **अल्प बेरोजगारी**—यह वह स्थिति है जिसमें श्रमिक काम तो करते हैं परन्तु वे पूर्णतया रोजगार में नहीं लगे होते। श्रमिकों को अपने सामर्थ्य से कम काम दिया जाता है। उदाहरण के लिए, एक खेत जोतने के लिए केवल दो मजदूरों की आवश्यकता है, परन्तु पाँच लोगों का पूरा परिवार वह काम कर रहा है क्योंकि उनके पास कोई और काम नहीं है। इस प्रकार की बेरोजगारी को प्रच्छन्न बेरोजगारी भी कहते हैं।

देश में लगभग आधे से ज्यादा श्रमिक प्राथमिक क्षेत्रक, मुख्यत: कृषि क्षेत्र, में काम कर रहे हैं, जिसका स०घ०उ० (GDP) में योगदान केवल एक-चौथाई है। इसकी तुलना में द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रक का स०घ०उ० (GDP) में हिस्सा तीन-चौथाई है, परन्तु ये क्षेत्र आधे से भी कम लोगों को रोजगार प्रदान करते हैं।

यदि हम कुछ लोगों को कृषि-क्षेत्र से हटा देते हैं, तो भी उत्पादन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। दूसरे शब्दों में, कृषि क्षेत्रक के श्रमिकों में अल्प बेरोजगारी है।

5. **असंगठित क्षेत्रक**—असंगठित क्षेत्रक छोटी-छोटी बिखरी इकाइयों से मिलकर बनता है जो अधिकांशत: सरकारी नियन्त्रण से बाहर होती हैं। इस क्षेत्रक के नियम तथा विनियम तो होते हैं परन्तु उनका अनुपालन नहीं होता है। इस क्षेत्रक में बड़ी संख्या में व्यक्ति अपने-अपने छोटे कार्यों, जैसे—सड़कों पर विक्रय या मरम्मत कार्य में स्वत: नियोजित हैं। ऐसे ही किसान भी खुद के खेतों में कार्य करते हैं तथा जरूरत पड़ने पर मजदूरी पर श्रमिकों को लगाते हैं।

शहरी क्षेत्रों में असंगठित क्षेत्रक मुख्यत: लघु उद्योगों के श्रमिकों, निर्माण—व्यापार एवं परिवहन में कार्यरत आकस्मिक श्रमिकों और सड़कों पर विक्रेता का काम करने वालों, सिर पर बोझा ढोने वाले श्रमिकों, वस्त्र-निर्माण करने वालों और कबाड़ उठाने वालों से रचित है।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. **प्राथमिक क्षेत्र**—प्राकृतिक उत्पादों पर आधारित आर्थिक क्रियाएँ प्राथमिक क्षेत्र के अन्तर्गत आती हैं। **प्राथमिक क्षेत्र में जिन वस्तुओं का उत्पादन होता है, उन्हें प्राथमिक उत्पाद कहा**

जाता है। खेती करना, पशुपालन, वन काटना, मछली पकड़ना तथा खनिज खोदना प्राथमिक क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं। मानव ने सबसे पहले अपनी आर्थिक गतिविधियों को प्राकृतिक संसाधनों के उपभोग के साथ जोड़ा। **खेती करके गेहूँ तथा कपास उगाना, वनों से लकड़ी काटना तथा वन्य उत्पाद एकत्र करना, पशुपालन, मुर्गी पालन, टोकरी बुनना, मछुआरे के रूप में मछलियाँ पकड़ना, कुम्हार के रूप में मि–ी के बर्तन बनाना, पशुओं का दूध बेचना** आदि आर्थिक क्रियाएँ प्राथमिक क्षेत्र के साथ जुड़ी हैं। **अनाज, काष्ठ, दूध, मछली, खनिज सभी प्राकृतिक उत्पाद हैं। अतः इनसे सम्बन्धित व्यवसाय प्राथमिक क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।** प्राथमिक क्षेत्र को कृषि एवं कृषक–क्षेत्र भी कहा जाता है।

द्वितीयक क्षेत्र—प्राथमिक क्षेत्र से प्राप्त उत्पादों को मशीनों और प्रौद्योगिकी के माध्यम से परिष्कृत करके जो क्षेत्र नये उपयोगी और कीमती उत्पाद तैयार करता है, द्वितीयक क्षेत्र कहलाता है। **मानव निर्मित वस्तुओं का यह क्षेत्र औद्योगिक क्षेत्र कहलाता है।** इस क्षेत्र की आर्थिक क्रियाएँ उत्पादों के निर्माण से सम्बन्धित होने के कारण यह विनिर्माण क्षेत्र भी कहलाता है। **कपास से सूत तथा सूत से वस्त्र बनाना, गन्ने के रस से चीनी बनाना, लौह अयस्क और मैंगनीज से इस्पात बनाना, चूना पत्थर तथा डोलोमाइट से सीमेन्ट बनाना, जूट के धागे से टाट, बोरे तथा अन्य सामान बनाना, दूध से पनीर, मक्खन तथा घी बनाना, पशुओं को काटकर मांस डिब्बों में बन्द करना, घास तथा बाँस से कागज बनाना, लकड़ी से माचिस बनाना** आर्थिक क्रियाएँ द्वितीय क्षेत्र से सम्बन्धित हैं।

प्राकृतिक उत्पादों को निर्माण प्रक्रिया के माध्यम से अन्य रूपों में परिवर्तित करने वाला क्षेत्र द्वितीयक क्षेत्र के नाम से जाना जाता है।

यह प्रक्रिया कारखानों और कार्यशालाओं में सम्पन्न की जाती है। ईंट बनाना, गुड़ तैयार करना तथा मशीनों के कलपुर्जे बनाना भी इसी क्षेत्र में सम्बन्धित है।

तृतीयक क्षेत्र—आर्थिक विकास जिस ढाँचे पर टिका होता है, उसे अवसंरचना कहा जाता है। इसके निर्माण में तृतीयक क्षेत्र का विशेष योगदान होता है। **तृतीयक क्षेत्र वह है जो वस्तुओं के स्थान पर तकनीक तथा सेवाओं का उत्पादन करता है।** इसीलिए इसे सेवा क्षेत्र कहते हैं। परिवहन, संचार, बीमा, बैंक, भण्डारण आदि सेवाएँ तृतीयक क्षेत्र के अन्तर्गत आती हैं। **सड़कें, रेलपथ, विद्युत लाइनें, दूर संचार के टॉवर तथा विशाल भण्डारघर** अपनी सेवाओं से प्राथमिक तथा द्वितीयक क्षेत्र का पोषण करते हैं। **तृतीयक क्षेत्र की समस्त गतिविधियाँ प्राथमिक तथा द्वितीयक क्षेत्रों के विकास में अभूतपूर्व योगदान देती हैं।** प्राथमिक तथा द्वितीयक क्षेत्र जिन–जिन वस्तुओं का उत्पादन करते हैं, उनके विपणन के लिए परिवहन के साधनों के साथ संचार तन्त्र तथा बैंकों की सेवाएँ ग्रहण करनी पड़ती हैं। **परिवहन, भण्डारण, बैंक तथा संचार सेवाओं के बिना प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र अधूरे हैं।** वर्तमान में तृतीयक क्षेत्र का विस्तार इसीलिए दिन दूना रात चौगुना किया जा रहा है। **न्यायाधीश, वकील, डॉक्टर, इंजीनियर, कुरियर, डाकिया, नाइ, धोबी, इंटरनेट कैफे, ए०टी०एम० कॉल सेन्टर्स तथा साफ्टवेयर कम्पनियाँ** तृतीय क्षेत्र के अन्तर्गत अपनी

अद्वितीय सेवाएँ देते हैं। ट्रक, रेलगाड़ियाँ, वायुयान, जलयान न हों तो वस्तुओं कापरिवहन सम्भव नहीं है। टेलीफोन, इन्टरनेट तथा कम्प्यूटर न हों तो सूचनाओं का आदान-प्रदान सम्भव नहीं है। **पोस्टमैन, कुरयिर पहुँचाने वाला कर्मचारी तथा कालॅसेन्टर में कार्यरत लोग तृतीयक क्षेत्र के माध्यम से सेवाएँ देते हैं।**

2. कृषि-क्षेत्रक में, प्रच्छन्न बेरोजगारी की समाप्ति के लिए किए जा सकने वाले उपाय निम्नलिखित हैं—

(i) कृषि श्रमिक को सही तरीके से पभिाषित किया जाए।

(ii) कृषि पर आश्रित विभिन्न उद्योगों को गाँवों में विकसित किया जाए।

(iii) शहरों की तरह गाँवों में भी ग्रामीण रोजगार-केन्द्र स्थापित किए जाएँ।

(iv) प्राथमिक क्षेत्रों में दुग्ध-उत्पादन, मुर्गी-पालन व रेशम-केन्द्र जैसे अन्य कार्यों को प्रोत्साहन देकर कृषि श्रमिकों को अतिरिक्त आय प्रदान की जाए।

3. **संगठित क्षेत्र**—औद्योगिक क्षेत्र का वह क्षेत्र जो निश्चित सेवा शर्तों, सेवाओं की सुरक्षा, नियोजन के नियम तथा विनियम, अवकाश, बीमा, चिकित्सा आदि की सुविधाओं से सम्पन्न होता है, संगठित क्षेत्र कहलाता है। **कान्ता जो सरकारी कार्यालय में काम करती है, उसे रविवार का अवकाश, भविष्य निधि तथा चिकित्सीय भत्तों की सुविधा है।** संगठित क्षेत्र में रोजगार की अवधि निश्चित होती है तथा सुनिश्चित कार्य और कर्तव्य होते हैं। **इस क्षेत्र के कर्मचारियों पर कारखाना अधिनियम, न्यूनतम मजदूरी सेवानुदान अधिनियम, प्रतिष्ठान अधिनियम** लागू होने से सेवा तथा वेतन की सुरक्षा बनी रहती है। भविष्य निधि तथा पेंशन वृद्धावस्था में पोषण का स्रोत बन जाती है। नियोक्ता द्वारा अधिक समय तक कार्य करवाने पर उन्हें अतिरिक्त वेतन दिया जाता है। वे सवेतन अवकाश, अवकाश काल में भुगतान, भविष्य निधि तथा पेंशन पाने के अधिकारी होते हैं।

न्यायाधीश, सरकारी वकील, अध्यापक, बैंक कर्मचारी, सरकारी डॉक्टर, नर्स, पोस्टमास्टर, पोस्टमैन, रेलवे कर्मचारी सभी संगठित क्षेत्र में जाते हैं।

असंगठित क्षेत्र—छोटी-छोटी बिखरी इकाइयों का औद्योगिक क्षेत्र असंगठित क्षेत्र कहलाता है। यह क्षेत्र सरकारी नियंत्रण से परे होता है। अत: इन पर सरकारी नियम और विनियम लागू नहीं होते। इस क्षेत्र के कर्मचारियों को कम वेतन देकर अधिक काम लिया जाता है। **असंगठित क्षेत्र में सवेतन छु–ी, अवकाश, रुग्णावकाश, भविष्य निधि तथा रोजगार की सुरक्षा का कोई प्रावधान नहीं होता।** सड़क किनोर होटलों में काम करने वाले कर्मचारी, दिहाड़ी, श्रमिक रामदीन जो कपड़े की दुकान पर श्रमिक है, ईंट भ—े पर ईंट पाथने तथा पकाने वाले श्रमिक इसी क्षेत्र के अन्तर्गत आते हैं।

असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों का संरक्षण निम्न प्रकार से किया जाना चाहिए—

(क) रोजगार की गारण्टी—असंगठित क्षेत्र में कानूनी नियम और विनियम लागू करके, श्रमिकों के रोजगार को नियमित और सुरक्षित बनाया जाए। इससे नियोक्ताओं की मनमानी पर रोक लगेगी तथा श्रमिकों का रोजगार सुरक्षित बन जाएगा।

(ख) उचित मजदूरी—असंगठित क्षेत्रक में श्रमिकों से अधिक घण्टे काम लेकर, अल्पतम मजदूरी दी जाती है। अत: सरकार को चाहिए कि वह इस क्षेत्र के लिए काम के घण्टे निश्चित कर उचित पोषणीय मजदूरी दिलाने की बाध्यता लागू करें।

(ग) स्वास्थ्य सेवाएँ—असंगठित क्षेत्र के श्रमिक अधिक कार्य तथा अस्वच्छ वातावरण में काम करने के कारण रोगी बने रहते हैं, अत: उन्हें चिकित्सा अवकाश के साथ नि:शुल्क चिकित्सा की व्यवस्था की जाए अिवा चिकित्सीय भत्ता दिया जाए।

(घ) सामाजिक सुरक्षा—असंगठित क्षेत्रों के श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा देने के लिए पेंशन, बीमा, ग्रेच्युएटी आदि सुविधाएँ देने की कानूनी बाध्यता लागू की जाए।

(ङ) अन्य सुविधाएँ—असंगठित क्षेत्रक के श्रमिकों को उनके बच्चों की नि:शुल्क शिक्षा, आवास, सवेतन अवकाश, भविष्य निधि, अतिरिक्त काम के लिए अतिरिक्त वेतन देने आनंद सुविधाओं की सुनिशिचत व्यवस्था की जाए। कहावत है, **स्वस्थ और खुशहाल श्रमिक-समृद्ध राष्ट्र।**

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**
  किसी अर्थव्यवस्था .... होता है।

(क) किसी अर्थव्यवस्था का प्राय: दो दृष्टियों से वर्गीकरण किया जाता है—स्वामित्व के आधार पर तथा व्यवसाय के आधार पर।

(ख) स्वामित्व के आधार पर किसी अर्थव्यवस्था के दो मुख्य क्षेत्र होते हैं—निजी क्षेत्र एवं सार्वजनिक क्षेत्र।

(ग) निजी क्षेत्र वह है जिसमें सभी प्रकार के उद्योग या व्यवसाय किसी व्यक्ति या निजी संस्था के अधिकार में होते हैं। इसके विपरीत सार्वजनिक क्षेत्र वह है जिसमें किसी उद्योग या व्यवसाय पर सरकार का स्वामित्व और नियन्त्रण होता है।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**
  निजी क्षेत्रक .... करना आदि।

(क) निजी क्षेत्रक में परिसंपत्तियाँ निजी हाथों में होती हैं और स्वामित्व और सेवाओं के वितरण का दायित्व एकल व्यक्ति या कम्पनी के हाथों में होता है।

(ख) ऐसी बहुत-सी चीजें हैं जिनकी आवश्यकता समाज के सभी सदस्यों को होती है, लेकिन निजी क्षेत्रक इन्हें उचित कीमत पर उपलब्ध नहीं कराते हैं।

(ग) कुछ वस्तुओं व सेवाओं पर अधिक खर्चा आता है जो निजी क्षेत्रकों की वहन क्षमता से बाहर होता है; जैसे—सड़कों, पुलों, रेलवे, पत्तनों का निर्माण करना आदि।

3 मुद्रा और साख

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (घ) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (घ)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (ग) यदि 'A' सत्य है लेकिन 'R' असत्य है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **प्रस्तुत चित्र किसी व्यक्ति द्वारा जारी किए गए चेक को दर्शाता है। इसे देखकर बताइए कि बैंकों द्वारा चेकों के गलत उपयोग को रोकने के लिए किस प्रकार की व्यवस्था की जाती है।**

उत्तर– चेकों के गलत उपयोग को रोकने के लिए बैंक चेक जारी करते समय सावधान रहते हैं। धारक को खाते में पर्याप्त राशि बनाए रखने के लिए कहते हैं। क्रॉस चेक का उपयोग करने की सलाह देते हैं। चेक बाउस होने की स्थिति में कार्रवाई करते हैं।

कूट आधारित प्रश्न

- **व्यापारिक बैंक का प्राथमिक कार्य होता है–**

उत्तर– (क) केवल (i)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **मुद्रा का आविष्कार __________ प्रणाली के दोषों को दूर करने के लिए किया गया है–**

उत्तर– (ग) वस्तु–विनिमय

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (क) (ii) (i) (iv) (iii)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **मुद्रा से जुड़ा कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (क) केवल (i)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

  (क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. बैंक ऋण पर अधिक ब्याज लेने के कई कारण होते हैं, जिनमें से कुछ मुख्य कारण यह हैं कि वे ऋण पर ब्याज लेने से लाभ कमाते हैं; ऋण पर ब्याज लेने से अपने खर्चों को कवर करते हैं और ब्याज दरें अर्थव्यवस्था की स्थितियों को दर्शाती है।

2. नहीं, कोई व्यक्ति वैध मुद्रा को भुगतान में अस्वीकार नहीं कर सकता है। क्योंकि देश के केंद्रीय बैंक व सरकार द्वारा उस मुद्रा को छापा जाता है, व उसे भुगतान के लिए अस्वीकार करना अवैध है।

3. एक निर्धन और धनी व्यक्ति में से धन में ऋण लेने की क्षमता अधिक है। क्योंकि उसकी साख मजबूत होती है, व ऋण लेने की शर्तों को भी वह पूरा करता है।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. मानव की आवश्यकताएँ बढ़ने के साथ ही उसकी आत्मनिर्भरता भंग हो गई। उसने अपनी अतिरिक्त वस्तुएँ दूसरों को देकर उनसे अपने लिए उपयोगी वस्तुएँ लेना प्रारंभ कर दिया। इस व्यवस्था को वस्तु विनिमय प्रणाली नाम दिया गया।

2. भारत में मुद्रा के रूप में करेंसी अर्थात् कागज के नोट और सिक्कों का प्रयोग किया जाता है। कागज के नोट और सिक्कों के चलन से पहले विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ मुद्रा के रूप में प्रयोग की जाती थीं। प्रारम्भिक समय में लोग अनाज और पशुओं का मुद्रा के रूप में प्रयोग करते थे। इसके बाद सोना, चाँदी और ताँबे जैसी धातुओं के सिक्के प्रचलन में आए। इनका चलन पिछली सदी तक था।

3. ग्रामीण क्षेत्रों में साख (ऋण) की माँग फसलें उगाने के लिए की जाती है। फसल उगाने के लिए किसान बीज, खाद, कीटनाशक, पानी, बिजली, उपकरण तथा मरम्मत पर व्यय करने के लिए धन चाहता है। इन आगतों (inputs) पर धन व्यय करने तथा फसल की बिक्री होने तक 3 से 4 माह का अन्तराल रहता है। अत: किसान को कृषि आगतें खरीदने के लिए कर्ज लेने के लिए विवश होना पड़ता है। फसल तैयार होने पर वह ऋण अदा कर देना चाहेगा परन्तु ऋण की अदायगी फसल से होने वाली आय पर निर्भर करती है।

4. लोग बैंकों में निक्षेप इसलिए करते हैं क्योंकि बैंक में रखा हुआ रुपया सुरक्षित रहता है और उस पर ब्याज भी मिलता है। आप अपनी जरूरत के हिसाब से अपने खाते से रुपये निकाल सकते हैं। चूँकि बैंक-खाते में जमा रुपये को डिमाण्ड (जरूरत) के हिसाब से निकाला जा सकता है, इसलिए इन खातों के निक्षेप (डिपॉजिट) को डिमाण्ड डिपॉजिट कहते हैं।

आप अपना बकाया भुगतान करने क लिए चेक का इस्तेमाल भी करते हैं। चेक पर भुगतान पाने वाले व्यक्ति या संस्था का नाम और भुगतान की जाने वाली राशि लिखी होती है। चेक जारी करने वाले आदमी को चेक के नीचे दस्तखत करने होते हैं। इसके अलावा आप किसी भुगतान के लिए डिमाण्ड ड्राफ्ट भी खरीद सकते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. वस्तु के बदले वस्तु देना 'वस्तु-विनिमय' कहलाता है।

वस्तु-विनिमय प्रणाली—मुद्रा का प्रचलन शुरू होने से पहले वस्तु-विनिमय प्रणाली का इस्तेमाल होता था। लोग एक चीज के बदले दूसरी चीज का लेन-देन करते थे।

आवश्यकताओं का दोहरा संयोग—वस्तु-विनिमय प्रणाली की सबसे बड़ी कमजोरी है 'आवश्यकताओं का दोहरा संयोग'। मान लीजिए कि आप अपने स्मार्टफोन के बदले एक गेम कंसोल चाहते हैं। ऐसी स्थिति में, आपको किसी ऐसे व्यक्ति को ढूँढ़ना होगा, जिसे अपने गेम कंसोल के बदले एक स्मार्टफोन चाहिए। ऐसे दो लोगों को ढूँढ़ना; जो एक-दूसरे की चीज की अदल-बदल करना चाहते हैं; आसान काम नहीं है।

2. ऋण के औपचारिक एवं अनौपचारिक स्त्रोत

ऋण के औपचारिक स्त्रोत

1. इसके अन्तर्गत ऋण के वे स्त्रोत शामिल होते हैं जो सरकार द्वारा पंजीकृत होते हैं। इन्हें सरकारी नियमों ओर विनियमों का पालन करना पड़ता है। ये स्त्रोत हैं—बैंक और सहकारी समितियाँ।

2. भारतीय रिजर्व बैंक ऋण के औपचारिक स्त्रोतों के कामकाज पर नजर रखता है।

3. इनका उद्देश्य लाभ कमाने के साथ-साथ सामाजिक कल्याण भी है।

4. ये सामान्यत: ऋण के अनौपचारिक स्त्रोतों की अपेक्षा ब्याज की कम दर माँगते हैं।

5. ये कोई अनुचित शर्त नहीं लगाते हैं।

ऋण के अनौपचारिक स्त्रोत

1. इसके अन्तर्गत वे छोटी ओर छितराई हुई इकाइयाँ शामिल होती हैं जो सरकार के नियन्त्रण से प्राय: बाहर होती हैं। यद्यपि इनके लिए भी सरकारी नियम और विनियम होते हैं, परन्तु यहाँ उनका पालन नहीं किया जाता है। ये स्त्रोत हैं—साहूकार, व्यापारी, मालिक, सम्बन्धी और मित्र आदि।

2. अनौपचारिक क्षेत्र में ऐसा कोई संगठन नहीं है जो ऋणदाताओं की ऋण-क्रियाओं का निरीक्षण करता है।

3. इनका एकमात्र उद्देश्य लाभ कमाना है।

4. ये औपचारिक उधारदाताओं की तुलना में ऋणों पर ब्याज की अधिक ऊँची दर माँगते हैं।

5. ये ऊँची ब्याज दरों के अतिरिक्त कई कठोर शर्तें भी लगाते हैं।

3. भारतीय रिजर्व बैंक भारत का केन्द्रीय बैंक है। यह भारत के बैंकिंग सेक्टर के लिए नीति-निर्धारण का काम करता है। बैंक किसी भी अर्थव्यवस्था पर गहरा असर डालते हैं, इसलिए बैंकिंग सेक्टर के लिए सही नियम और कानून की जरूरत होती है। बैंकों की कार्य प्रणाली को नियन्त्रित करके रिजर्व बैंक न केवल बैंकिंग और फिनांस को सही दिशा में ले जाता है, बल्कि पूरी अर्थव्यवस्था को भी सुचारू ढंग से चलने में मदद करता है।

4. स्वयं सहायता समूहों का गठन वैसे गरीबों के लिए किया जाता है, जिनकी पहुँच ऋण के औपचारिक स्त्रोतों तक नहीं है। कई ऐसे कारण हैं जिनसे ऐसे लोगों को बैंक या सहकारी

समिति से ऋण नहीं मिल पाता है।ये लोग इतने गरीब होते हैं कि अपनी साख को सिद्ध नहीं कर पाते। उनके द्वारा लिए ऋण की राशि इतनी कम होती है कि ऋण देने में आने वाले खर्चों की वसूली भी नहीं हो पाती है। अशिक्षा और जागरूकता के अभाव से उनकी समस्या और भी बढ़ जाती है। स्वयं सहायता समूह ऐसे लोगों को छोटा ऋण देते हैं, ताकि उनकी आजीविका चलती रहे। इसके अलावा स्वयं सहायता समूह ऐसे लोगों में ऋण-अदायगी की आदत भी डालते हैं।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

  अति प्राचीनकाल .... होती है।

(क) पशुपालन युग में गाय, बैल तथा बकरी आदि पशुओं का मुद्रा के रूप में प्रयोग किया जाता था।

(ख) कृषि-पदार्थों का मुद्रा के रूप में प्रयोग किया गया जिसे वस्तु मुद्रा की संज्ञा दी गई।

(ग) वस्तु मुद्रा में अनेक दोष थे। वस्तुओं को अधिक समय तक संचित नहीं किया जा सकता; उनमें वहनीयता का अभाव होता है तथा उनके विभाजन में भी कठिनाई उत्पन्न होती है।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्त्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

  लोग मुद्रा .... होती है।

(क) लोग मुद्रा बैंकों में निक्षेप के रूप में भी रखते हैं।

(ख) किसी समय पर लोगों को दिन-प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिए कुछ ही करेंसी की आवश्यकता होती है। शेष बची नकदी को वे बैंकों में अपने नाम से खाता खोलकर जमा कर देते हैं।

(ग) लोगों का धन बैंकों के पास सुरक्षित रहता है और इस पर ब्याज भी प्राप्त होता है। लोगों को अपनी आवश्यकताओं के अनुसार इसमें से धन निकालने की सुविधा भी उपलब्ध होती है।

4 वैश्वीकरण और भारतीय अर्थव्यवस्था

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (क) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ग)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

- **दिया गया चित्र किसी कॉल सेन्टर को दर्शाता है। इसे देखकर बताइए कि यह परम्परागत ऑफिस से किस प्रकार से भिन्न है?**

उत्तर– परंपरागत ऑपुिस के विपरीत यह कंप्यूटर व अन्य तकनीको से लैंस है। यहाँ प्रत्येक कर्मचारी के बैठने की व्यवस्था अलग है। यह पूर्णत: वातानुकूलित है।

कूट आधारित प्रश्न

- **फोर्ड ने 1700 करोड़ लागत से अपना सन्यन्त्र स्थापित किया–**

उत्तर– (घ) केवल (iv)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **विश्व व्यापार संगठन का मुख्यालय ____________ में स्थित है–**

उत्तर– (घ) जनेवा में

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (ग) (ii) (iii) (iv) (i)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **वैश्वीकरण से जुड़ा कौन-सा कथन सही नहीं है?**

उत्तर– (ग) केवल (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर– (क) असत्य (ख) सत्य (ग) सत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. आजादी के पश्चात् भारत सरकार ने विदेश व्यापार एवं विदेशी निवेश पर प्रतिबन्ध लगा रखा था। देश के उत्पादकों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से संरक्षण प्रदान करने के लिए यह अनिवार्य माना गया। 1950 और 1960 के दशकों में उद्योगों का उदय हो रहा था और इस अवस्था में आयात से प्रतिस्पर्धा इन उद्योगों को बढ़ने नहीं देती। भारत ने सिर्फ अनिवार्य चीजों; जैसे मशीनरी, उर्वरक और पेट्रोलियम के आयात की ही अनुमति दी थी।
2. हाल के वर्षों में भारत की केन्द्र एवं राज्य सरकारें भारत में निवेश हेतु विदेशी कम्पनियों को आकर्षित करने के लिए विशेष कदम उठा रही हैं। औद्योगिक क्षेत्रों, जिन्हें विशेष आर्थिक क्षेत्र

[Special Economic Zone (S.E.Z.)] कहा जाता है, की स्थापना की जा रही है। विशेष आर्थिक क्षेत्रों में विश्वस्तरीय सुविधाएँ—बिजली, पानी, सड़क, परिवहन, भण्डारण, मनोरंजन और शैक्षिक सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं। विशेष आर्थिक क्षेत्र में उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करने वाली कम्पनियों को आरम्भिक पाँच वर्षों तक कोई कर नहीं देना पड़ता है।

3. आमतौर पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ ऐसे स्थान पर उत्पादन इकाई स्थापित करती हैं, जो बाजार के निकट हो, जहाँ कम लागत पर कुशल और अकुशल श्रम आसानी से उपलब्ध हों और जहाँ उत्पादन के अन्य कारकों की उपलब्धता सुनिश्चित हो। साथ ही, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ सरकारी नीतियों पर भी नजर बनाए रखती हैं, जो उनके हितों की देखभाल करती हैं।

इन परिस्थितियों को सुनिश्चित करने के पश्चात् ही बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ उत्पादन के लिए कार्यालयों और कारखानों की स्थापना करती हैं।

परिसम्पत्तियों; जैसे— भूमि, भवन, मशीन और अन्य उपकरणों की खरीद में व्यय की गई मुद्रा **निवेश** (ग्हनेूसहू) कहलाती है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा किया गया निवेश विदेशी निवेश कहलाता है। कोई भी निवेश इस आशा से किया जाता है कि ये परिसम्पत्तियाँ लाभ प्राप्त करेंगी। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ इन देशों की स्थानीय कम्पनियों के साथ संयुक्त रूप से उत्पादन करती हैं। संयुक्त उत्पादन से स्थानीय कम्पनी को दोहरा लाभ होता है। पहला, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अतिरिक्त निवेश के लिए धन प्रदान करती हैं, जैसे कि तीव्र उत्पादन के लिए मशीनें खरीदने के लिए। दूसरा, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ उत्पादन की नवीनतम प्रौद्योगिकी अपने साथ ला सकती हैं।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. वैश्वीकरण की प्रक्रिया को सार्थक बनाने में **बहुराष्ट्रीय कम्पनियों** की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। **वैश्वीकरण के आलोक से ही बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का परिदृश्य उभरा है। ये कम्पनियाँ अपने पैर उन क्षेत्रों में जमाती हैं जहाँ उन्हें सस्ता माल और श्रम दोनों उपलब्ध हों। उनका लक्ष्य उत्पादन-लागत घटाकर अधिक-से-अधिक लाभ कमाना होता है। ये कम्पनियाँ उत्पादन कहीं तथा माल कहीं और सेवाओं का विपणन अन्यत्र करती हैं। जो बहुराष्ट्रीय कम्पनी (निगम) अमेरिका में स्थित अनुसन्धान केन्द्र में उत्पादों का डिजाइन तैयार करती है, उसके पुर्जे चीन में बनते हैं जिन्हें मैक्सिकों और यूरोप में ले जाकर जोड़ा जाता है जबकि उसके उत्पादों को कॉल सेन्टरों के द्वारा विश्वभर में बेचा जाता है।** भारत के बंगलुरू नगर में स्थित ऐसा ही कॉल सेन्टर जो उच्च कोटि की दूरसंचार सुविधाओं और इन्टरनेट से सुसज्जित है, विदेशी ग्राहकों को अपनी सेवाएँ प्रदान करता है। जिस उत्पाद के ब्रॉण्ड लेबल पर 'मेड इन थाइलैण्ड' लिखा है, उसमें एक भी उत्पाद का पूरा उत्पादन थाईलैण्ड में नहीं हुआ।

2. संयुक्त उत्पादन से स्थानीय कंपनियों को कई लाभ हुए। विश्व मुद्दों ने जब विश्व की आर्थिक प्रणाली को क्षतिग्रस्त बना दिया, तब आर्थिक विकास के महामन्त्र के रूप में बनकर

उभरा—वैश्वीकरण। भारत में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की स्थापना हुई, उन्होंने स्थानीय कम्पनियों के पोषण और विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया। भारतीय अर्थव्यवस्था ने वैश्वीकरण की एक लम्बी दूरी तय करके स्वयं को विश्वस्तरीय अर्थव्यवस्था में ढालने का प्रयास किया है। भारत ने औद्योगिक क्षेत्रों तथा विशेष औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना करके विदेशी कंपनियों को आकर्षित किया है। इसीलिए विशेष आर्थिक क्षेत्रों में विश्व स्तरीय सड़कें, बिजली, पेयजल, भण्डारण तथा संचार की सुविधाएँ जुटाई गई हैं।

3. सरकारें अधिक विदेशी निवेश आकर्षित करने का प्रयत्न इसलिए करती हैं ताकि बीपीओ का विस्तार हो, रोजगार के अवसर बढ़ें, उत्पादों की विभिन्न किस्में व गुणवत्ता उपलब्ध हो व सरकारों को आर्थिक लाभ भी हो।

4. विश्व व्यापार संगठन एक सुव्यवस्थित और स्थायी विश्व व्यापार की संस्था है। विश्व व्यापार संगठन की स्थापना 1995 ई० में ''प्रशुल्क एवं व्यापार सम्बन्धी करार' (GATT) संगठन की तरह की गई। विश्व व्यापार संगठन की स्थापना एक सन्धि के अन्तर्गत हुई जिसकी पुष्टि सदस्य देशों की सरकारों और विधान मण्डलों ने की।

विश्व व्यापार संगठन से अपेक्षित कार्य निम्नलिखित हैं—

(i) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में प्रतियोगिता को बढ़ाना।

(ii) झगड़ा निपटाने वाली संस्था के रूप में कार्य करना।

(iii) विश्व के सभी सदस्य देशों को मुक्त व्यापार के लिए प्रोत्साहित करना।

5. **प्रतिस्पर्द्धा से भारत के लोगों को कई लाभ हुए हैं**—

(i) वस्तुएँ आसानी से उपलब्ध हो रही हैं।

(ii) वस्तुएँ कम दाम पर उपलब्ध हो रही हैं।

(iii) वस्तुओं की विभिन्न किस्में उपलब्ध हो रही हैं।

(iv) एक ही प्रकार की वस्तु विभिन्न रूपों में भिन्न-भिन्न दामों पर उपलब्ध है, इसलिए सब तरह के लोगों की इच्छा पूरी हो रही है।

(v) चीजों के लिए मारामारी की स्थिति अब नहीं होती।

(vi) परस्पर नवीनतम प्रौद्योगिकी का आदान-प्रदान होगा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. विकसित देशों की कम्पनियाँ अक्सर दूसरे देशों में बिजनेस के लिए अनुकूल वातावरण बनाने के लिए अपनी सरकार पर दबाव डालती हैं। इसलिए विकसित देश, विकासशील देशों से उनके व्यापार और निवेश का उदारीकरण चाहते हैं।

हाल के वर्षों में भारत की केन्द्र एवं राज्य सरकारें भारत में निवेश हेतु विदेशी कम्पनियों को आकर्षित करने के लिए विशेष कदम उठा रही हैं। औद्योगिक क्षेत्रों, जिन्हें विशेष आर्थिक क्षेत्र [Special Economic Zone (S.E.Z.)] कहा जाता है, की स्थापना की जा रही है। विशेष आर्थिक क्षेत्रों में विश्व स्तरीय सुविधाएँ—बिजली, पानी, सड़क, परिवहन, भण्डारण, मनोरंजन और शैक्षिक सुविधाएँ—उपलब्ध होती हैं। विशेष आर्थिक क्षेत्र में उत्पादन इकाइयाँ स्थापित करने वाली कम्पनियों को आरम्भिक पाँच वर्षों तक कोई कर नहीं देना पड़ता है।

विदेशी निवेश आकर्षित करने हेतु सरकार ने श्रम–कानूनों में लचीलापन लाने की अनुमति दे दी है। संगठित क्षेत्र की कम्पनियों को कुछ नियमों का अनुपालन करना पड़ता है, जिसका उद्देश्य श्रमिक अधिकारों का संरक्षण करना है। हाल के वर्षों में, सरकार ने कम्पनियों को अनेक नियमों से छूट लेने की अनुमति दे दी है। अब नियमित आधार पर श्रमिकों को रोजगार देने के बजाय कम्पनियाँ, जब काम का अधिक दबाव होता है, लोचदार ढंग से छोटी अवधि के लिए श्रमिकों को कार्य पर रखती हैं। कम्पनी की श्रम–लागत में कटौती करने के लिए ऐसा किया जाता है। फिर भी, विदेशी कम्पनियाँ अभी भी सन्तुष्ट नहीं हैं और श्रम–कानूनों में और अधिक लचीलेपन की माँग कर रही हैं।

2. **विश्व–भर के उत्पादन को एक–दूसरे से जोड़ना**—आमतौर पर बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ ऐसे स्थान पर उत्पादन–इकाई स्थापित करती हैं, जो बाजार के निकट हो, जहाँ कम लागत पर कुशल और अकुशल श्रम आसानी से उपलब्ध हों और जहाँ उत्पादन के अन्य कारकों की उपलब्धता सुनिश्चित हो। साथ ही, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ सरकारी नीतियों पर भी नजर बनाए रखती हैं, जो उनके हितों की देखभाल करती हैं।

   इन परिस्थितियों को सुनिश्चित करने के पश्चात् ही बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ उत्पादन के लिए कार्यालयों और कारखानों की स्थापना करती हैं।

   परिसम्पत्तियों; जैसे—भूमि, भवन, मशीन और अन्य उपकरणों की खरीद में व्यय की गई मुद्रा **निवेश** (investment) कहलाती है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा किया गया निवेश विदेशी निवेश कहलाता है। कोई भी निवेश इस आशा से किया जाता है कि ये परिसम्पत्तियाँ लाभ प्राप्त करेंगी। कभी–कभी ऐसा भी होता है कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ अतिरिक्त निवेश के लिए धन प्रदान करती हैं। जैसे कि तीव्र उत्पादन के लिए मशीनें खरीदने के लिए। इसके अतिरिक्त बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ उत्पादन की नवीनतम प्रौद्योगिकी अपने साथ ला सकती हैं।

   बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के निवेश का सबसे आम रास्ता स्थानीय कम्पनियों को खरीदना और उसके पश्चात् उत्पादन का प्रसार करना है। अपार सम्पदा वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ यह आसानी से कर सकती हैं।

   यदि देखा जाए, तो कई बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की सम्पत्ति विकासशील देशों की सरकारों के सम्पूर्ण बजट से भी ज्यादा है। ऐसी अपार सम्पत्ति वाली बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की शक्ति असीमित है।

   बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ एक अन्य तरीके से उत्पादन पर नियन्त्रण करती हैं। वे छोटे उत्पादकों को उत्पादन का ऑर्डर देती हैं। वस्त्र, जूते–चप्पल एवं खेल के सामान ऐसे उद्योग हैं, जहाँ विश्वभर में बड़ी संख्या में छोटे उत्पादकों द्वारा उत्पादन किया जाता है।

   बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को इन उत्पादकों की आपूर्ति की जाती है। फिर इन्हें अपने ब्राण्ड नाम से ग्रहकों को बेचती हैं। इन बड़ी कम्पनियों में दूरस्थ उत्पादकों के मूल्य, गुणवत्ता, आपूर्ति और श्रम–शर्तों का निर्धारण करने की प्रचण्ड क्षमता होती है।

   बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ कई प्रकार से अपने उत्पादन–कार्य का प्रसार करती हैं। वे विश्व के कई

देशों की स्थानीय कम्पनियों के साथ पारस्परिक सम्बन्ध स्थापित कर रही हैं। स्थानीय कम्पनियों के साथ साझेदारी द्वारा, आपूर्ति के लिए स्थानीय कम्पनियों का प्रयोग करके और स्थानीय कम्पनियों से निकट प्रतिस्पर्धा करके अथवा उन्हें खरीदकर बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ दूरस्थ स्थानों के उत्पादन पर अपना प्रभाव जमा रही हैं। परिणामत: दूर-दूर स्थानों तक फैला उत्पादन परस्पर सम्बन्धित हो रहा है।

3. जो कम्पनी एक से अधिक देशों में उत्पादन पर नियन्त्रण और स्वामित्व रखती है, उसे **बहुराष्ट्रीय कम्पनी** कहते हैं।

वैश्वीकरण का अर्थ एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें किसी देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अन्य अर्थव्यवस्थाओं से विदेशी व्यापार एवं विदेशी निवेश द्वारा जोड़ा जाता है। वैश्वीकरण के कारण आज विश्व में विभिन्न देशों के बीच वस्तुओं, सेवाओं, तकनीक तथा श्रम का आदान-प्रदान हो रहा है। इस कार्य में बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जब ये अपनी इकाइयाँ संसार के विभिन्न देशों में स्थापित करती हैं।

यहाँ हम देख रहे हैं कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ वैश्विक स्तर पर अपना उत्पाद बेचने के साथ-साथ वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन भी विश्व स्तर पर कर रही हैं। उत्पादन-प्रक्रिया छोटे-छोटे भागों में विभक्त है और विश्वभर में फैली हुई है। परिणामस्वरूप उत्पादन-प्रक्रिया कमश: जटिल ढंग से संगठित हुई है। एशियाई देश चीन एक सस्ता विनिर्माण केन्द्र होने का फायदा देता है। अमेरिका और यूरोप के बाजारों से अपनी निकटता के कारण मैक्सिको और पूर्वी यूरोप लाभप्रद हैं। भारत में कुशल इन्जीनियर उपलब्ध हैं, जो उत्पादन के तकनीकी पक्ष को समझ सकते हैं। भारत में अंग्रेजी बोलने वाले शिक्षित युवा भी हैं, जो ग्राहक-देखभाल-सेवाएँ उपलब्ध करा सकते हैं। इन सबका समन्वित उपयोग करने से बहुराष्ट्रीय कम्पनी को वस्तुओं के निर्माण की लागत में बचत होती है। यह बचत 50-60 प्रतिशत तक हो सकती है। वस्तुत: देश की सीमाओं के बाहर बहुराष्ट्रीय उत्पादन-प्रक्रिया के प्रसार से असीमित लाभ की सम्भावनाएँ बनी रहती हैं।

उदाहरण के तौर पर, औद्योगिक उपकरण का निर्माण करने वाली एक बड़ी बहुराष्ट्रीय कम्पनी संयुक्त राज्य अमेरिका के एक अनुसन्धान केन्द्र में अपने उत्पादों का डिजाइन तैयार करती है। उत्पादन से सम्बन्धित विभिन्न पुर्जे चीन में बनते हैं। इसके पश्चात् इन पुर्जों को जहाज अथवा वायुयानों में लादकर मैक्सिको तथा पूर्वी यूरोप के देशों (पुर्तगाल व स्पेन) में ले जाया जाता है, जहाँ उपकरण बनाने हेतु इन विभिन्न पुर्जों को जोड़ा जाता है और तैयार उत्पाद को पूरे विश्व में बेचा जाता है। कम्पनी के ग्राहकों को कोई असुविधा न हो, इस हेतु उसके ग्राहक-सेवा-केन्द्रों का भारत में स्थित कॉल सेन्टरों के माध्यम से संचालन किया जाता है।

4. **वैश्वीकरण**—वैश्वीकरण का अर्थ एक ऐसी व्यवस्था से है जिसमें किसी देश की अर्थव्यवस्था को विश्व की अन्य अर्थव्यवस्थाओं से विदेशी व्यापार एवं विदेशी निवेश द्वारा जोड़ा जाता है। वैश्वीकरण के कारण आज विश्व में विभिन्न देशों के बीच वस्तुओं, सेवाओं,

तकनीक तथा श्रम का आदान–प्रदान हो रहा है। इस कार्य में बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जब ये अपनी इकाइयाँ संसार के विभिन्न देशों में स्थापित करती हैं।

वैश्वीकरण को सम्भव बनाने वाले कारक—प्रौद्योगिकी में तीव्र उन्नति वह मुख्य कारक है जिसने वैश्वीकरण की प्रक्रिया को उत्प्रेरित किया। जैसे, विगत पचास वर्षों में परिवहन प्रौद्योगिकी में बहुत उन्नति हुई है। इसने लम्बी दूरियों तक वस्तुओं की तीव्रतर आपूर्ति को कम लागत पर सम्भव किया है। इसी के प्रभाव से वैश्वीकरण की नींव जमी है।

गत कुछ दशकों में, सूचना के क्षेत्र में जो अद्‌भुत क्रान्ति हुई है **उसे सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की देन कहा जाता है।** वर्तमान काल में वैज्ञानिकों ने दूरसंचार, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, संचार उपग्रह देकर विश्वस्तरीय सम्पर्क बनाने में चमत्कारिक सहयोग दिया है। **आज कम्प्यूटर और इन्टरनेट ने हमें एक चमत्कारिक विश्व में लाकर छोड़ दिया है।** जो चाहो जान लो। जिसे चाहो सूचनाएँ बाँट दो। इन्टरनेट से हम तत्काल ई–मेल, (इलेक्ट्रोनिक डाक) प्रेषित करने में सक्षम हैं। यही नहीं नाममात्र खर्च करके विश्वभर में बात भी (वॉयसमेल) कर सकते हैं। हाँ, विद्युत–आपूर्ति बनी रहनी चाहिए जो वर्तमान समय में कभी भी धोखा दे जाती है।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (संक्षेप में आई०टी०) ने विभिन्न देशों के बीच सेवाओं के उत्पादन के प्रसार में मुख्य भूमिका निभाई है।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

पूर्व (बीसवीं) .... साधन था।

(क) इन देशों की सीमाओं को लांघने वाली वस्तुओं में मात्र कच्चा माल, खाद्य पदार्थ और तैयार उत्पाद ही थे।

(ख) भारत जैसे उपनिवेशों से कच्चा माल तथा खाद्य पदार्थ निर्यात होते थे तथा तैयार वस्तुओं का आयात होता था।

(ग) एकमात्र व्यापार ही दूरस्थ व अन्य देशों को आपस में जोड़ने का प्रमुख साधन था।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

संसार के .... रहा है।

(क) संसार के विभिन्न देशों के बीच परस्पर सम्बन्ध और तीव्र एकीकरण की प्रक्रिया ही वैश्वीकरण कहलाती है।

(ख) वैश्वीकरण की प्रक्रिया में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है।

(ग) विभिन्न देशों के बीच ज्यादा से ज्यादा वस्तुओं और सेवाओं, निवेश और प्रौद्योगिकी का आदान–प्रदान हो रहा है।

5 उपभोक्ता अधिकार

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (क) **6.** (ख)।

अभिकथन-करण आधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए कथन (A) और कारण (R) के लिए निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए।**

उत्तर– (क) यदि 'A' और 'R' दोनों सत्य हैं लेकिन 'R', 'A' का सही स्पष्टीकरण है।

चित्र आधारित प्रश्न

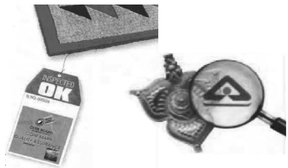

- **चित्र देखकर बताइए कि सरकार द्वारा विभिन्न उपयोगी वस्तुओं पर शब्द चिह्न (लोगों) लगाना क्यों आवश्यक कर दिया गया है?**

उत्तर– आई० एस० आई० , एगमार्क

विभिन्न वस्तुएँ खरीदते समय आपने आवरण पर लिखे अक्षरों—आई० एस० आई०, एगमार्क या हॉलमार्क के शब्द-चिह्न (लोगों) को जरूर देखा होगा। जब उपभोक्ता कोई वस्तु या सेवाएँ खरीदता है, तो ये शब्द-चिह्न (लोगो) और प्रमाणक चिह्न उन्हें अच्छी गुणवत्ता सुनिश्चित कराने में सहायता करते हैं। ऐसे संगठन जो कि अनुवीक्षण तथा प्रमाण-पत्रों को जारी करते हैं, उत्पादकों को उनके द्वारा श्रेष्ठ गुणवत्ता पालन करने की स्थिति में शब्द चिह्न (लोगों को) प्रयोग करने की अनुमति देते हैं। यद्यपि ये संगठन बहुत से उत्पादों के लिए गुणवत्ता का मानदण्ड विकसित करते हैं, लेकिन सभी उत्पादकों का इन मानदण्डों का पालन करना आवश्यक नहीं होता। फिर भी, कुछ उत्पाद जो उपभोक्ता की सुरक्षा और स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं या जिनका उपयोग बड़े पैमाने पर होता है, जैसे कि, एल०पी० जी० सिलिण्डर, खाद्य रंग एवं उसमें प्रयुक्त सामग्री, सीमेण्ट, बोतलबन्द पेयजल आदि। इनके उत्पादन के लिए यह अनिवार्य होता है कि उत्पादक इन संगठनों से प्रमाण-पत्र प्राप्त करें।

कूट आधारित प्रश्न

- **कृषि उत्पादों के मानकीकरण के लिए किस मानक का प्रयोग किया जाता है?**

उत्तर– (ख) केवल (ii)

रिक्त स्थान आधारित प्रश्न

- **संयुक्त राष्ट्र ने उपभोक्ता संरक्षण के लिए दिशा-निर्देशों को __________ अपनाया–**

उत्तर– (ग) 1985 में

सुमेलन आधारित प्रश्न

- **सूची-I तथा सूची-II को सुमेलित कीजिए तथा कूट की सहायता से सही उत्तर की पहचान कीजिए–**

उत्तर– (क) (ii) (iii) (iv) (i)

सत्य-असत्य कथन आधारित प्रश्न

- **उपभोक्ता से जुड़ा कौन-सा कथन सही नहीं हैं?**

उत्तर– (ग) केवल (iii)

- **निम्नलिखित कथनों के सामने सत्य/असत्य लिखिए–**

उत्तर– (क) सत्य (ख) सत्य (ग) असत्य

उच्च विचारात्मक प्रश्न

उत्तर–

1. उपभोक्ता दलों द्वारा निम्न उपाय अपनाए जाने चाहिए—

(i) उपभोक्ता के अधिकारों एवं कर्त्तव्यों पर लेख लिखना।

(ii) उपभोक्ता जारूकता पर प्रदर्शनी का आयोजन करना।

(iii) राशन की दुकानों में अनुचित कार्यों की देख-रेख करना; जैसे—अधिक लाभ कमाने के लिए खाद्यान्नों को खुले बाजार में बेचा जाना।

(iv) सड़क यात्री परिवहन में अत्यधिक भीड़-भाड़ पर नजर रखना।

(v) उपभोक्ताओं के हितों के खिलाफ और अनुचित व्यवसाय शैली को सुधारने के लिए व्यावसायिक कम्पनियों और सरकार दोनों पर दबाव डालना।

2. उपभोक्ता संरक्षण परिषद् उपभोक्ताओं के संरक्षण हेतु बनाई नई एक परिषद् है,जबकि उपभोक्ता अदालत में उपभोक्ताओं की समस्याओं का समाधन किया जाता है।

3. **सूचना पाने का अधिकार 2005 (RTI)**—सूचना पाने के अधिकार के अन्तर्गत नागरिक सरकारी विभागों के कार्यकलापों की सूचनाएँ पाने का अधिकार पा जाता है। इसे निम्नलिखित उदाहरणों से सुगमता से समझा जा सकता है—

इन्तजार.....रिजल्ट का

अमृता नाम की एक इन्जीनियरिंग स्नातक ने नौकरी पाने के लिए अपने सभी प्रमाण-पत्रों को जमा करने तथा इण्टरव्यू देने के बाद भी एक सरकारी विभाग से कोई रिजल्ट नहीं प्राप्त किया। कर्मचारियों ने भी उसके प्रश्नों का उत्तर देने से इनकार कर दिया। तब उसने आर० टी० आई० एक्ट का प्रयोग करते हुए एक प्रार्थना-पत्र दिया और यह कहा कि एक उचित समय तक परिणाम की जानकारी पाना उसका अधिकार था, जिससे कि वह अपने भविष्य की योजना बना सके। उसको न केवल रिजल्ट की घोषणा में देरी के कारणों के बारे में सूचित किया गया बल्कि उसको नियुक्ति के लिए बुलावे का पत्र मिल गया क्योंकि उसने इण्टरव्यू अच्छा दिया था।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. उपभोक्ता जागरूकता इसलिए जरूरी है ताकि उपभोक्ता को गुणवत्तापूर्ण उत्पाद मिल सकें एवं गुणवत्ताहीन उत्पादों को प्रोत्साहन न मिले।

2. उपभोक्ता आन्दोलन से तात्पर्य ऐसे आन्दोलन से है जो उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने और प्रोत्साहित करने की आवश्यकता पर बल देता है।

3. **उपभोक्ता सुरक्षा कानून 1986**—यह कानून इसलिए बनाया गया ताकि उपभोक्ता के दु:खों को अधिक सरलता तथा तेजी से सुना जा सके। इसे COPRA भी कहा जाता है।

4. उपभोक्ता दलों द्वारा निम्न उपाय अपनाए जाने चाहिए—

(i) उपभोक्ता के अधिकारों एवं कर्त्तव्यों पर लेख लिखना।

(ii) उपभोक्ता जारूकता पर प्रदर्शनी का आयोजन करना।

(iii) राशन की दुकानों में अनुचित कार्यों की देख-रेख करना; जैसे—अधिक लाभ कमाने के लिए खाद्यान्नों को खुले बाजार में बेचा जाना।

(iv) सड़क यात्री परिवहन में अत्यधिक भीड़-भाड़ पर नजर रखना।

(v) उपभोक्ताओं के हितों के खिलाफ और अनुचित व्यवसाय शैली को सुधारने के लिए व्यावसायिक कम्पनियों और सरकार दोनों पर दबाव डालना।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. बड़ी कम्पनियाँ धन-बल दोनों से लैस होती हैं। राजनीति में भी उनका पूरा दखल होता है। वे कई प्रकार से बाजार को प्रभावित करती हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—

(i) मीडिया के द्वारा आकर्षक विज्ञापन देकर।

(ii) मशहूर हस्तियों को अपना ब्राण्ड अम्बेस्डर बनाकर।

(iii) खास-खास जगहों पर अपने होर्डिंग्स लगाकर।

(iv) प्रभावशाली लोगों को अपने कार्यक्रमों में शामिल करके।

(v) मीडिया के द्वारा भ्रामक विज्ञापन देकर।

(vi) अपने डीलरों को अपेक्षाकृत अधिक आकर्षक सुविधाएँ देकर।

2. **उपभोक्ता सुरक्षा अधिनियम 1986**

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम (कानून) 1986 उपभोक्ताओं के अधिकारों के संरक्षण के लिए नींव का पत्थर सिद्ध हुआ है। इसके अन्तर्गत उपभोक्ताओं को निम्नलिखित अधिकार प्राप्त हुए हैं—

(क) उपभोक्ता को वस्तुओं ओर सेवाओं के क्रय-विक्रय संरक्षण और सुरक्षा पाने का अधिकार मिल गया है। क्रय-विक्रय की प्रक्रिया में चोट लगने या हानि पहुँचने पर उसे सुरक्षा पाने का अधिकार है।

(ख) सरकार ने 2005 में सूचना पाने का अधिकार देकर उपभोक्ता को वस्तु की गुणवत्ता मात्र, भार-शुद्धता मानक एवं मूल्यों के बारे में जानने का अधिकार मिल गया है।

(ग) उपभोक्ता के समक्ष बाजार में वस्तुओं ओर सेवाओं के अनेक विकल्प होते हैं; अत: इस अधिनियम ने उसे उनमें से उचित को चुनने का अधिकार दे दिया है।

(घ) इस अधिनियम के अनुसार उपभोक्ता के हितों काहनन होने पर, क्षतिपूर्ति पाने का अधिकार मिल गया है।

(ङ) इस अधिनिमय में उपभोक्ता को वस्तुओं औरसेवाओं एवं उनके उपयोग की विधि तथा अधिकारों के लिए लडने की शिक्षा पाने का अधिकार भी मिल गया है।

उपभोक्ता अधिकार संरक्षण अधिनियम में 2019 में संशोधन करके उपभोक्ता के अधिकारों को अधिक प्रभावी तथा तर्क-संगत बनाया गया है जिससे उनका अधिक-से-अधिक हित हो सके।

3. भारत में उपभोक्ता आन्दोलन के प्रयास के फलस्वरूप विभिन्न संगठनों, जैसे—उपभोक्ता अदालत या उपभोक्ता संरक्षण परिषद् की स्थापना की गई। इनका मुख्य उद्देश्य उपभोक्ताओं का मार्गदर्शन करना है कि वे किस प्रकार उपभोक्ता अदालत में अपना मुकदमा दर्ज कराएँ। विभिन्न अवसरों पर ये संगठन उपभोक्ता अदालत में विशेष व्यक्ति (उपभोक्ता) का प्रतिनिधित्व भी करते हैं। जनता में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए इन स्वयंसेवी संगठनों को सरकार से वित्तीय सहायता मिलती है।

उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986 में विशेष व्यवस्था की गई है, जो त्रि-स्तरीय न्यायिक व्यवस्था के रूप में कार्य करती है। मामले की प्रकृति के अनुरूप पीड़ित उपभोक्ता यहाँ अपनी समस्या/शिकायत रखकर उसका समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

(i) जिला-स्तरीय न्यायालय अथवा जिला मंच (या जिला केन्द्र)—जिला मंच/जिला केन्द्र स्थानीय सीमा के अन्तर्गत आने वाले 20 लाख रु० तक के क्षतिपूर्ति के दावों के सम्बन्ध में दर्ज शिकायतों का निपटारा करता है।

(ii) राज्य-स्तरीय न्यायालय अथवा राज्य आयोग—राज्य आयोग का कार्यक्षेत्र निम्न प्रकार होगा—

1. 20 लाख रु० से 1 करोड़ रु० तक की क्षतिपूर्ति के दावों को राज्य आयोग देखता है।

2. यदि कोई मुकदमा जिला स्तरीय न्यायालय में खारिज कर दिया जाता है, तो उपभोक्ता राज्य स्तरीय न्यायालय में अपील कर सकता है।

(iii) राष्ट्रीय-स्तरीय न्यायालय अथवा राष्ट्रीय आयोग—राष्ट्रीय आयोग का कार्यक्षेत्र निम्न प्रकार होगा—

1. 1 करोड़ रु० से ऊपर की क्षतिपूर्ति के दावों का निपटारा राष्ट्रीय स्तर के न्यायालय करते हैं।

2. यदि कोई मुकदमा राज्य-स्तरीय न्यायालय में खारिज कर दिया जाता है, तो उपभोक्ता राष्ट्रीय-स्तर के न्यायालय में अपील कर सकता है।

इस प्रकार, उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम ने उपभोक्ता के रूप में उपभोक्ता न्यायालय में प्रतिनिधित्व का अधिकार देकर हमें समर्थ बना दिया है।

मूल्याधारित प्रश्न

- **नीचे दिए गए लघु गद्यांश से सम्बद्ध मूल्याधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–**

  अधिकांशः .... होती हैं।

  (क) अधिकांश: बाजार में हमारी भागीदारी उत्पादक और उपभोक्ता दोनों ही रूपों में होती है।

  (ख) वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादक के रूप में हम कृषि, उद्योग या सेवा जैसे क्षेत्रों में कार्यरत हो सकते हैं।

  (ग) उपभोक्ताओं की भागीदारी बाजार में उस समय होती है, जब वे अपनी आवश्यकता के अनुसार वस्तुओं या सेवाओं का क्रय करते हैं।

केस/स्रोत आधारित प्रश्न

- **निम्नलिखित अनुच्छेद केस/स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए—**

  किसी वस्तु .... अधिकार है।

  (क) किसी वस्तु या सेवा को खरीदते समय उसके पैकेट पर वस्तु के अवयव, बैच संख्या, मूल्य, निर्माण तिथि और खराब होने की अन्तिम तिथि आदि सूचनाएँ छपी हुई देखी जा सकती हैं।

  (ख) दवा की शीशी या पैकेट पर उसके उचित प्रयोग की विधि सम्बन्धी निर्देश लिखे होते हैं।

  (ग) ये जानकारियाँ इसलिए देनी पड़ती हैं कि उपभोक्ता जिन वस्तुओं और सेवाओं का क्रय करता है उनके विषय में उसे **सूचना पाने का अधिकार है।**

Note

Note

Note